ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

इतिहास, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका

A Peer-Reviewed and Listed in UGC Care List

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान; कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

वर्ष :12 • अंक 02 No. 01

February 2022

A Peer-Reviewed and Listed in UGC CARE List

ISSN 2278-4632

संपादक

डॉ. बी. एल. भादानी

प्रोफेसर

प्रबंध संपादक

श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

INDEX

S.No.	TITLE	Page No.
1	PNN BASED FRUIT RECOGNITION USING COLOR AND TEXTURE FEATURES	1
2	ROLE OF TECHNOLOGICAL ADVANCEMENT IN BANKING SECTOR IN PRESENT SCENARIO	16
3	USING MACHINE LEARNING TECHNIQUES, FRAUD IN WATER CONSUMPTION CAN BE DETECTED	22
4	SHIFT TO THE CLOUDS SOONER THAN LATER	30
5	EDUCATING CHILDREN WITH LEARNING DISABILITIES: ISSUES WITH FREQUENT MOVES AND TRANSFERS	41
6	SEXUAL HARASSMENT AT WORKPLACE	47
7	पर्यटन के माध्यम से क्षेत्रीय विकास (छत्तीसगढ़ के दुर्ग व रायपुर जिले के विशेष संदर्भ में)	56
8	PROBLEMS FACING LANDLESS WOMEN FARMERS IN VELLORE DISTRICT, TAMIL NADU: SITUATION ANALYSIS	65
9	CONSTRAINTS OF AGRICULTURAL SECTOR IN ASSAM	72
10	NATIONAL EDUCATION POLICY (NEP 2020) – RADICAL REFORM IN INDIAN HIGHER EDUCATION SYSTEM	79
11	जयपुर रियासत के अभिलेखों में उल्लिखित धर्म एवं दान–पुण्य की परम्परा	83
12	छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल की व्यावसायिक परियोजना का हितग्राहियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान (छत्तीसगढ़ के राजनांदगॉव नगर निगम क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)	88
13	सांप्रदायिक समस्याओं की प्रतीकवत् प्रस्तुति (कितने पाकिस्तान)	95
14	भारत में कृषि संबंधि समस्या एवं समाधान	99
15	लक्षित वर्गों के आर्थिक विकास में छत्तीसगढ़ राज्य अंत्यावसायी वित्त एवं विकास निगम की विभिन्न योजनाओं का मूल्यांकत्मक अध्ययन (राजनांदगांव जिले के विशेष संदर्भ में)	103
16	चुकनासोपदेष एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य	108
17	IMPACT OF ANXIETY ON ACADEMICPERFORMANCE OF MEDICOS	111
18	A STUDY JOB STRESS AND JOB SATISFACTION OF NURSING PROFESSIONALS	116
19	*A STUDY ON KARNATAKA'S ANCIENT AND MEDIEVAL TAXATION*	122
20	REAL WORLD APPLICATIONS OF LINEAR ALGEBRA	131
21	बल्हार अछूतों से भी अछूत : एक दस्तावेज़	141
22	राजस्थान में प्राचीनतम जल संरक्षण विधियां एवं सरकारी प्रयास : सामान्य विश्लेषण	147
23	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नरम दल व गरम दल के संदर्भ में	152

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ISSN: 2278-4632
Vol-12 Issue-02 No.01 February 2022

सांप्रदायिक समस्याओं की प्रतीकवत् प्रस्तुति

(कितने पाकिस्तान)

डॉ. संजय कुमार सिंह परीक्षा नियंत्रक दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास

सार संक्षेप

भारतीय इतिहास में हिन्दू–मुसलमान संघर्ष, देश का विभाजन तथा पाकिस्तान का उदय, सांप्रदायिकता के दुष्परिणाम आदि को लेखक ने 'कितने पाकिस्तान' में प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस उपन्यास के जरिए देश के भविष्य को देखने का प्रयास किया है। इस उपन्यास के संदर्भ में इसके चौथे संस्करण में प्रकाशकों ने लिखा कि "कमलेश्वर का यह उपन्यास मानवता के दरवाजे पर इतिहास और समय की एक दस्तक है...इस उम्मीद के साथ कि भारत ही नहीं, दुनिया भर में एक के बाद दूसरे पाकिस्तान बनाने की लहू से लथपथ यह परंपरा अब खत्म हो....।" इसके अंतिम 42 वें परिच्छेद में भिखमंगा कबीर आता है। वह एक ऐसी यात्रा पर चलने के लिए पहुंचता है, जहां आतंक, घृणा, भय आदि नकारात्मक इतिहास के स्थान पर शांति, आशा, प्रेम तथा उज्ज्वल भविष्य का सकारात्मक बीज बोया जा सकता है।

बीज शब्द: सांप्रदायिकता, भिखमंगा, जिरह, कचहरी, खलनायक।

'कितने पाकिस्तान' सांप्रदायिकता की विध्वंशात्मक–विद्वेषात्मक प्रवृत्तियों तथा दुष्परिणामों को उकेरने वाला एक बहुचर्चित उपन्यास है। यह सन् 2000 में प्रकाशित एक वृहद्काय उपन्यास है। कमलेश्वर ने इसका लेखन कार्य मई 1990 में प्रारंभ किया एवं दिसंबर 1999 में इसे समाप्त किया था। प्रस्तुत उपन्यास 42 परिच्छेदों में विभक्त है। इस उपन्यास की कथावस्तु पारंपरिक लीक से हटकर प्रस्तुत की गई है। इस उपन्यास के सृजन से संबंधित कमलेश्वर का वक्तव्य है, "मेरी दो मजबूरियां भी इसके लेखन से जुड़ी हैं। एक तो यह कि कोई नायक या महानायक सामने नहीं था, इसलिए मुझे समय को ही नायक–महानायक और खलनायक बनाना पड़ा। और दूसरी मजबूरी यह कि इसे लिखते समय लगातार यह एहसास बना रहा कि जैसे यह मेरी पहली रचना हो...लगभग उसी अनकही बेचैनी और अपनी असमर्थता के बोध से मैं गुजरता है...आखिर इस उपन्यास को कहीं तो रुकना था। रुक गया। पर मन की जिरह अभी भी जारी है।"[1] उपन्यास के आरंभ में अदीब की स्मृति में विद्या का प्रसंग द्रष्टव्य है तथा पाठक के सम्मुख एक रहस्य बनकर कुछ देर के लिए गायब हो जाता है। समय एवं इतिहास ही इस अद्भुत उपन्यास के नायक, महानायक और खलनायक हैं। उपन्यासकार अदीब की कचहरी बैठाकर विश्व भर की सभी समस्याओं को चित्रित कर दिया है, जो साहित्य के इतिहास में अपनी तरह का पहला और सार्थक प्रयोग है।

वर्तमान भारतीय इतिहास में हिन्दू–मुसलमान संघर्ष, देश का विभाजन तथा पाकिस्तान का उदय, सांप्रदायिकता के दुष्परिणाम आदि को कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस उपन्यास के जरिए देश के भविष्य को देखने का प्रयास किया है। इस उपन्यास के संदर्भ में इसके चौथे संस्करण में प्रकाशकों ने लिखा कि "कमलेश्वर का यह उपन्यास मानवता के दरवाजे पर इतिहास और समय की एक दस्तक है...इस उम्मीद के साथ कि भारत ही नहीं, दुनिया भर में एक के बाद दूसरे पाकिस्तान बनाने की लहू से लथपथ यह परंपरा अब खत्म हो....।"[2] इसके अंतिम 42 वें परिच्छेद में भिखमंगा कबीर आता है। वह एक ऐसी यात्रा पर चलने के लिए पहुंचता है, जहां आतंक, घृणा, भय आदि नकारात्मक इतिहास के स्थान पर शांति, आशा, प्रेम तथा उज्ज्वल भविष्य का सकारात्मक बीज बोया जा सकता है। कमलेश्वर ने इस उपन्यास में आदिम जमाने से लेकर जिसमें मध्य एशिया का आठ हजार साल पुराना गिलगमेश भी है और माउण्टबेटन भी, औरंगजेब भी और उपन्यासों के ऋषि भी, प्रमथ्यु भी है। आज तक की दुनिया भर की सभ्यताओं के

Copyright @ 2022 Author

VIVEKANAND VIPR... INSTITUTE OF EDUCA...
Bignanikanagar ... Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

लोगों को सूफी की सी गहरी निगाह से देखा है। यह उपन्यास मिथक, इतिहास तथा फैंटेसी के मिश्रण से ओत-प्रोत है।

कितने पाकिस्तान के प्रारंभ में कारगिल के इलाके में घुसपैठियों के नाम पर फिर पाकिस्तानी फौजियों द्वारा किए गए अघोषित आक्रमण का चित्रण प्रस्तुत है। लद्दाख में कारगिल, बटालिक, द्रास, तुर्तक, जोजीला, काकसार, सिल्खियाल, घोघ, होतापाल क्षेत्र की नियंत्रण–रेखा को तोड़कर फौजियों ने अपने अड्डे एवं बंकर बनाए हैं। पाकिस्तानी फौजी अफसरों का कहना है कि वे घुसपैठिए इस्लामी मुजाहिदीन हैं, किंतु असलियत यही है कि मुजाहिदीनों के भेष में वे पाकिस्तान के फौजी ही हैं। पाकिस्तान ने सन् 1972 के संधिप्रत्र का उलंघन किया था। इसकी ओर ध्यान देने के लिए अदीब (लेखक) ने प्रधानमंत्री तथा रक्षामंत्री को खुला खत लिखा। प्रस्तुत खत में राजनीतिक नेताओं की लापरवाही की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

खत भेजने के बाद अदीब बहुत परेशान हो जाता है। सोचता है, उसका उदगार एवं विचार कहीं देश की सुरक्षा को मुसीबत में न डाल दे। अयोध्या के राजा राम की कथा भी इसके समानांतर रखी गई है। राजा राम अश्वमेध यज्ञ की घोषणा करने के लिए आए तब उन्होंने एक ब्राह्मण का करुण क्रंदन सुना। वह ब्राह्मण अपने पुत्र के मृत शरीर को छाती से लगाते हुए आया और राम को पुत्र की हत्या का दोषी ठहरा दिया। राम स्तब्ध हो जाते हैं, तब नारद ने उन्हें बताया कि धर्मशास्त्रों के अध्ययन, तप तथा साधना से मोक्ष प्राप्ति का अधिकार केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य वर्णों को है, परंतु एक शूद्रवंशी शंबूक अपने दास धर्म को त्याग कर मोक्ष के लिए साधना कर रहा है। इस घोर पाप के कारण ही उस ब्राह्मणपुत्र की मृत्यु हुई। राम ने क्षत्रिय धर्म का पालन किया और ब्राह्मण–धर्म की रक्षा के लिए शूद्र शंबूक की गर्दन काट ली। इसके साथ ही उपन्यास में महाभारत युद्ध के भीषण संग्राम का भी उल्लेख किया गया है।

महाभारत के युद्ध के युद्ध में कौरव हार गए थे। मृतकों की संख्या बताने के लिए चित्रगुप्त हाजिर होते हैं लेकिन बेहद वजनी होने की वजह से वे रजिस्टर एवं फाइलें नहीं ला पाए। उनके पास एक विलक्षण लघु यंत्र था। उसमें सब कुछ दर्ज था। महाभारत–युद्ध में पांच पांडवों और श्रीकृष्ण के अलावा कोई नहीं बचा था। यह बात सुनकर अदीब रो पड़ा। उस समय एक प्राणरहित कृशकाय वृद्ध उनके सामने आकर खड़ा हो गया। उसने कहा कि उसकी एक प्रयोगशाला है तथा हर अभावग्रस्त, शोषणग्रस्त, यातनाग्रस्त एवं मृत्युग्रस्त मनुष्य के आंसू अश्रु सागर में एकत्रित किया है। उस कृशकाय व्यक्ति का वक्तव्य है, ''सदियों से मैं यही कर रहा हूँ और देख रहा हूँ....सदियों से मनुष्य प्रकृति का शोषण करता रहा। प्रकृति बाझ हो गई तो मनुष्य ही मनुष्य का शोषण करने लगा.....इसलिए अब आंसुवों की बाढ़ आ गई है।....क्योंकि मनुष्य ने मनुष्य के खिलाफ अब यंत्र का आविष्कार कर लिया है।''[3] अदीब उस वृद्ध से पूछता है कि वह उससे, क्या चाहता है। वृद्ध ने प्रत्युत्तर दिया कि वह उनके आंसू चाहता है। अदीब ने फिर से उससे पूछा कि वह उनके आंसू क्यों चाहता है, तब वृद्ध ने कहा कि मनुष्य के आंसुओं से पवित्र कुछ भी इस दुनिया में नहीं है। वृद्ध कहता है– ''देखा अदीब ! ब्रह्माण्ड की अमूर्त पराशक्ति ने अशक्त हो गए शरीर से आत्मा की स्वाभाविक मुक्ति के लिए मृत्यु का एक सामान्य विधान बनाया था, लेकिन जब से मनुष्य ने मृत्यु का आविष्कार किया है, तब से युद्धों में अप्राकृतिक मृत्युएँ होने लगी है.....नर संहार होने लगे हैं।''[4] उन आंसुओं के अध्ययन से उसे पता चला कि मृत्यु के बदले जीवन को तलाशना ही होगा। इस गैरजरूरी मौत से निजात पाने तथा जिंदगी की सार्थक तलाश के लिए हित्ती सभ्यता का गिलगमेश निकल चुका है। निकलने से पहले उसने घोषणा की कि पीड़ा एवं यातना सहकर वह मृत्यु को पराजित करेगा। कमलेश्वर ने प्रतीकों के माध्यम से सूक्ष्म तथा विशिष्ट अनुभूतियों का इस उपन्यास में अभिव्यक्त किया है। वस्तुतः कमलेश्वर ने इस उपन्यास में प्रतीकों का साधारणीकरण कर दिया है।

गिलगमेश ने प्रतिज्ञा ली थी कि वह मृत्यु से मुक्ति की औषधि को खोज कर लाएगा। उसकी इस प्रतिज्ञा से बेबेलोनियां, मेसोपोटामिया, सुमेरी–अक्कादी तथा सिंधु घाटी सभ्यता के देवता कॉपने लगे। पृथ्वी सम्राट गिलगमेश की

Copyright @ 2022 Author

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Gnanikanagar vari Anand

ISSN: 2278-4632
Vol-12 Issue-02 No.01 February 2022

यह घोषणा सुनकर सुमेरी सभ्यता के देवता नपुन कहता है, "मनुष्य पाप और सुख–विलास की वासना में लिप्त होकर निरकुंश हो चुका है। मनुष्य की सृष्टि में सब–कुछ अवैध है....यदि वह मृत्यु को जीत कर हमारी सृष्टि में आ बसा तो हमारा यह स्वर्गिक–संसार प्रदूषित हो जाएगा।"[5] देवताओं की दुनिया में कोलाहल मचते देखकर सुमेर के पर्वतों से सर्वशक्तिमान अनु उपस्थित हुआ। उसने आकाश–पुत्र एंकिदू को मनुष्य का जन्म देकर पृथ्वी पर भेजा। वह एकदम आदिम, जंगली, पशुतुल्य तथा बर्बर मनुष्य था। उसकी जानकारी पाकर सम्राट गिलगमेश ने अत्यंत रूपवती देवदासी रूना को भेज दिया। उसे यह भी मालूम हुआ कि इसके पीछे देवता अनु का हाथ है। वह कोधित हो उठा। इसी बीच गिलगमेश और एंकिदू मित्र हो गए। पृथ्वी पर मनुष्य ने प्रेम, मित्रता, जीवन, कर्म, श्रम, शांति जैसे जीवन के महातत्वों को खोजकर हासिल किया। तब अनु ने एक भयंकर तथा विकराल सांड को जन्म देकर पृथ्वी पर भेजता है। उस विकराल सांड को गिलगमेश मार देता है। पर एंकिदू बुरी तरह घायल हो जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। अपने मित्र का मृतक शरीर देखकर गिलगमेश रो पड़ता है।

प्रलय के समय आर्य सभ्यता की मत्स्य कन्या ने सम्राट गिलगमेश को अमरता प्राप्ति का रहस्या बताया। उसने मृत्यु के विरूद्ध जीने की शक्ति कायम रखने वाले सभी जीवकणों–अणुओं को अपनी नाभी में छुपा लिया। उस मत्स्य कन्या से शुरुप्पक नगर के जिउसुद्दु की जानकारी प्राप्त की, जिसके पास अमरता की प्राप्ति की औषधि सुरक्षित थी। किंतु प्रलय के उपरांत वह जिउसुद्दु कहीं गायब हो गया। सम्राट उसकी खोज में निकल पड़ा। यह खबर सुनते ही परमदेवता ने उसे मारने के लिए विषैले सर्प तथा वृश्चिकों को भेजा परंतु उन विषैले विषधरों और वृश्चिकों का विष प्रभावहीन हो गया। सागर के जल ने उस विष को शमित किया। सम्राट गिलगमेश पाताल लोक की ओर चला गया। कमलेश्वर की इस संदर्भ को लेकर उपन्यास में टिप्पणी है– "सदियां बीत गई। और अब तक गिलगमेश की यात्रा जारी है....औषधि की तलाश में वह अब भी सागरतल की गहराइयों में उतरता जा रहा है...उतरता जा रहा है।"[6] अर्थात मानव को आज तक अमरता की औषधि अप्राप्य ही रह गई।

सम्राट गिलगमेश अमरता की औषधि की खोज में लगा रहता है। देवता गण उसकी आवाज को तलाशने लगे। तब प्रमथ्यु जिसने मनुष्य को जीयस के महल में अग्नि चुराकर दिया था और कहा था कि "तुम गिलगमेश की आवाज को बंदी नहीं बना सकते...आवाज फरार हो चुकी है।"[7] प्रमथ्यु ने घोषणा की कि देवदासी रूना ने प्रेम, मित्रता, शांति तथा क्रांति के साथ–साथ गिलगमेश की आवाज को लेकर फरार हो गई। वह उन्हें मर्त्यलोक की ओर प्रस्थान की।

देवदासी रूना मर्त्यलोक में उतर गई। उसको अदीब के सामने पेश किया गया। उसने सम्राट गिलगमेश की आवाज को अदीब के हाथों में सौंप दिया। अदीब ने उससे आवाज की सौगात लेकर उसे अपनी धमनियों के रक्त में पैबस्त कर लिया। उस वक्त सर्बिया के कोसोवो प्रदेश की दस्तक हाजिर हुआ। उसने कहा कि सभ्यता की उस प्राचीनतम घाटी में भयानक युद्ध चल रहा है। उपन्यास के इस परिच्छेद में 'नाटो' का जन्म तथा उसकी भयानक हमलों का उल्लेख हुआ है। कोसोवो प्रदेश की दस्तक का कथन है, "हमारे भूखंड पर नाटो नाम के एक दशानन ने जन्म लिया है...सागर पार का एक और राक्षस उनका सरगना है। उन्होंने मिलकर सर्बिया और युगोस्लाविया पर हमला करके मुझे श्मशान बना दिया है...सर्बिया प्रभुसत्ता संपन्न मेरे ही युगोस्लाविया का हिस्सा है और कोसोवो उसी आजाद भूखंड सर्बिया का इलाका है.... लेकिन नाटो के राक्षसों और उसके सरगना ने अपने हितों के लिए हमें बरबाद कर दिया है।"[8] अर्थात विभाजन का रास्ता चुनकर उन हिंसकों ने मिसाइल, रासायनिक कारखाने, तेल भंडार आदि से डैन्यूब नदी तथा मानवता को विषाक्त किया है।

अदीब ने नाटो के भीषण युद्ध से संबंधित पूछताछ के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव कोफी अन्नान को पेश करने का आदेश दिया। तब अर्दली ने हाजिर होकर कहा कि छाती में दर्द के कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया है। यह सुनकर अदीब ने युद्ध और विभाजन् की दुरावस्था पर अपना वक्तव्य देता है– "मानव रक्त सिंचित अपने खेतों

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar vari Anandpura Road
Copyright @ 2022 Author

Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)

ISSN: 2278-4632
Vol-12 Issue-02 No.01 February 2022

अन्न नहीं विषैले धतूरे की कांटेदार फसलें उगेंगी। उन जातियों की स्त्रियां व्यभिचार और बलात्कार के लिए अभिशप्त होंगी संतानें मनोरोग और व्याधियों से ग्रस्त होंगी। धर्म के नाम पर अधर्म की आंधियां चलेंगी और सत्ता के कलंकित सिंहासन पर नरमुंडों की माला पहने कोई निरंकुश एकाधिकारी शासक विद्यमान हो जाएगा।"[9] अर्थात युद्ध का भीषण दृश्य तथा धर्म के नाम पर धार्मिक व्यापार करने वालों का यथार्थ चित्रांकन यहां हुआ है। जयशंकर प्रसाद का उल्लेख करके कमलेश्वर ने युद्ध तथा जीवधारियों के विनाश को भी चित्रित किया है। उन्होंने गांधी की अहिंसा एवं आइंस्टीन के पश्चाताप की ओर भी पाठकों को ले गए हैं।

सांप्रदायिक शक्तियों का सबसे बड़ा हथियार धर्म है। कमलेश्वर एक क्रांतिदर्शी लेखक हैं। उन्होंने पढ़े–लिखे एवं संवेदनशील लोगो को इससे अवगत कराया है। उन्होंने अदीब के माध्यम से अपने भविष्य को बदलने की आवाज दी है। यह प्रयास एक जिम्मेदार और संवेदनशील साहित्यकार ही दे सकता है– "तुम देखना.....बदलती दुनिया के दौर में कोई जालिम, कोई तास्सुबी, कोई धर्मांध शहंशाह अपनी कोशिशों में कामयाब नहीं होने पाएगा...लेकिन अत्याचारियों और इंसान परस्त ताकतों के बीच यह संघर्ष हमेशा चलता रहेगा....हर सदी में एक दाराशिकोह के साथ एक औरंगजेब भी पैदा होगा.... इस दस्तूर को बदलना होगा, नही तो मेरे साथ–साथ तुम सबका भविष्य भी डूब जाएगा।"[10] इस कथन से कमलेश्वर की समाज के प्रति एक साहित्यकार का उत्तरदायित्व दिखाई देता है और यहीं उन्हें बड़ा लेखक बनाता है।

---

1 कमलेश्वर – कितने पाकिस्तार (भूमिका), पृ. 6, राजपाल एंड संस, काश्मीरी गेट, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000

2 कमलेश्वर – कितने पाकिस्तार (कवर पेज से)

3 कमलेश्वर – कितने पाकिस्तार, पृ. 23

4 वही, पृ. 23

5 वही, पृ. 24

6 वही, पृ. 35

7 वही, पृ. 43

8 वही, पृ. 45

9 वही, पृ. 45

10 वही, पृ. 47

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Copyright @ 2022 Author

ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

इतिहास, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका

A Peer-Reviewed and Listed in UGC Care List

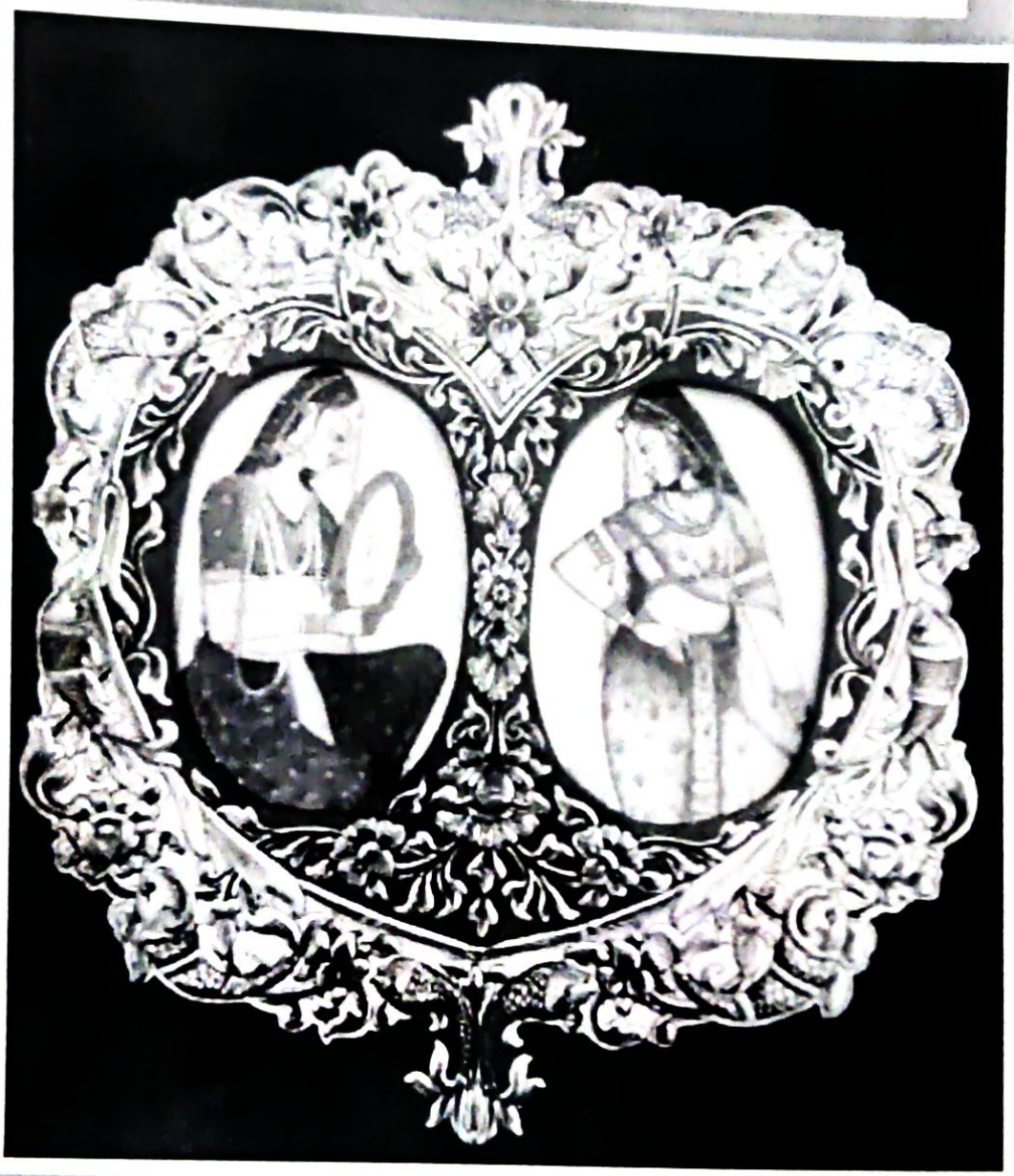

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI
Bignanikanagar yari Anandpura Roa
Aurangabad (Bihar) 824101

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान; कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

A Peer-Reviewed and Listed in UGC CARE List
ISSN 2278-4632

संपादक
डॉ. बी. एल. भादानी
प्रोफेसर

प्रबंध संपादक
श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान
संस्कृति भवन
एन.एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

INDEX

S.No.	TITLE	Page No.
1	INTERNET ADDICTION IN RELATION TO SOCIO-DEMOGRAPHIC FACTORS, ACADEMIC PERFORMANCE AND VALUE ORIENTATION OF SECONDARY STUDENTS WITH SPECIAL REFERENCE TO GUWAHATI CITY, ASSAM, INDIA	1
2	THE OPINION OF SCHOOL TEACHERS ABOUT SURYA NAMASKAR FOR STUDENTS	8
3	STUDY OF MAGIC REALISM IN THE SELECT NOVELS OF CHITRA BANERJEE DIVAKARUNI	11
4	ROLE OF REGULATORY FRAMEWORK IN DEVELOPMENT OF SMALL BUSINESS ENTERPRISES	16
5	METACOGNITIVE AWARENESS AMONG UNIVERSITY TEACHERS	24
6	ARTICLES 21 AND 22 : PERSONAL LIBERTY AND PREVENTIVE DETENTION	33
7	राजकीय विद्यालयों की माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों की ऑनलाइन लर्निंग के प्रति अभिवृति का अध्ययन : बीकानेर जिला	36
8	A PSYCHOLOGICAL CRISIS ON THE IMMIGRANTS IN CHITRA BANERJEE DIVAKARUNI'S *THE MISTRESS OF SPICES*	39
9	समकालीन कविता में युद्ध और शांति की अभिव्यक्ति	42
10	THE SOCIO-ECONOMIC IMPACT OF COVID-19 PANDEMIC ON CAB DRIVERS-A CASE STUDY IN BANGALORE CITY	49
11	रमणिका गुप्ता के कथा–साहित्य में स्त्री-विमर्श की झलक	55
12	अभिमन्यु अनत के उपन्यास–साहित्य में गाँधी–दर्शन	60
13	INSOLVENCY PROFESSIONAL: THE MOST IMPORTANT PILLAR UNDER INSOLVENCY AND BANKRUPTCY CODE, 2016	63
14	MAPPING THE FEMININE LANDSCAPE AND SELF: AN ECOLOGICAL STUDY OF KAMALA MARKANDAYA'S *NECTAR IN A SIEVE*	69
15	INTENDED PARENTS: STATUS OF SOCIO-PSYCHOLOGICAL STUDY	76
16	THE QUANTITATIVE STRUCTURE BASED RELATIONSHIP (QSAR) OF NEURAMINIDASE INHIBITOR DERIVATIVES ACTIVITY FOR MORE POTENT DRUG DISCOVERY	81
17	USE OF GLASS FIBER FOR STRENGTH ENHANCEMENT OF CONCRETE	84
18	यह कविता नहीं आग की ओर इशारा है	91

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar)

Jnni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-12 Issue-07 No.03 July 2022

यह कविता नहीं आग की ओर इशारा है

डॉ. संजय कुमार सिंह परीक्षा नियंत्रक उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

सार संक्षेप - केदार नाथ सिंह आधुनिक हिन्दी कविता के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं ,आपकी कविताओं में जीवन जगत के प्रति गंभीर चिन्तन देखने को मिलता है। प्रकृति और पर्यावरण के प्रति आपकी चिंता बहुत ही मुखर रूप में देखने को मिलती है। मनुष्य एवं प्रकृति का संबंध भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से मुख्य विषय रहा है परंतु मनुष्य एवं प्रकृति के परस्पर सम्बन्ध बताने वाले समाकालीन कवियों का दृष्टिकोंण बदल गया है। इसके साथ ही कविता का भावुक धरातल भी बदल गया है और कवि की संवेदना की अभिव्यक्ति अधुनातन समस्याओं पर आधारित हो गई है। आदि कवि वाल्मीकि से अब तक की सृजनशीलता इन्सान के 'आह से भरा है'। 'मा निषाद' प्रकृति की बोली थी। आज के मनुष्य ने 'मा निषाद' कहना जब उपेक्षित किया तब से प्रकृति एवं मनुष्य का रिश्ता बिगड़ गया।

बीज शब्द- पर्यावरण, समस्याओं, सृजनशीलता, कविता, रिश्ता ।

"कुओं को ढक लिया है घास ने
बस घास का फैसला
कि अब कुऍं नहीं रहेंगे
फिर क्या करें कुओं का ?
....छोड़ दो कुओं को
जहॉं वे हैं जैसे वे हैं
गिरने दो अपने आप अतल में
गिर जाने दो कुओं को।"

–केदारनाथ सिंह

समकालीन विश्व साहित्य के साथ तमाम भारतीय साहित्य में, विशेषतः कविता में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकताओं पर जोरदार समर्थन हो रहा है। मनुष्य एवं प्रकृति का संबंध भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से मुख्य विषय रहा है परंतु मनुष्य एवं प्रकृति के परस्पर सम्बन्ध बताने वाले समाकालीन कवियों का दृष्टिकोंण बदल गया है। इसके साथ ही कविता का भावुक धरातल भी बदल गया है और कवि की संवेदना की अभिव्यक्ति अधुनातन समस्याओं पर आधारित हो गई है। आदि कवि वाल्मीकि से अब तक की सृजनशीलता इन्सान के 'आह से भरा है'। 'मा निषाद' प्रकृति की बोली थी। आज के मनुष्य ने 'मा निषाद' कहना जब उपेक्षित किया तब से प्रकृति एवं मनुष्य का रिश्ता बिगड़ गया। 'मां' कहना प्रकृतिपरक आपात् सूचना है। ज्ञानपीठ से सम्मानित कवि केदारनाथ सिंह की कविताएं इसी 'मां' की पुकार है। तथाकथित आख्यानपरकता के विरूद्ध ये कविताएं केवल उन क्षणों की खोज करती है जहॉं प्रकृति और मनुष्य का अटूट सम्बंध आवश्यक होता है। उनकी कविताएं

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI
Bignanikanagar yari Anandpura Roac
Aurangabad (Bihar) 824101

Copyright @ 2022 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-12 Issue-07 No.03 July 2022

इक्कीसवी सदी की चुनौतियों का एक बड़ा अंबार लेकर हमारे सामने प्रस्तुत हुई है। जीवन एवं पर्यावरण का संकट इस सदी की कुछ प्रमुख चुनौतियों मे से एक है।

औद्योगीकरण, पूंजीवाद, भूमंडलीकरण एवं बढ़ती उपभोक्तावादी प्रवृत्तियां आदि कुछ ऐसे तत्व है जिन्होंने पर्यावरण संकट को बढाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राकृतिक तत्वों के अधिकाधिक शोषण के चलते प्रकृति को अत्यंत क्षति पहुँची है। पूँजीवाद के प्रसार एवं अत्यधिक लाभ कमाने की इच्छा में मनुष्य ने प्रकृति के साथ भयकर खिलवाड़ किया है। पूँजीवादी औद्योगिक विकास ने प्रकृति के विभिन्न संसाधनों का इतना अधिक दोहन किया है जिसकी क्षतिपूर्ति प्रकृति द्वारा अपने पुनर्नवीकरण चक्र द्वारा कर पाना आसान नहीं रहा। मनुष्य ने अपनी सुख–सुविधाओं के लिए प्रकृति पर प्रभुत्व स्थापित करने की जो नीति अपनायी है उसके भयंकर परिणाम की ओर संकेत करते हुए एंगील्स ने अपनी पुस्तक 'डायनेसि ऑफ नेचर' में स्पष्ट लिखा है, "हमको इस बात संतुष्ट नहीं होना चाहिए कि मनुष्य प्रकृति के ऊपर विजय प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार की प्रत्येक विजय के लिए प्रकृति हमसे बदला लेती है।" 'वर्ल्ड वाच इंस्टीट्यूट' द्वारा प्रकाशित 'हाउ मच इज इनफ' नामक अपनी पुस्तक में एनल थींग बरनिंग ने इसका खुलास करते हुए स्पष्ट कहा है कि "भूमंडलीय पूंजीवाद और उसमें फैले हुए बाजार ने लोगों के सोचने समझने के ढंग को बिलकुल बदल दिया है। अधिक से अधिक वस्तुओं को रखने एवं उपभोग करने की प्रवृति तथा अत्यधिक उपभोग की मानसिकता को सामाजिक प्रतिष्ठा के ताने–बाने में बुन दिया गया है।...यह सोचने–समझने का समय नहीं है कि इस प्रवृत्ति के चलते मानव जाति के भविष्य पर कितना बड़ा संकट आ गया है।"

केदारनाथ सिंह अपनी कविताओं में पर्यावरण को लेकर खासे चिंतित दिखाई देते है और अपनी कविताओं के जरिए इस चिंता को समाज के बीच बार–बार उठातें हैं। नीम के झड़ते पत्तों से जिस कवि में उदासी का आलम छा जाता हो उसके लिए यह स्वाभाविक भी है कि वह संकट पर एक पुरजोर कोशिश करे। केदारनाथ सिंह अपने विभिन्न कविता संग्रहों में संकलित कविताएँ जैसे– पृथ्वी रहेगी, कस्बे की धूल, बाजार, वापसी, अकाल में दूब, अकाल में सारस, सूर्यास्त के बाद एक अंधेरी बस्ती से गुजरते हुए, ओ मेरी उदास पृथ्वी, अड़ियल सास, पानी की प्रार्थना, पानी था मैं, भुतहा बाग आदि कविताओं में पर्यावरण संकट को एक भावनात्मक विकलता के साथ कवि ने व्यक्त किया है। यहां ध्यान देने वाली बात है कि कवि मात्र आक्रोश नहीं प्रकट करता अपितु इसके कारणों की पड़ताल करके हमारे सामने पूंजी और सत्ता के गंठजोर का खुलासा करता है।

'पानी की प्रार्थना' कविता में पानी पूरी शिद्दत के साथ प्रभु (सत्ता संचालकों) के समक्ष एक दिन का हिसाब लेकर खड़ा होता है और उस एक दिन हिसाब में लुप्त होने के कागार पर पहुँचे पानी ने अपने पीछ कार्य कर रहे समूचे सत्ता और पूंजीवादी तंत्र की पोल खोल देता है :

"पर यहां पृथ्वी पर मैं
यानि आपका मुँहलग्गा पानी
अब दुर्लभ होने के कागार तक
पहुँच चुका हूँ
पर चिंता की कोई बात नहीं

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Copyright @ 2022 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-12 Issue-07 No.03 July 2022

यह बाजारों का समय है
और वहां किसी रहस्यमय स्रोत से मैं हमेशा मौजूद हूं।"

बाजार में पानी की अपलब्धता पर केदारनाथ सिंह प्रश्न खड़े करते हैं। उस रहस्यमय स्रोत की ओर इशारा करते हैं जहां से विलुप्ति के कागार पर पहुँच जाने के बावजूद पानी बाजार में पहुँच रहा है। कवि यहां पूंजीवाद और सत्ता के गठजोड़ की ओर भी इशारा करता है। कहीं ऐसा तो नहीं कि पानी को बाजार की वस्तु बनाने के लिए ही उसके प्राकृतिक स्रोतों को नष्ट किया जा रहा है। इस ओर कवि का यह इशारा है कि :

"पर अपराध क्षमा हो प्रभु
और यदि मैं झूठ बोलूँ
तो जलकर हो जाऊँ राख
कहते हैं इसमें
आपकी भी सहमति है।"

केदारनाथ सिंह बिम्बों के कवि हैं और किसी भी विषय पर बयानबाजी के स्थान पर उसे मूर्त रूप में सामने लाते हैं। पर्यावरण की समस्या तथा उससे उपजे दृष्य को अपने पाठकों के सामने रखते हैं। सूखा का दृष्य है :

"भयानक सुखा है
पक्षी छोड़कर चले गए हैं
पेड़ों को
बिलों को छोड़कर चले गए हैं चींटे चीटियां।"

इस पूरे दृश्य बिम्ब के जरिए वे पर्यावरण समस्या एवं उससे उपजी सूखे जैसी स्थिति और उससे उपजे मानव अस्तित्व पर संकट की ओर आगाह करते हैं।

'बाघ' कविता संग्रह एक तरह से उनका पर्यावरण विमर्श का काव्य है। यह कवि के अपने समय को कविता में मूर्तिमान कर देने वाली क्लैसिक रचना है जहां कवि अपने पूरे वर्तमान को बाघ जैसे संश्लिष्ट चरित्र के रूप में लेकर उपस्थित होता है। पर्यावरण का मुद्दा यहां भी कवि पूरी संजीदगी से उठाया है। बाघ का जंगल के बजाय अखबार की खबर बन जाना, खिलौने के रूप में शेष रह जाना, उसके अस्तित्व के संकट की ओर इशारा है। जैसा कि कवि लिखता है :

"किसी ने देखा नहीं
अंधेरे में सुनी नहीं किसी ने
उसके चलने की आवाज
गिरी नहीं थी किसी भी सड़क पर खून की छोटी सी बूंद
पर सबको विश्वास है कि
सुबह के अखबार में छपी खबर गलत नहीं हो सकती।"

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101
Copyright @ 2022 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-12 Issue-07 No.03 July 2022

यह वास्तविकता का एक नमूना है जहां प्राणी समाप्त हो रहे हैं और उनका नाम मात्र ही बचा है। क्या पता आगे चलकर कथाओं से भरे इस संसार में वे भी एक कथा के रूप में सुशोभित होंगे। आज विकास के नाम पर हम जिस कदर अंधाधुंध जंगल काटे चले जा रहे है उससे जंगली जानवरों को जब रहने का स्थान नहीं रहेगा तब :

"जब छिपने को नहीं मिलती
कोई ठीक–ठाक जगह
तो वह धीरे से उठता है
और जा बैठ जाता है
किसी कथा की ओट में"

यह एक मनुष्य द्वारा निर्मित नंगी सच्चाई है जिसे कवि ने बहुत ही मार्मिकता के साथ रेखांकित किया है। जंगलों का मिटते जाना, कथाओं में ही जानवरों के अस्तित्व का शेष रहना, यह एक खौफनाक मंजर है जिसे कवि अपनी कविता के माध्यम से हम तक पहुँचा रहा है। अगर ऐसा होगा तो यह इक्कीसवीं सदी का अद्भूत आख्यान होगा।

केदारनाथ सिंह ने 'बाघ' कविता में पर्यावरण संकट को मशीनीकरण में भी खोजा है। आज मशीने जहां एक तरफ प्रगति और विकास का पैमाना हैं वहीं पर्यावरण को नष्ट करने में मशीनों का योगदान भी अहम है। आज मशीन मानव का विकल्प बन कर मानव को ही विस्थापित कर रही हैं। मशीनीकरण के पीछे छुपे काले सच को कवि ने 'बाघ' कविता के पांचवे खंड में उजागर करता है। बाघ एक ट्रैक्टर को देखता है– 'एक सुंदर और विशाल ट्रैक्टर/वहाँ खेत में खड़ा था'। जाहिर है हरित क्रांति की सूचना देने वाले इस अद्भुत आविष्कार के प्रति आम जनमानस का उत्साहित होना स्वाभाविक है और इसकी खुषी में ही वह 'भई वाह! अद्भुत! आदि कह उठता है। सच्चाई यह है कि हम हर वस्तु को उत्पादन के आधार पर ही देखते हैं लेकिन जब कुछ समय बाद इसका स्याह पक्ष खुलने लगता है तब समझ में आता है कि कैसे यंत्रीकरण ने प्रकृति से लेकर मनुष्य तक के विस्थापन का प्रमुख कारण बनता चला गया है। हमने किस तरह प्रकृति द्वारा प्रदत किए गए अनमोल संसाधनों का दुरूपयोग किया है कवि ने इसे कविता में बाघ और लोमड़ी के संवादो के माध्यम से व्यक्त करता है–

'क्या आदमी लोग पानी पीते हैं ?
'पीते हैं' लोमड़ी ने कहा –
पर वे हमारी तरह
सिर्फ सुबह शाम नहीं पीते
दिन–भर में जितनी बार चाहा
उतनी बार पीते हैं।'

यह एक मूल समस्या है। सुविधाओं की चाह में सीमाओं को भूल जाना। कवि का संकेत साफ है, 'पर इतना पानी क्यों पीते हैं आदमी लोग ?' क्या उपभोग की कोई सीमा नहीं है ?'

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI...
Jignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Copyright @ 2022 Author

ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

इतिहास, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका

A Peer-Reviewed and Listed in UGC Care List

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान; कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

वर्ष :11 • अंक 10 No. 03

October 2021

A Peer-Reviewed and Listed In UGC CARE List

ISSN 2278-4632

संपादक

डॉ. बी. एल. भादानी

प्रोफेसर

प्रबंध संपादक

श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

INDEX

S.No.	TITLE	Page No.
1	BATHUKAMMA FLORAL FESTIVAL: A REVIEW OF CULTURE OF TELANGANA	1
2	INVESTIGATING MILLENNIALS PERCEPTION TOWARDS GREEN PRACTICES OPTED BY RESTAURANTS IN UTTARAKHAND, INDIA	5
3	WOMEN DEVELOPMENT: AN EXPLORATION OF PATHWAYS OF EMPOWERMENT	13
4	SOCIAL AND RELIGIOUS CONSCIOUSNESS OFATAL BIHARI VAJPAI'S JOURNALISM	17
5	A STUDY TO DETERMINE THE EFFECTIVENESS AND TO RECOMMEND FURTHER IMPROVEMENT ON EXISTING WASTE MANAGEMENT IN FLATS IN THRISSUR	21
6	IOT BASED GARBAGE MANAGEMENT SYSTEM FOR SMART CITIES	29
7	आयुर्वेद में वर्णित महामारी प्रबंधन	34
8	भारत सरकारच्या आर्थिक समावेश व बँकीग धोरणांबाबत गडचिरोली जिल्ह्यातील गोंड (माडिया) आदिवासींमधिल जागरूकता – एक अध्ययन	39
9	A STUDY ON ECONOMIC STRUCTURE AND TRADE PATTERN OF SAARC COUNTRIES	45
10	CHILD LABOURS IN KARNATAKA: AN ANALYSIS OF TRENDS AND PATTERNS	53
11	ROLE OF WOMEN IN STATE POLITICS OF MEDIEVAL ASSAM	63
12	विवेकी राय की कहानियों में चित्रित लोक जीवन	68
13	मधुकर सिंह की कहानियों में धार्मिक संस्कार एवं समाज	77
14	ACADEMIC LAW LIBRARIES COLLECTION DEVELOPMENT WITH SPECIAL REFERENCE TO DIGITAL ENVIRONMENT	81
15	POLYGAMY: A RATIONALE OF INEQUALITY AMONG WOMAN'S HUMAN RIGHTS	87
16	CONTRACT LABOUR ACT AND CONTRACT ACT: A CRITICAL ANALYSIS	106

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Jani Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.03 October 2021

मधुकर सिंह की कहानियों में धार्मिक संस्कार एवं समाज

डॉ. संजय कुमार सिंह (परीक्षा नियंत्रक) उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

सार-संक्षेप :- भारतीय परम्परा और समाज में धर्म को हमेशा से विशेष महत्व दिया गया है। धर्म हमारे जीवन का आधारभूत तत्व है ,इसी कारण हमारे समाज और साहित्य में धर्म और धार्मिक मान्यताओं का प्रतिबिम्बन देखने को मिलता रहा है। हिन्दी साहित्य के लगभग सभी रचनाकारों की रचनाओं में धार्मिक संस्कार किसी ना किसी रूप में देखने को मिलता है। मधुकर सिंह का साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है। अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के विविध रूपों को अभियक्त करते हुए अपने अपने साहित्य में जीवन जगत के बहुरंगी यथार्थ को प्रस्तुत किया है ,जिसमें धर्म और उससे जुडी मान्यताओं का भिन अंकन देखने को मिलता है।

बीज-शब्द:- संस्कार , आचरण , कल्याणकारी , संस्कृति , समाज।

धार्मिक संस्कार मानव जीवन को एक दिशा प्रदान करता है, जिसका आचरण मानव जीवन के लिए कल्याणकारी सिद्ध होता है। मधुकर सिंह की कहानियों में धर्म को लेकर काफी भिन्नता दिखाई देती है। एक ही समाज में भिन्न वर्ग के लोग निवास करते हैं इसीलिए धर्म को लेकर विभिन्न संस्कार दिखाई देते हैं। इस संदर्भ में डॉ राजकुमार का कथन है कि **"समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से धर्म का अर्थ उन सभी कर्तव्यों से लिया जा सकता है जिनका पालन मनुष्य जीवन की सफलता के लिए आवश्यक माना गया है। भारतीय शास्त्रकारों के अनुसार धर्म प्रत्येक स्थान पर, प्रत्येक समय में और प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक ही नहीं रहता। धर्म, देश, काल और पात्र के अनुसार भिन्न भिन्न होता है।"1**

धार्मिक संस्कार समाज की भिन्नता के कारण बदलता रहता है। यह बदलाव मधुकर सिंह की कहानियों में विशेष रुप से देखने को मिलता है। धार्मिक संस्कृति का असली रूप ग्रामीण अंचल क्षेत्रों में ही देखने को मिलता है। सुबल की भैंस कहानी में मधुकर सिंह ने धार्मिक संस्कृति का एक अनूठा रंग प्रस्तुत करते हैं कि **"सुबल बहू हुलस में फैली हुई भैंस और पाड़ी के सींगों के बीचोबीच मांग में सिंदूर अक्षत दरर रही है और बारंबार लोटे का जल गिरा- गिराकर छूंटा पूज रही है।"2** ग्रामीण अंचल में यह संस्कृति है कि जब किसान मजदूर अपने घर किसी नए जानवर को लाता है तो उसकी पूजा करता है। ताकि वह जानवर उसके घर के लिए शुभ रहे और धन दौलत की वर्षा करते रहे। गांव देहात में अभी यह मान्यता है कि कोई मनवांछित कार्य पूर्ण हो जाता है तो लो धर्म कर्म करने लगते हैं। कीर्तन कहानी में मधुकर सिंह ने ऐसे धार्मिक अनुष्ठान का वर्णन किया है गांव का मुखिया रघुवर दयाल जब चुनाव जीत जाता हैं। तब गांव में हरिकीर्तन का आयोजन करवाता हैं। लेखक वर्णन करते हैं **"उन्होंने कीर्तन के अनुष्ठान का संकल्प दो दिनों के भीतर लिया है। अब तक इन्होंने जो भी बुरा कर्म किया है उसे मुखिया चुने जाने के बाद एकदम छोड़ दिया है। रामायण मंडली के सामने जनेऊ निकालकर कसम खाई है कि आज से पर नारी को माता समझूंगा।" 3**

धार्मिक अनुष्ठान में व्यक्तियों की आस्था भरपूर रहती है। भले यह धार्मिक अनुष्ठान दिखावे के लिए हो लेकिन समाज को प्रेरणा जरूर मिलती है। बुरे कार्यों से बचने के लिए व्यक्ति धर्म का आश्रय लेता है धर्म कर्म से जुड़कर व्यक्ति अपने पापों की क्षमा याचना करता है। लोगों की धार्मिक अनुष्ठानों में विश्वास तटस्थ होता है। उनकी नजर में सृष्टि का रखवाला भगवान है। प्रत्येक जीव के पेट तक आहार ईश्वर ही प्रदान करता है। गांव में अकाल पड़ने के कारण त्राहि-त्राहि मची हुई थी। ऐसे में मुखिया के पिता हरि

Copyright @ 2021 Author

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.03 October 2021

कीर्तन पाठ करवाते हैं। यह संकल्प लेते हैं की जब तक बारीश नहीं होगी तब तक हरिकीर्तन पाठ चलता ही रहेगा। कीर्तन कहानी में ही लेखक धार्मिक संस्कार के प्रति लोगों की गुढ आस्था एवं विश्वास को प्रदर्शित करते हुए लिखते हैं कि **"अखंड कीर्तन जारी रहेगा। जो लोग शामियाने में नहीं पहुंच सके थे, उन्होंने अपने घर आंगन में ही कीर्तन शुरू कर दिया था। घर-घर यही लगता था कि मंदिर बना हुआ है। आंखों देखी बात है-कीर्तन अभी सात दिन भी पूरा नहीं चला था कि आकाश में बादल छाने लगे। थोड़ी ही सही, परंतु बारिश हुई। "4**

धार्मिक प्रवृत्ति व्यक्ति को आस्थावान तो बनाती ही है ऊपर से दुख और परेशानियों से लड़ने की ताकत भी प्रदान करती है। इस प्रवृत्ति में अनपढ़ गवार से लेकर पढ़े-लिखे लोग शामिल हैं। धार्मिक कर्मकांड में अफसर, कर्मचारी से लेकर सभी लोग मंदिरों में, मस्जिदों में, गुरुद्वारों में मत्था टेकने के लिए जाते हैं। उसका सपना कहानी में लेखक एक ऐसे छात्र के आस्थावान होने का जिक्र करते हैं जो इंजीनियरिंग पढ़ा लिखा अपने कॉलेज का ब्रिलियंट स्टूडेंट है। जो नौकरी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। लेखक वर्णन करते हैं कि **" सरकार के बड़े अफसरों, मंत्रियों और बुद्धिजीवी अध्यापकों को उसने जब से यहां हर मंगल और शनिवार को माथा पटक ते देखा है, तब से उसके विश्वास की डालियां और भी फैली हैं। और वह जानता है कि इस पटने वाले महावीर स्वामी की कृपा हुई तो कोई बड़ी और अच्छी नौकरी जरूर मिल सकती है और उच्च शिक्षा के लिए विदेश यात्रा भी आसान हो सकती है।"5**

धार्मिक होना और धार्मिक कर्मकांड करना कोई बुरी बात नहीं है। लेकिन अंधभक्ति करना यह कहां तक उचित है कह पाना कठिन है। शिक्षा और नौकरी मेहनत और संघर्ष के बदौलत हासिल की जा सकती है। किसी देवी देवता मंदिर मस्जिद में मत्था टेकने से यह सब प्राप्त नहीं होता है। इस जमाने में सबसे बड़ा धर्म मानव धर्म है। जो व्यक्ति मानव धर्म को अपना लिया वह इंसान से देवता बन जाता है। हरिजन सेवक नामक कहानी में मास्टर साहब को गांव के लोग देवता के समान ही पूजते हैं। लेकिन ऐसे देवता में भी दिखावा पन है छूत अछूत की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। लेखक वर्णन करते हैं कि **"मास्साब एकदम शाकाहारी, आचार नियम वाले आदमी थे। उनके पास पढ़ाने लिखाने से जो भी समय बचता था उसे ईश्वर भजन में लगाते थे। खद्दर केवल पहनते ही नहीं थे, बिछावन भी रखते थे। मैं बराबर उनके पांव दबाने को सोचता रहता, मगर वे हरिजनों और चुलाहों का छुआ पानी तक नहीं पीते थे।"6** गांव के मास्टर साहब प्रगतिवादी विचारधारा के व्यक्ति हैं। वे दो धारी जीवन जीते हैं एक तरफ अछूतों के लिए लड़ते हैं वहीं दूसरी ओर अछूतों से घृणा भी करते हैं। कुल मिलाकर गांधीवादी विचारधारा के व्यक्ति हैं। जिस प्रकार से गांधीजी हरिजनों के लिए कदम उठाया और जब असली हक देने की बात आई तो अनशन पर बैठ गए। इसी प्रकार की विचारधारा के व्यक्ति मास्टर साहब भी हैं। लेखक धार्मिक प्रवृत्ति को दिखाते हुए लिखते हैं कि**"मुझसे परंपरा और धर्म तोड़ने की बात करते हो? गांधी जी ने ईश्वर और अल्लाह को एक कर दिया तभी हम यहां तब आगे बढ़कर कुछ कर भी रहे हैं। पारी आगे की कड़ी-लड़के फड़के सबको बराबर करें तो हमको कोई एतराज नहीं है।"7**

मनुष्य इतना स्वार्थी और लालची है की जिस देवी देवता इस शरण में गुहार लगाता है। मन्नतें मांगता है। उसी देवी देवता के लिए इस स्वार्थी मानव के पास थोड़ी सी जमीन नहीं है जो दे सके। गांव की रक्षिका देवी माता का मंदिर बाढ़ की वजह से टूट जाता है तब गांव का प्रगतिशील इंसान ननकू देवी माता को उठा लाता है। लेकिन देवी माता के लिए कोई अपनी जमीन देना नहीं चाहता है। लेखक वर्णन करते हैं **"देवी माई की ही कृपा है कि अभी तक गांव सही-सलामत है। हद है ए रामजी! लोग इतने स्वार्थी हो गए हैं न! किसी के भी मुंह से बकार तक नहीं निकल रहा है। सभी एक दूसरे**

Copyright @ 2021 Author

Principal
VIVEKANAND VIRF INSTITUTE OF EDUCATIC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.03 October 2021

की जमीन पर चौंच गड़ाए हुए हैं। अपनी कोई दो डग जमीन भी देवी माई के लिए त्यागने को तैयार नहीं है।"8

मधुकर सिंह की कहानियों में धार्मिक व्यवस्था समाज के अंदर अत्यंत गहरी पैठ बनाए हुए नजर आती है। देवी, देवताओं को लेकर समाज में ओरआस्था देखी जा सकती है। तो वहीं दूसरी ओर बाह्याय आडंबर देखने को मिलता है। समाज में धर्म के नाम पर दिखावा होने लगा है।माई कहानी में लेखक धार्मिक व्यवस्था का चित्रण करते हैं। व्यक्ति जब सफलता की सीढ़ी चढ़ता है तो अनायास ही धर्म की ओर उसका झुकाव होने लगता है। मन भावुक को उठता है और व्यक्ति अपने आप को देवी देवताओं के शरण में अर्पित कर देता है। बाबू गजानन सिंह जब चुनाव जीत जाते हैं और ऊपर से कोयले की टाल भी लगवा लेते हैं। इस खुशी में गजानन हर कीर्तन का आयोजन करवाता है। लेखक वर्णन करते हैं कि "मालिक के कोयले के डाल पर फिर कीर्तन का आयोजन था। गांव से वोट डालने के लिए जो भी आए थे, उनमें से दस-बीस रह गए थे। इस बार कीर्तन की साज-सज्जा देखने लायक थी। मालिक चौबीस घंटे के निर्जला व्रतधारी थे। खर्च का कोई हिसाब किताब नहीं "9

मानव अपने स्वार्थ के प्रति इतना जागरूक होता है की समाज में दिखावे का जीवन जीने लगता है। गजानन सिंह अपने नौकर रघुनी को आए दिन सताता रहता है। पैसे रुपए के नाम पर थप्पड़ और गालियां देता है। और धर्म कर्म के नाम पर लाखों रुपए खर्च करता है। इस प्रकार की धार्मिक प्रवृत्ति मधुकर सिंह की कहानियों में देखने को बहुत आयात मात्रा में मिलती है।
अपनी क्रूरता के बल पर मुखिया बनना और लोगों को धर्म-कर्म में उलझा कर अपना उल्लू सीधा करना भारतीय परंपरा की यह पुरानी धार्मिक प्रवृत्ति है। चोरी हत्या पापा चार में लिप्त व्यक्ति धर्म का आवरण ओढ़े होता है। उसी आवरण के नीचे रह कर समाज को बेवकूफ बनाता है। कीर्तन कहानी में लेखक ऐसे ही रंगे सियार का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि "मुखिया साहब को पुरोहित ने सुझाया है की बदन पर नया वस्त्र होना चाहिए। मुखिया और पुरोहित दोनों पीतांबर में पूरे भगवान श्री कृष्ण लग रहे हैं। पुरोहित ने प्रार्थना की- धरम-करम का काम कई साल बाद अपने गांव में हो रहा है। जिससे जो बने भगवान के चरणों में हाजिर करें। चौबीस घंटे तक, अखंड कीर्तन चलेगा। पूर्णाहुति के बाद गांव-जवार के ब्राह्मण भोजन करेंगे।"10

कीर्तन के नाम पर मुखिया और पुरोहित मिलकर बहुत सारा चंदा के रूप में अनाज और पैसा इकट्ठा कर लेते हैं। जिन मजदूरों को खाने के लिए एक वक्त का दाना नहीं था वह भी धर्म के डर से चंदा के रूप में अन्न लाकर हाजिर करता है। ग्रामीण जीवन में धार्मिक प्रवृत्ति के लोग बहुत ज्यादा देखे जा सकते हैं। गांव में हर हारी बीमारी के लिए देवी देवता की स्तुति की जाती है। रोग व्याध से मुक्ति पाने के लिए गांव के लोग पूजा पाठ ज्यादा करते हैं। इनका मानना होता है कि सृष्टि के संचालक ईश्वर ही सब कुछ करता है। गांव में यदि अकाल पड़ जाता है तो लोग यह मानने लगते हैं की गांव वालों से ही कोई गलती हुई होगी जिसकी वजह से पानी नहीं बरस रहा है। अकाल पड़ने के बाद गांव की स्त्रियां एक साथ इकट्ठा होकर मेघ देवता की स्तुति करती हैं। लेखक वर्णन करते हैं कि "सँपवा छोड़ेला सँप केंचुल
गंगा मइया छोड़ना अरार
देव तोर छतिया ना फाटल
पानी बिनु पड़ल हाहाकार।"11
धार्मिकता समाज में एकता और अखंडता प्रदान करती है। समाज में धार्मिक मान्यता के कारण जीवन जीने की कला मिलती है।

Copyright @ 2021 Author

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

निष्कर्ष-

भारतीय सामाजिक परिदृश्य में झांकने से हमें सहज ही ज्ञात हो जाता है कि भारतीय जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा धार्मिक संस्कारों में लिप्त है। धार्मिक संस्कार ही मानव जीवन को दुख एवं विपत्ति में लड़ने का साहस प्रदान करते हैं। धार्मिक संस्कार एवं संस्कृति भारतीय पृष्ठभूमि को पूरे संसार में एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करती है। मधुकर सिंह की कहानियां माननीय धार्मिक संस्कारों से अवगत कराते हुए चलती है। जिसमें निस्वार्थ भाव से धर्म की सेवा करने वाले लोग हैं वहीं दूसरी तरफ धर्म के नाम पर ठगी करने वाले लोग भी देखे जा सकते हैं। धर्म का आवरण ओढ़े अनेक धार्मिक संस्कारों एवं संस्कृतियों को क्षति पहुंचाते हैं। अपने स्वार्थ एवं लोलुपता में लिप्त होकर धर्म की आड़ में धन उगाही करते नजर आ रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ राजकुमार भारतीय समाज एवं संस्कृति पृष्ठ संख्या 22
2. मधुकर सिंह लहू पुकारे आदमी कहानी संग्रह पृष्ठ संख्या 39
3. मधुकर सिंह लहू पुकारे आदमी कहानी संग्रह पृष्ठ संख्या 75
4. मधुकर सिंह लहू पुकारे आदमी कहानी संग्रह पृष्ठ संख्या 78
5. मधुकर सिंह 10 प्रतिनिधि कहानियां पृष्ठ संख्या, 20
6. मधुकर सिंह 10 प्रतिनिधि कहानियां पृष्ठ संख्या 28
7. मधुकर सिंह 10 प्रतिनिधि कहानियां पृष्ठ संख्या 30
8. मधुकर सिंह 10 प्रतिनिधि कहानियां पृष्ठ संख्या 91
9. मधुकर सिंह पहली मुक्ति कहानी संग्रह पृष्ठ संख्या 24
10. मधुकर सिंह पहली मुक्ति कहानी संग्रह पृष्ठ संख्या 43
11. मधुकर सिंह पहली मुक्ति कहानी संग्रह पृष्ठ संख्या 92

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Copyright @ 2021 Author

अंक 303 वर्ष 61

भाषा

जुलाई–अगस्त 2022

Principal
VIVEKANAND VIPT INSTITUTE OF EDUCATION
Rignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

भाषा

जुलाई–अगस्त, 2022

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुमोदित पत्रिका (क्रमांक–16)

अध्यक्ष, परामर्श एवं संपादन मंडल

प्रोफेसर नागेश्वर राव

परामर्श मंडल

प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

सुश्री ममता कालिया

प्रो. सत्यकाम

प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय

प्रो. पूरनचंद टंडन

प्रो. शैलेंद्र शर्मा

श्री रविशंकर रवि

डॉ. एम. गोविंदराजन

डॉ. जे.एल.रेड्डी

संपादक

डॉ. किरण झा

सह–संपादक

मीनाक्षी जंगपांगी

प्रदीप कुमार ठाकुर

श्रीमती सौरभ चौहान

प्रूफ रीडर

श्रीमती इंदु भंडारी

कार्यालयीन व्यवस्था

सेवा सिंह

संजीव कुमार

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

भाषा ISSN 0523-1418

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Signanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
आपने लिखा
संपादकीय
आलेख

1.	गयानी हिंदी–हिंदी की विदेशी भाषिक शैली	विमलेश कांति वर्मा	9
2.	बंग–भंग आंदोलन : गांधी एवं प्रेमचंद तथा 'सोज़ेवतन' कहानी संग्रह	कमल किशोर गोयनका	21
3.	महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव और माजुली की मुखौटा कला	आदित्य कुमार मिश्र	31
4.	निराला की कविताओं में विवेकानंद का भाववाद	राजेंद्र परदेसी	38
5.	जनकवि नागार्जुन : काव्य की अंर्तवस्तु	लीला मोदी	43
6.	राम कथा और प्रेमचंद	आनंद पांडेय	49
7.	कृष्णा सोबती–एक प्रखर कथाकार	रवि शर्मा 'मधुप'	57
8.	परदे पर प्रेमचंद	प्रताप सिंह	60
9	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की सामाजिक उपादेयता	रुचि कुमारी शर्मा	79
10.	हिंदी, तमिल तथा तमिल–हिंदी अनुवाद परंपरा और प्रदेय	पी. राजरत्नम	86
11.	रामदरश मिश्र : वसंत–व्यक्तित्व और मूल्यनिष्ठ सर्जना	वेदप्रकाश अमिताभ	92
12.	अमृता शेरगिल : एक अनथक और युगांतरकारी पेंटर	अर्पण कुमार	96
13	लुप्तप्राय होने के कगार पर कैथी लिपि : दशा और दिशा	संजय प्रसाद श्रीवास्तव	103
14	महिला उपन्यासकारों की उपन्यास दृष्टि	रंजय कुमार सिंह	110

घरोहर

15.	नीम	सुभद्रा कुमारी चौहान	115

यात्रा वृत्तांत

16.	दो बार सिंगापुर	रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर'	116

भाषा ISSN 0523-1418

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

महिला उपन्यासकारों की उपन्यास दृष्टि

रंजय कुमार सिंह

हिंदी कथा–साहित्य में एक नई स्त्री–चेतना का उदय, जिसे एक प्रकार से विस्फोट भी कहा जा सकता है, प्रायः पिछले 20–25 वर्षों में परिलक्षित किया जा सकता है। जाहिर है इस कालावधि में उपन्यास का श्रेष्ठ न केवल महिला कथाकारों द्वारा रचा गया है बल्कि संख्या बहुलता में भी इन्हीं का पलड़ा भारी है। सृजन के धरातल पर यह पितृसत्तात्मक समाज–व्यवस्था में अपने को एक नए सिरे से परिभाषित करने का प्रयत्न है।

भारतीय भाषाओं के साहित्य में स्त्री को उसके पूरे वजूद, उसकी पूरी भंगिमाओं यानी एक मुक्कमल मनुष्य के रूप में पहली बार प्रस्तुत करने का विस्फोटक प्रयास इस्मत चुगताई द्वारा लिखी गई कहानी 'लिहाफ' के माध्यम से हुआ जो प्रगतिशील आंदोलन के शुरुआती वर्षों (1936) में 'अंगारे' में प्रकाशित हुआ। कथा आलोचक पुष्पाल सिंह का विचार गौरतलब है कि इस कहानी के "प्रकाशन ने साहित्य की दुनिया में एक जलजला–सा ला दिया, एक थर्राहट जिसकी धमक दूर तक और देर तक सूनी जाती रही।"[1] यह कहानी स्त्री को अपनी कामनाओं के साथ जीने और अपनी स्वतंत्रता को पूरी तरह हासिल करने की हसरत को पूरा करने का साक्ष्य बनकर प्रस्तुत होती है। स्त्री की इस स्वातंत्र्य–यात्रा की दूसरी कड़ी कृष्णा सोबती के उपन्यास 'मित्रो मरजानी' के जन्म से होता है जिसने परंपरा, शुचिता और मर्यादा की चूनर को साहित्य में तार–तार कर दिया। इसके बाद पंजाबी भाषा की प्रख्यात साहित्यकार अमृता प्रीतम ने अपनी आत्मकथा 'रसीदी टिकट' लिखकर स्त्री–लेखन के सामने एक नया पथ प्रशस्त कर दिया। इस आत्मकथा ने पुरुषों द्वारा गढ़ी गई स्त्री–छवि 'नाच मेरी गुड़िया नाच' को पूरी तरह जमींदोज कर दिया। यह गौर करने वाली बात है कि हिंदी में महिला आत्मकथाकारों का दौर तो काफी बाद में आया है। आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व आए उपन्यास 'चित्तकोबरा' (1979) के द्वारा मृदुला गर्ग ने दांपत्य में तीसरे की उपस्थिति और स्वीकार तथा देह–संतुष्टि के नए रति–अनुभवों के चित्र द्वारा साहित्य लेखन में एक हलचल–सी मचाकर रख दी।

अगर इस समयावधि में लिखे गए महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों को देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि यह एक सीमित अनुभव–वृत्त का पारंपरिक लेखन नहीं है। इनमें घर–परिवार के परिचित अनुभव–जगत का चित्र तो है लेकिन उसके सरोकार पूरी तरह से दूसरे हैं। इन स्त्री–रचित उपन्यासों में अनेक स्त्री–प्रश्नों से जूझती अपनी स्वतंत्र अस्मिता की तलाश कभी स्वाभाविक रूप में तो कभी स्त्रीवादी विमर्श में करती स्त्री एक नई चेतना के साथ अपनी उपस्थिति पाती है। इन उपन्यासों में एक ओर अपनी दैहिक आवश्यकताओं का निःसंकोच रूप से स्वीकार भाव है तो दूसरी ओर अपनी निजता का ईमानदार ब्यौरा देने का साहस भी है। ये लेखिकाएँ अपनी पूरी तैयारी के

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

साथ साहित्य की दुनिया में कदम रखी हैं। सिमोन द बोउआर, केट मिलेट, मार्गरेट मीड आदि प्रख्यात लेखिकाओं के लेखन से इनका पूरा परिचय है।

यह याद रखने वाला तथ्य है कि महिला–लेखन की इस बहुलता में नारी–स्वातंत्र्य की नए युग में नई परिभाषा गढ़ने का सर्वप्रथम श्रेय सुरेंद्र वर्मा के उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' (1993) को है। शाहजहाँपुर जैसे छोटे शहर के पारंपरिक परिवार और रूढ़ियों से ग्रस्त बंद ब्राह्मण समाज की कन्या सिलबिल का वर्षा वशिष्ठ के रूप में रूपांतरण, दिल्ली के नाट्य विद्यालय में रंगमंच की दुनिया को नजदीक से जानने–बूझने का अवसर प्राप्त करने से लेकर मुंबई के फिल्म–जगत तक की सुदीर्घ यात्रा वर्षा वशिष्ठ के रूप में 'नए नारीत्व की जय–यात्रा'[2] है। वर्षा वशिष्ठ न केवल अपने परिवार और समाज द्वारा मिली पारंपरिकता को तोड़ती है बल्कि विभिन्न रूपों में स्त्रीत्व के लिए गढ़े गए पुरातन आदर्शों को पूरी तरह अपनी मुक्ति का राजपथ तलाश लेती है। रंग–जगत में निरंतर खुलती चली जाती वर्षा जिस निर्द्वंद और उन्मुक्त भाव से अपने प्रेमी हर्ष से देह संबंध स्थापित करती है, वह उसकी अपनी स्वतंत्रता की पूर्ण उद्घोषणा है। यह भाष्य ध्यान से पढ़ा जाना चाहिए जब वर्षा अपने व्यक्ति–स्वातंत्र्य को राष्ट्रीय–स्वातंत्र्य के सामानांतर रखकर देखती है। उसे हर्ष द्वारा इंडिया गेट की छाया में शास्त्री भवन के पीछे लिया गया चुंबन ऐसे लगता है, "जैसे मेरे भावात्मक इतिहास में स्वतंत्रता–आंदोलन के इतने शलाका पुरुषों का जुड़ना काफी नहीं था। निष्ठुर ने रतिरंग के लिए अपना घर और वह राष्ट्रीय पर्व चुना, जब भारतीय गणतंत्र का संविधान लागू हुआ था। जब राजपथ पर तोपें राष्ट्रपति को सलामी दे रही थीं, तो हठी प्रेमी मेरे कामकलश पर नखरेखा अंकित कर रहा था। इस तरह मेरे तन–मन की कांति राष्ट्रीय चेतना के इतिहास के साथ गुँथ गई है ...।"[3] वर्षा का यह अपने भावी जीवन को दिशा–निर्देश देने हेतु लिखा गया 'संविधान' था, जिससे वह अपनी पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करती है। 'सुंदर मुंबई हरित मुंबई' में आकर वर्षा आकाश की ऊँचाइयों को चूमने लगती है अपार धन–संपत्ति और पद्मश्री का अवार्ड उसके जीवन को पूर्ण बना देते हैं। रंगमंच और फिल्म की दुनिया में अपना व्यक्ति–स्वातंत्र्य प्राप्त कर जो कुछ वह अनुभव करती है, उसे दिव्या कत्याल इस रूप में व्यक्त करती हैं– "वर्तमान की इस ऊँची प्राचीर से अतीत का वह क्षण कितनी दूर जान पड़ता था, जैसे किसी प्राचीन युग का ध्वंसावशेष हो। क्या सचमुच आज की संपूर्ण, जीती–जागती वर्षा हजारों साल पहले की उस खंडित जर्जर अनुभूति से निकली है? और अगर दिव्या का सहारा न होता तो वह ऐसे समग्र रूप में वहाँ तक पहुँच सकती थी ?"[4] इस तरह कहा जा सकता है कि यह उपन्यास स्त्री–स्वातंत्र्य को एक नए प्रश्नों के साथ पूरी गहराई से विवेचित करता है और महिला उपन्यासकारों के लिए एक मानक प्रदान करता है।

प्रभा खेतान अपने उपन्यासों में स्त्रीवाद को पूरी प्रखरता से व्यक्त करती हैं। स्त्री–पक्ष की धारदार प्रस्तुति और उसका पुरजोर समर्थन करने में उनके उपन्यासों का अपना एक विशेष महत्व है। उनके उपन्यास मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' की तरह आंदोलनकारी रूप में नहीं आते, जहाँ यह घोषणा हो कि "मर्दों की दुनिया में रहने के लिए होम साइंस नहीं, कराटे

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

की जरूरत है।" प्रभा खेतान के व्यक्तित्व की बुनावट ही कुछ इस प्रकार से हुई है कि उनका लेखन स्त्रीवाद की अवधारणा को नारे और कागजी रूप में स्वीकार नहीं कर पाता। स्त्री पक्ष में उनका चिंतन निहायत ही व्यावहारिक धरातल पर अवस्थित है। प्रभा खेतान सार्त्र के दर्शन और सीमेन द बोउआर से काफी प्रभावित हैं। उनके द्वारा लिखा गया 'सार्त्र का अस्तित्ववाद' (1984) 'शब्दों का मसीहा : सार्त्र' (1985) तथा विश्व प्रसिद्ध कृति 'द सेकेंड सेक्स' का हिंदी रूपांतरण उसी प्रभाव का नतीजा है। बंद मारवाड़ी समाज से निकलकर अपने पुरुषार्थ के दम पर एक सफल उद्योगपति का दर्जा प्राप्त करने वाला उनका व्यक्तित्व ही स्वयं में स्त्री सशक्तीकरण का एक नायाब उदाहरण है। विश्वभर में घूमते हुए उन्हें स्त्री की स्थितियों का जो प्रत्यक्ष अनुभव हुआ, खास तौर से दक्षिण एशिया की कामगार स्त्रियों का, इन सबका आकलन उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि का सबल प्रमाण है। अपने उपन्यास 'आओ पेपे घर चलें' में आईलिन से वे कहती हैं– "ऐसा कौन–सा देश है जहाँ औरतें 'त्रिशुंक' होकर जीने की स्थिति में नहीं हैं, कहाँ नहीं जीती वे ? दुनिया में ऐसा कोई कोना बताओ, जहाँ औरत के आँसू नहीं गिरे?"[5] प्रभा खेतान स्त्री के स्वावलंबन को उसके स्वातंत्र्य से जोड़कर देखती हैं, उनका विचार है कि "औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है"[6] पति के धनाढ्य परिवार में पति के नाम से जाना जाना प्रिया को स्वीकार नहीं है। प्रभा खेतान जानती हैं कि व्यवस्था तोड़ने वाली स्त्री को समाज सौ कोड़े लगाता है। अपराधबोध से निकलने में प्रिया को समय लगता है लेकिन वह जैसे ही बाहर निकलती है उसे इस सत्य का बोध होता है कि "मृत संबंधों को ढोने में जितनी ताकत लगती है, उससे एक चौथाई ताकत में व्यापार किया जा सकता है।..... भले ही अपने पैरों पर खड़ी एक औरत को स्वीकार करने में अभी अपने समाज को समय लगे।"[7] प्रभा खेतान प्रिया के अंदर बैठे 'सुरक्षा और व्यवस्था का सम्मोहन' से उसे दूर करती हैं और उस अनंत का दर्शन कराती हैं जो भौतिक है यथार्थ है।

महिला उपन्यासकारों में चित्रा मुद्गल के यहाँ स्त्री–स्वातंत्र्य को लेकर कदाचित सर्वाधिक स्वस्थ दृष्टि देखने को मिलती है, जहाँ स्त्री को उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व की निर्मिति करते भी देखा जा सकता है और साथ ही अपनी पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था में अपना गौरवपूर्ण स्थान पाते भी। दरअसल चित्रा मुद्गल स्त्री परंपरा और आधुनिकता का एक आदर्श प्रतिरूप रचती हैं। उन्होंने अपने उपन्यास 'आवाँ' में जो स्त्री–प्रश्न उठाया है, उसमें पश्चिम से आए नारीवाद को जस का तस स्वीकारने का तीव्र विरोध है। इन विचारों के वाहक हैं उपन्यास की नमिता और गौतमी। उनके शब्द हैं– "नारीवाद की आड़ में उद्दंडताओं को जीने वाली शिक्षित स्त्रियों को देश की खालिस देशी औरत से प्रेरणा लेकर कौटुंबिक जीवन के क्षरण को रोकने की चेष्टा करनी चाहिए।"[8] इसी विचार–सूत्र की पीठिका पर 'आवाँ' का सारा स्त्री विमर्श खड़ा है। स्त्री–पुरुष की परस्पर पूरक भूमिका को स्वीकार करते हुए चित्रा मुद्गल पुरुष की कूपमंडूकता और स्त्री को दोयम बनाने की पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था को खुलकर चुनौती देती हैं। सुनंदा की मय्यत को कंधा देने आई नमिता पांडे को जब पाटिल मना करता है "ये आप क्या कर रही हैं ? आपको मालूम नहीं, औरत के लिए मय्यत को कंधा देना शास्त्र–सम्मत

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCAI
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

नहीं?" नमिता उसे कठोर–सा उत्तर देते हुए सारी औरतों को श्मशान चलने को प्रेरित करती है, "कूपमंडूक पुरुषों से हमें सीखना होगा कि क्या शास्त्र है, क्या नहीं? निर्दोष स्त्री की हत्या करना शास्त्र सम्मत है, पाटिल? नहीं, तो पूछो अपने हृदय से कि क्यों हममें से किसी ने उसके प्राण ले लिए? मैं कंधा किसी औरत की मय्यत को नहीं दे रही, उस स्त्री–चेतना को दे रही हूँ जिसका गला घोंटने की कोशिश हत्या के बहाने हुई है। मैं हर जाति, धर्म, वर्ण की स्त्रियों का आवाहन करती हूँ कि वे सबकी सब श्मशान चलें और बारी–बारी से सुनंदा की मय्यत को कंधा दें।"[9] उपन्यास की दूसरी स्त्री पात्र गौतमी नए भारत की स्त्री है, उसे अपनी शक्ति और क्षमता का पूरा बोध है। उसे यह अच्छी तरह ज्ञात है कि वह आधुनिक युग की ऐसी नारी है जिसे अपने अधिकारों और कर्तव्यों का पूरी तरह बोध है। वह हिंदुस्तान की उस औरत की प्रतीक अपने को मानती है जो धीरे–धीरे जन्मने की प्रक्रिया में है, "मेरे जींस जाँचे–परखे जाएँ तो औरों से भिन्न निकले। स्वाभाविक नहीं? मटका किंग की औलाद हूँ। लेकिन मुझे लगता है, वैज्ञानिक शोध के अंतर्सत्यों से परे कि मुझमें आज की औरत के जींस हैं जो अब तक जन्मी नहीं थी..... जन्मने के लिए छटपटा रही थी।"[10] वस्तुतः नारीत्व की यह नई सोच, वैचारिक दृष्टि से पूरी तरह बदली हुई, नई जन्मती यह स्त्री नई स्त्री–चेतना को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है, उपन्यास से स्त्री विमर्श की यह एक सार्थक उपलब्धि है।

स्त्री–लेखन के लिए अनामिका का नाम साहित्य–जगत में चर्चित है। न केवल अपने उपन्यासों में बल्कि अपनी अन्य किताबों में भी उन्होंने स्त्री–पक्ष पर काफी कुछ लिखा है। अंग्रेजी भाषा और उसके साहित्य से अनामिका का गहरा परिचय होने के साथ–साथ संस्कृत साहित्य, वैदिक साहित्य के अच्छे ज्ञान ने उनके स्त्री–विमर्श को एक ठोस वैचारिक आधार प्रदान किया है। उन्होंने पूर्व और पश्चिम दोनों परंपराओं में स्त्री की स्थिति का गहन अध्ययन किया है। यह सब उनके उपन्यासों में वैचारिक पूँजी के रूप में उपस्थित होते हैं। 'तिनका तिनके पास' इसका सबल प्रमाण है।

हिंदी उपन्यास में स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्मिता की तलाश दो रूपों में प्राप्त होती है। एक दृष्टि तो वह है जहाँ स्त्रीवादी आंदोलनों की प्रथम लहर के रूप में स्त्री को पुरुष के प्रति विद्रोहिणी बनाकर उसके प्रतिपक्ष के रूप में खड़ा कर दिया गया। पुरुष के प्रति अपार घृणा और विद्रोह का एक विस्फोट–सा दिखाई देता है। दूसरी दृष्टि वह है जहाँ बिना किसी मुखर स्त्रीवादी सोच और घोषित नारों के स्त्री–पीड़ा का सूक्ष्म चित्रण किया गया है, साथ ही यह विचार भी प्रस्तुत हुआ है कि पुरुष के विरुद्ध जाकर ही स्त्री–स्वातंत्र्य की अवधारणा पूरी नहीं होती, अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों की माँग करते हुए पुरुष के साथ समादृत समंजन किस प्रकार स्थापित किया जा सकता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि दूसरा मार्ग ही श्रेयस्कर और प्रीतिकर है, इसलिए वे ही उपन्यास अधिक लोकप्रिय हुए और महत्ता प्राप्त कर सके जिनमें स्त्री और पुरुष दोनों को समाज, परिवार की आवश्यक इकाई मानकर उनमें समंजन स्थापित करने की चेष्टा की गई।

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पुष्पाल सिंह, भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012, नई दिल्ली, पृष्ठ 209
2. वही, पृष्ठ 209
3. सुरेंद्र वर्मा, मुझे चाँद चाहिए, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 123
4. वही, पृष्ठ 119–120
5. प्रभा खेतान, आओ पेपे घर चलें
6. वही, पृष्ठ 35
7. वही, पृष्ठ 78
8. चित्रा मुद्गल, आवां, सामायिक प्रकाशन 1999, नई दिल्ली, पृष्ठ 4
9. वही, पृष्ठ 153
10. वही, पृष्ठ 374

❑❑❑

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

इतिहास, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका

A Peer-Reviewed and Listed in UGC Care List

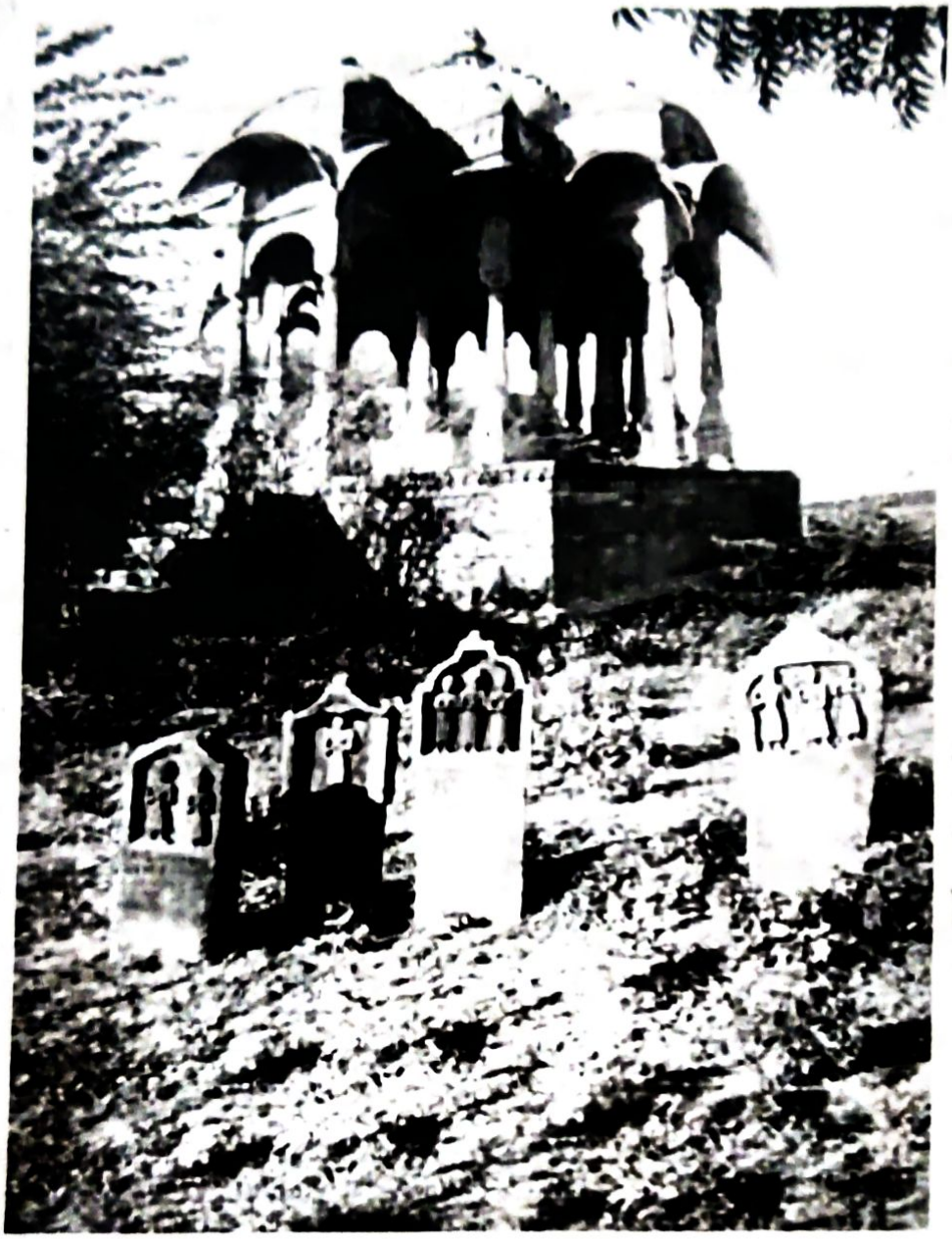

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान; कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

वर्ष :11 • अंक 10 No. 02

October 2021

A Peer-Reviewed and Listed in UGC CARE List

ISSN 2278-4632

संपादक

डॉ. बी. एल. भादाणी

प्रोफेसर

प्रबंध संपादक

श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

INDEX

S.No.	Title	Page No.
1	A CASE STUDY ON RURAL INDEBTEDNESS IN KARIMNAGAR DISTRICT OF TELANGANA STATE	1
2	'अकाल और उसके बाद' : प्रयोगधर्मिता एवं संरचना की नज़र में	6
3	*PROMOTERS' EQUITY SHARE PLEDGING, CASH CONVERSION, MARKET CAPITALIZATION, FIRM PERFORMANCE AND FINANCIAL SOLVENCY POSITION: A CASE STUDY OF RELIANCE ADAG (ANIL DHIRUBHAI AMBANI GROUP) GROUP OF COMPANIES LISTED ON NATIONAL STOCK EXCHANGE OF INDIA*	9
4	INTERNET RESOURCES IN MODERN ACADEMIC LIBRARIES AND ATTITUDES OF LIBRARY PROFESSIONALS	34
5	PHARMACOGNOSTICAL AND PHYTOCHEMICAL SCREENING FOR ANTI DIABETIC ACTIVITY OFHERBAL PLANT EXTRACTS	40
6	ANTIHYPERLIPIDEMIC ACTIVITY OF AQUEOUS EXTRACT OF LAGERSTROEMIA MICROCARPA WIGHT (BARK) ON FEMALE SPRAGUE DAWLEY RAT MODEL	44
7	SCREENING OF PECTIN COATED NANO-LIPID-CONSTRUCT OF PACLITAXEL FOR MANAGEMENT OF LIVER CANCER	58
8	खगेन्द्र ठाकुर के वैचारिक लेखों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	64
9	الأفكار الايجابية فى قصص القاصة العراقية وفاء عبد الرزاق	70
10	ECONOMIC AND HEALTH DAMAGES FROM INADEQUATE SANITATION: EXPERIENCE FROM RURAL VILLAGES	73
11	A STUDY OF PRIORITY SECTOR LENDING BY PUBLIC SECTOR BANKS – A TOOL FOR SOCIO-ECONOMIC DEVELOPMENT	83
12	DIVINE REVELATIONS IN THE VERSES OF WALT WHITMAN AND KABIR	87
13	AN ANALYTICAL STUDY ON EMOTIONAL MATURITY OF B-SCHOOL STUDENTS IN BANGALORE DISTRICT	94
14	'फाँस' : किसान–पारिवार की मार्मिक मनःस्थिति	101
15	मधुकर सिंह की कहानियों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ	105
16	A COMPREHENSIVE STUDY OF POSSIBILISM THOUGHTS AND ITS IMPACT ON REVIVALS OF GEOGRAPHICAL STUDY	109
17	"शारीरिक शिक्षा में सामाजिक सिद्धांतों और सामाजिक संस्थाओं के योगदान का अध्ययन"	114

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.02 October 2021

'फाँस' : किसान–पारिवार की मार्मिक मनःस्थिति

डॉ. रंजय कुमार सिंह परीक्षा नियंत्रक उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई

सार–संक्षेप– हिंदी कथा साहित्य में किसान को हमेशा से विशेष स्थान दिया गया है ,इसके बड़ा कारण यह है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है । कथा सम्राट प्रेमचंद ने किसानों की मार्मिक और दयनीय दशा का चित्रण कर हिन्दी जगत के सामने लाने का कार्य किया । हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद की परम्परा का निर्बहन आज भी देखने को मिलता है । संजीव द्वारा रचित उपन्यास इसी परम्परा में आने वाला प्रमुख उपन्यास है । फाँस उपन्यास में आपने किसान परिवार की मार्मिक दशा का चित्रण किया है , आज आजादी के इतने वर्षों के बाद भी हमारे देश में किसानों की दशा में वह सुधार नहीं हो पाया है ,जिसकी अपेक्षा थी । किसान अब भी शोषण का शिकार है , शोषण के अवयव भले बदल गये हों लेकिन उनकी दशा मार्मिक ही है । फाँस उपन्यास के माध्यम से संजीव ने किसानों की मार्मिक दशा का चित्रण किया है ।

बीज शब्द – मार्मिक ,परिवार , त्रासदी , मनःस्थिति , श्रम।

संजीव का उपन्यास 'फांस' किसान जीवन और किसानी से जुड़ी समस्याओं का ज्वलंत दस्तावेज है। 'फांस' को पढ़ना आज के समय में देश की सबसे अवसादपूर्ण घटना से, हादसों की एक लंबी श्रृंखला से गुजरना, उससे रूबरू होना है। यह उपन्यास एक ऐसे विषय को हमारे सामने ला खड़ा करता है जिससे समाज लगातार मुंह छुपाए आया है और वह लगातार किसी प्रेतछाया–सा हमारे अतीत–वर्तमान और भविष्य पर मंडराता रहा है। इधर कुछ वर्षों में हिन्दी ही क्या अन्य भारतीय भाषाओं में भी इस तरह के शोधपरक यथार्थवादी उपन्यास कम ही पढ़ने में आए हैं। कथाकार संजीव हिन्दी साहित्य में पहले से ही अपने शोधपरक और वैज्ञानिक दृष्टिसम्पन्न लेखन के लिए जाने जाते हैं। इस उपन्यास की रचना–प्रकिया के दौरान भी वे खुद प्रभावित क्षेत्रों में गए, वहां रुके और कई ऐसे परिवारों से मिले जिनके परिजन ने आत्महत्या की थी।

'फांस' उपन्यास का कथानक सिर्फ वनगांव और मेण्डालेखा की तुलना से नहीं बना है। वनगांव के छोटे किसान शिवशंकर उर्फ शिबु–शुकुन, नागौरा गांव के सुनील और विजयेन्द्र या अमला के सुरेश वानखड़े और आशाताई या अमरावती के माधव–रोहिणी का परिवार– इन सारे परिवारों में आपसी भाईचारे की भावना बनी हुई है। सभी किसान हैं अतः सभी दुखी हैं पर एक दूसरे के सुख–दुख में हर पल सहभागी बने रहते हैं। किसानों की यही भाईचारे की संस्कृति हिन्दुस्तान की धरोहर रही है।

'फांस' उपन्यास के केन्द्र में शिबु (शिवशंकर), शकुल (शकुन्तला), छोटी (कलावती), बड़ी (सरस्वती) के परिवार की कथा है। मुख्य कथा के अंतर्गत छोटी और अशोक की प्रेमकथा है और छोटी–सुभाष की गृहस्थ–कथा है। गौण या पूरक कथाओं में सुरेश और आशा, शुभा, सुनील, मोहनदास बाघमारे विट्ठल शंकर राव जैसे असंख्य आत्महत्याग्रस्त किसानों की शोककथाएं है। वनगांव के छोटे किसान शिवशंकर उर्फ शिबु–शुकुन, नागौरा गांव के सुनील और विजयेन्द्र या अमला के सुरेश वानखड़े और आशाताई या अमरावती के माधव–रोहिणी का परिवार– इन सारे परिवारों में आपसी भाईचारे की भावना बनी हुई है। सभी किसान हैं अतः सभी दुखी हैं पर एक दूसरे के सुख–दुख में हर पल सहभागी बने रहते हैं। किसानों की यही भाईचारे की संस्कृति हिन्दुस्तान की धरोहर रही है।

यह उपन्यास शुरू से लेकर अंत तक हमें किसान जीवन की दुश्वारियों से, त्रासदियों से, विद्रूपताओं और विडंबनाओं से रूबरू कराता है। 'इतनी मुश्किल है तो खेती छोड़ क्यों नहीं देते' जैसे जुमले के जबाब में यह बताता है कि आज भी भारत में खेती–किसानी मात्र एक जीविका का साधन नहीं है बल्कि एक जीवन पद्धति है जिससे अधिसंख्य किसान चाहकर भी मुह नहीं मोड़ सकते। यह किसान परिवार का बच्चा–बच्चा जानता है। कथा की शुरूआत में ही छोटी शिबू को आगाह करती है, "शेती (खेती) कोई धंधा नहीं, बल्कि एक लाइफ स्टाइल है – जीने का तरीका, जिसे किसान अन्य किसी भी धन्धे के चलते नहीं छोड़ सकता। सो तुम बाबा लाख कहो की शेती छोड़ दोगे नहीं छोड़ सकते। किसानी तुम्हारे खून में है।"[1]

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCAT
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Copyright @ 2021 Author

Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.02 October 2021

संजीव इस उपन्यास में किसान परिवार की एक मार्मिक मनःस्थिति को उभारते हैं, "इस बार पूजा करते समय सिर को माटी से कई बार लगाया था शिबु ने। बल्कि सगुन के लिए शकुन के गालों पर भी छिटीन–सा जड़ दिया, कुलदेवी से मिन्नतें करते समय कण्ठ भारी हो गए, 'अब इम्तहान मत लेना देवी,। मर जाएंगे हम। शकुन के कान की बाली बेचकर बीज खरीदा है। नारियल फोड़ा, जैकारा हुआ और कापूस का बीज लेकर उतर गए घर के चारो सदस्य, 'पहले शिबु, फिर बड़ी, फिर छोटी और अंत में शकुन। यह तीसरी बुआई है। घुम रही बदरकट्टू धूप। घुनघुना रही है पूरी देह। हाथ से लेकर बीजो को धमका रही है छोटी। दो–दो बार धोखा दे चुका है। इस बार बहना नहीं, बिलाना नहीं, सड़ना नहीं, सूखना नहीं, दगा मत देना। बरोबर जम सिल। समझाता ? बहोत मारूँगी, हां! इस मीठी धमकी के बाद उसने बीजों को फिर चूमा और रोप दिया काली माटी में।"[2] इस चित्रण में एक किसान परिवार का चित्र बनता और वह आत्मीय के साथ दयनीय अधिक है। बीजों के प्रति जो ममता और विश्वास है, कुलदेवी से इस बीज के नष्ट न होने देने की प्रार्थना है, उसमें पूरे परिवार की बेबसी स्वतः स्पष्ट हो जाती है। परिवार में छोटी सबसे अधिक क्रांतिकारी है, पढ़ी–लिखी है। वहीं बीजों से बहन का रिश्ता जोड़कर अपनी स्थिति भी बता रही है और ममतालु होकर चेतावनी भी दे रही है, जैसे छोटे बच्चों को कहा जाता है कि यदि यह करोगे तो मारेंगे। छोटी जो अपने घर में सबसे छोटी है, वह बीजों को छोटी बहन मानकर उनसे परिवार को बचाए रखने की मार्मिक धमकी देती है। इस धमकी में अपनापन अधिक है। इस प्रकार के रिश्ते जीवन और मृत्यु के बीच झूलते किसान परिवारों में ही संभव है। किसान का रिश्ता पशुओं से लेकर बीजों तक से जिस प्रकार बनता है, वह किसान जीवन के बहुत छोटे–छोटे संघर्षों को जाने बिना नहीं बन सकता।

संजीव स्वयं एक गरीब किसान परिवार से आते हैं। अतः वे जानते हैं कि जो किसान अपनी पत्नी की बाली बेचकर तीसरी बार बीज बो रहा है, उसके लिए बीज का क्या महत्य है ? जैसे इस बार के बीज उनके लिए अंतिम आशा की तरह है, भयंकर गरीबी में घर का सब कुछ जाता रहा लेकिन यह अंतिम विश्वास है, जो उन्हें जीवित रखे हुए है। इस विश्वास की रक्षा करने की प्रार्थना छोटी अपने हाथों के बीजों से करती है जो उसकी माँ के कान की बालियों को बेचकर खरीदे गए हैं। बेटियां माँ के दुख को अच्छी तरह जानती है, गरीब किसान की पत्नी के पास अब बालियों के सिवाय बचा ही क्या था, जिन्हें बेचकर एक और प्रयास करने की हिम्मत होती। अंतिम तो ये कानों की बालियां ही थी, जिनसे ये बीज खरीदे गए।

किसान के पूरे परिवार के श्रम का मूल्य देखा जाए तो उसे फसल से मिलता क्या है ? चारो ओर से घिरे शिबु ने अपने ही बनवाए कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर ली। शकुन की पड़ोसन शुभा कहती है, "पड़ोसी होने के नाते मैं जानती हूँ इस परिवार को। इसी कुएँ में सरकारी कर्ज के चलते तीन साल से इस परिवार ने त्योहार के दिन भी कभी पूड़ी–पकवान नहीं बनते देखा। पूड़ी–पकवान तो दूर, भर पेट कभी दोनों जून जेवण भी नसीब हुआ हो –मुझे संदेह है।"[3] रात–दिन खेत में खपने वाले किसान परिवार की यह स्थिति है।

खेती जो किसान के जीवन का आधार है, यदि उसमें कोई फायदा नहीं, गुजारा भी हो सकना मुश्किल है तो ऐसी खेती का क्या लाभ ? यह बड़ा प्रश्न है जो शिबु अपनी पत्नी शकुन से करता है। शकुन को भी कोई रास्ता नहीं दिखाई देता, इसलिए वह बौद्ध धर्म को स्वीकार करने के लिए कहती है, "हमने लाख समझाया, बौद्ध हो जाओ, बौद्ध हो जाओं। महार सारे ही बौद्ध हो गए, बाकी हमारे जैसे ही मुक्त नहीं हो पाए अभी तक उस मोह से, 'जाएं, न जाएं। एक कीचड़ भरे गड्ढे से बड़े तालाब में आ जाने जैसा, जैसा चाहो मुलगा पाओ, जैसा चाहो मुलगी....। मैं पूछती हूँ तुम इन हिन्दुओं के पास जाते ही क्यों हो?...तुम चुन–चुनकर हिन्दुओं के पास ही जाते हो। हिन्दु ठहरे न! तुम्हारा जाति, मोह तो तुम्हें खींचेगा ही। तुम कैसे भूल जाते हो कि हमारे पुरखे कभी पीछे झाडू बांधकर और हाथ में डब्बा लेकर चलते थे, ताकि पीछे की अपनी छुई जमीन अपवित्र न हो जाए।"[4] यह पति–पत्नी का आत्मीय संवाद है, जिसमें जीवन के अनुभवों की कड़वाहट साफ दिखाई दे रही है। शिबु के पास कोई उत्तर नहीं है, वह निरुत्तर है बल्कि विफलताओं ने उसे तपते यथार्थ से परिचित करा दिया है। इसलिए पत्नी के तर्कों के सामने पराजित होकर वह घोषणा करता है, "आज से मैने भी मंदिर को छोड़ दिया।" पर शाश्वत प्रश्न फिर सामने है कि क्या मंदिर जाना छोड़ने से उसकी समस्याओं का समाधान हो जाएगा ? यदि समाधान इतना सरल होता तो शिबु को अपने द्वारा निर्मित कुएं में कूदकर आत्महत्या क्यों करनी पड़ती ?

उपन्यास में वनगांव के छोटे किसान शिवशंकर उर्फ शिबु, उसकी पत्नी और बेटियों की कथा के समानांतर दूसरे गांवों के कृषक परिवारों और आंदोलनकारी किसानों की कथा भी साथ–साथ चलती है। वनगांव के

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Gnanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.02 October 2021

सिंधु–शकुन्तला का परिवार हो या नागौरा के बाप–बेटे सुनील–विजयेन्द्र का परिवार या अमला के सुरेश बानखेड़े और आशा का परिवार या अमरावती के माधव–रोहिणी का परिवार, इन सारे किसान परिवारों में कोई न कोई आत्महत्या करता है। निर्गुणी गांव के मोहन बाघमारे और सिंधु ताई दम्पति की भी बेहद त्रासद दास्तान है।

शकुन के परिवार की तरह उसकी सहेली आशा का परिवार है। उसकी भी दो बेटियां है – अर्जता और एलौरा। आशा का पति शराबी है। आशा एक संवेदनशील पात्र है। उसके पति का घर से कुछ भी लेना देना नहीं है। आशा खेती के लिए कर्ज लेती है, खेती करती है लेकिन खेती तबाह हो जाती है। बार–बार ऐसा होने से उसके ऊपर साहूकार का दो–तीन लाख रुपया कर्ज हो जाता है। मुआवजा सरकार से मिलेगा इसकी आशा है लेकिन नहीं मिलता है। घर की जिम्मेदारी और कर्ज का दबाव है। उसका पति कपास बेचने जाता है और बिना बेचे ही वह वापस लौट आता है। उस रात खूब बारिश होने से कपास गीली होकर खराब हो जाती है जिसका सदमा आशा बर्दाश्त नहीं कर पाती और आत्महत्या कर लेती है। घर में कफन के लिए भी पैसे नहीं है। उसे वहीं बारिश से गीली हुआ कपास कफन के रूप में ओढ़ाया जाता है, "..लाश ताटी पर पर रखने से पहले और बाद में कफन चाहिए....अरे ताटी पर इलौरा ने कापूस, वहीं भीगा कापूस बिछा दिया।" गांव के किसी व्यक्ति ने रोका कि ऐसा न करो तब अजन्ता ने कहा, "यही कफन है !"..."यही कापूस बन गया कफन हमारे लिए....।"[5] उसे शकुन द्वारा दी गई हरे रंग की साड़ी से ढंक दिया जाता है। जॉच अधिकारी उसकी आत्महत्या को पात्र घोषित नहीं करना चाहते, इसलिए उसका या उसके पति का किसी गैर से संबंध खोजते हैं, आपसी झगड़े की तलाश करते हैं। ये वहीं अधिकारी हैं जिन्होंने अनशन तोड़वाया था। इससे पता चलता है कि सरकार किसानी और किसान जीवन के प्रति कितनी उदासीन है। इसलिए इस उपन्यास में एक गरीब और बेबस किसान और उसके पूरे परिवार की जो जिजीविषा इस चित्रण में देखने को मिलता है, वह अविस्मरणीय है।

उपन्यास का पात्र 'नाना' किसान जीवन का एक और जाना–पहचाना रूप है। उसकी पत्नी उसे छोड़ देती है। वह बैलगाड़ी चलाता है। उसने भी कर्ज लिया है, बैंक ऑफिसर उसकी कुर्की करता है। घर में कुछ है ही नहीं, क्या ले जाए कि बैंक का कर्ज पटे। बैंक ऑफिसर सोचता है यह आदमी जीता कैसे है, खाता क्या है ? लेकिन नाना जीवट प्राणी है जो जी तो रहा है अभाव में फिर भी वह उन लाखों किसानों का प्रतीक है जो आधा पेट खाकर जी रहे हैं।

उपन्यासकार ने महाराष्ट्र के विदर्भ अंचल के किसानों की दुर्दशा को बताने के लिए कुछ परिवारों को चुना है। प्रायः ऐसे परिवार जिनका कोई न कोई सदस्य आत्महत्या का शिकार हुआ है। ऐसा ही एक परिवार है नागौर गांव के सुनील का। सुनील यानी शिबु के रिश्ते से भाई और छोटी और सरस्वती का काका। पच्चीस एकड़ जमीन का मालिक और बहुत ही प्रभावशाली व्यक्तित्व। हमेशा सबको हिदायत देता कर्ज न लेने के लिए, "खबरदार जो किसी ने कर्ज लिया, खबरदार जो किसी ने आत्महत्या के लिए कदम बाढ़ाये। कोई खुद–ब–खुद यमराज के पास नहीं जाएगा...।"[6] परंतु सबको हिदायत देने वाला खुद सुनील अपने बेटे विजयेन्द्र को अमेरिका भेजने के लिए, स्वयं के ट्रैक्टर का मालिक बनने के लिए कर्ज के चक्रव्यूह में फँस जाता है। भयंकर सूखे के कारण, भूजल स्तर से नीचे चले जाने से खेत के बगल वाले नाले और पंप दो–दो कुंओं के पूरी तरह सूख जाने के कारण अपने पच्चीस एकड़ ही नहीं, बल्कि अपने भाई पाटिल के पच्चीस एकड़ खेत यानी पूरे पचास एकड़ खेत में लगाए गए विभिन्न तरह के फलों के बाग और अन्य फसलों के सूख जाने से, बी.टी. बीजों के बाझ बन जाने से असहय होकर आत्महत्या कर लेता है।

मोहनदास बाघमारे की कथा इसी में से एक है। जिस मोहनदास वाघमारे ने कभी किसान आंदोलन में सकिय रूप से सहभाग लिया था वह आज खुद बैल बनने को मजबूर है। कभी अच्छा किसान कहलाने वाला और अच्छी फसल उत्पादित करने वाला मोहनदास वाघमारे अब बीपीएल के कार्ड के गेहूँ पर जिंदगी जीने को लाचार है। उसने "जानबूझकर बेटी विद्या का ब्याह किसान से नहीं, मजदूर परिवार में किया....पांच एकड़ खेत दोनों बेटों की पढ़ाई और बेटी की शादी में होम हो गए। बड़का एम.ए., पीएच.डी करके बैठ गया। छोटका मुम्बई जाकर फिल्म में अपनी किस्मत आजमाना चाह रहा था। दोनों को दो–दो लाख चाहिए थे। अन्धेर है। सारी पढ़ाई पढ़ने के बाद भी घूस दो तो नौकरी लगे।"[7] बेटे अपने मां–बाप की मजबूरियों को नहीं समझते। मां सिन्धुताई ताने मारने बैठ जाती, "पढ़े–लिखे लड़के खेती करना अपमान समझते हैं। शेत से गए, बेटों से गए, आमदनी से गए, उम्र से गए। और बेटे सूदखोरों की तरह सिर पर सवार।"[8]

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.02 October 2021

उपन्यास में चित्रित सभी पात्र– नाना, मोहनदास, सदा आदि सभी किसानों के परिवार इसी अवस्था में जी रहे है। ये लोग ऐसे समय में जी रहे है, जहां किसानी का मतलब सिर्फ और सिर्फ मौत है।

संदर्भ ग्रंथ

[1] कौस, संजीव, पृ. 17–18
[2] कौस, संजीव, पृ. 99
[3] कौस, संजीव, पृ. 107
[4] कौस, संजीव, पृ. 90
[5] कौस, संजीव, पृ. 145
[6] कौस, संजीव, पृ. 25
[7] कौस, संजीव, पृ. 35
[8] कौस, संजीव, पृ. 39

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Roac
Aurangabad (Bihar) 824101

Copyright @ 2021 Author

संस्कृति का शिक्षा से परस्पर संबंध व प्रभाव

बिरेन्द्र कुमार यादव

व्याख्याता, बी.एड. विभाग

विवेकानंद वी.आई.पी.ऍफ़ इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन

" जीवात्मा परलोक में अपनी शिक्षा और संस्कृति के अतिरिक्त और कुछ अपने साथ नहीं ले जाती। परलोक की यात्रा के आरंभ में, उस व्यक्ति के लिए जो अभी अभी मरा हैं, उसकी शिक्षा और संस्कृति या तो सर्वाधिक सहायक हो सकती हैं, या फिर सबसे बड़ा बोझ बन सकती है। "

- प्लेटो

प्रस्तावना :

क्या संस्कृति के बिना हमारे दैनिक जीवन की कल्पना करना संभव हैं? इस प्रश्न का उतार देने के लिए यह याद रखना पर्याप्त हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं, और सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी उन मुख्य मुद्दों में से एक है जो उन्हें दुनिया के अन्य जानवरों से अलग करती हैं। अगर लॉग अपने जीवन में संस्कृति के महत्व को भूल जाते हैं, तो वे अपने हितों, मांगों और प्राथमिकताओं के साथ एक अलग समूह कहलाने का मौका खो सकते हैं। ऐसे कई पहलू हैं जो इस जीवन को केवल एक शुद्ध मानवीय जीवन बनाते हैं, और ऐसे पहलुओ में से एक की उपस्थिति अप्रत्याशित और आमतौर पर निराशाजनक परिणामों को जन्म दे सकती है।

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम हैं, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती हैं। किसी वास्तु को यहाँ तक संस्कारित और परिष्कृत करना कि इसका अंतिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान प्राप्त कर सके। यह ठीक उसी तरह हैं जैसे संस्कृत भाषा का 'संस्कृति'।

परिचय :

"संस्कृति संस्कार से बनती है और सभ्यता नागरिकता का ही दूसरा स्वरूप है"

संस्कृति एक मानव मनस द्वारा प्राप्त एक जटिल विचार है, अवधारणा है। इसको परिभाषित करना कठिन है। यह उस हाथी के समान है जिसे पहचाना जा सकता है, परंतु उसे परिभाषित नहीं किया जा सकता है। 'संस्कृति' शब्द 'संस्कार' शब्द का वंशज है जिसका अभिप्राय शुद्ध करने या सुधारने से है। संस्कृति सीखे हुए व्यवहारों तथा उनके परिणामों का वह समग्र रूप है, जिसके निर्माणकारी तत्व किसी विशिष्ठ समाज के सदस्यों द्वारा प्रयुक्त और संचारित होते हैं। संस्कृति शब्द मनुष्य की सहज प्रवृति, नैसर्गिक शक्तियों और परिष्कार का द्योतक हैं। किसी देश की संस्कृति अपने को विचार, धर्म, दर्शन काव्य संगीत, नृत्य कला आदि के रूप में अभिव्यक्त करती हैं। मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग करके इन क्षेत्रों में जो सृजन करता है और अपने सामूहिक जीवन को हितकर तथा सुखी बनाने हेतु जिन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक प्रथाओं को विकसित करता है उन सब का समविष ही हम 'संस्कृति' में पाते हैं।

"संस्कृति नींव है, प्रारंभिक वस्तु है, तुम्हारे सूक्ष्मातिसूक्ष्म व्यवहारों से इसे प्रकट होना चाहिए।"

'क्रोबेर तथा क्यूलकोहन' ने संस्कृति का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि यह वह व्यापक अभिव्यक्ति है जिसे मानव मन ने संपादित किया है इनमे अग्र समाहित हैं-

- ❖ महान व्यक्तियों के आविष्कार (Inventions of great men)
- ❖ कला की महान कृतियाँ (Master work of art)
- ❖ मानव इतिहास की केन्द्रीय घटनाएं (pivotal events of human history)
- ❖ गुफा के मानव की आदिकालिक भाषा (primordial speech of cavemen)

संस्कृति की सामग्री से ही शिक्षा का प्रत्यक्ष रूप से निर्माण होता है और यही सामग्री, शिक्षा को न केवल उसके स्वयं के उपकरण, वरन उसके अस्तित्व का कारण भी प्रदान करती हैं।

संस्कृति का शिक्षा से परस्पर संबंध :

"शिक्षा सांस्कृतिक सातत्य की आवश्यक शर्त हैं। यह सांस्कृतिक परिवर्तन का एक प्रमुख साधन भी है।"

- महात्मा गांधी

संस्कृति की सामग्री से ही शिक्षा का प्रत्यक्ष रूप से निर्माण होता है और यही सामग्री शिक्षा को न केवल उसके स्वयं के उपकरण वरन उसके अस्तित्व का कारण भी प्रदान करती हैं। शिक्षा अपने रूप-रेखा का निर्माण समाज की संस्कृति के अनुसार ही करती है और संस्कृति का निर्माण समाज के उपकरणों, विचार, और मूल्यों के आधार पर ही होता हैं। यदि किसी समाज की संस्कृति में आध्यात्मिकता का प्रमुख स्थान है तो वहाँ की शिक्षा व्यवस्था में नैतिकता चारित्रिक और आध्यात्मिकता मूल्यों पर विशेष बल दिया हैं, इसके साथ साथ किसी समाज की संस्कृति का संरक्षण समाज के माध्यम से ही होता हैं।

"पुस्तकें ही वे साधन हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पल निर्मित कर सकते हैं।"

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

हमारे देश के सभी वर्गों का पुराना इतिहास इस बात का साक्षी हैं कि प्राचीन और मध्य युगों में गुरु और शिष्य के संबंध एक दूसरे हेतु आदर सम्मान तथा सहायता पर आधारित थे। गुरु अपने शिष्य को पुत्रवत प्यार करता रहा हैं और शिष्यगन अपने गुरु में अगाध भक्ति रखते थे। वर्तमान में गुरु और शिष्यों के मध्य ये सब भाव अब लुप्त से हो गए हैं। अतः आज

हमारी शिक्षा- व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के क्रम में गुरु शिष्य के आपसी संबंध को हम प्राचीन आदर्शों के अनुरूप बनाना चाहते हैं। हाँ यह ठीक है कि आज के गुरु और शिष्य में जो आचार- व्यवहार की कटुता प्रतीत होती हैं उसके अनेक कारण हैं, परंतु हमें यह मनना पड़ेगा कि इस संबंध को हम अपनी पुरानी संस्कृति के आदर्शों पर ढालना चाहते हैं। शिक्षा और संस्कृति आपस में बड़े भारतीय और अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं संस्कृति का शिक्षा से विशेष संबंध को किसी समाज का सांस्कृतिक प्रारूप ही उसके शैक्षणिक प्रारूप को आकार देता हैं। शिक्षा सुसंस्कृत व्यक्ति को जनम देती हैं और सुसंस्कृत व्यक्तियों द्वारा ही उसका पालन- पोषण होता हैं।

'भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 के तहत सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकारों का प्रावधान है। ये अधिकार हर नागरिक को अपनी संस्कृति को संरक्षित रखने और शिक्षा पाने का अधिकार देते हैं।'

- **अनुच्छेद 29 अल्पसंख्यक- वर्गों के हितों का संरक्षण**
  - भारत के राज्यक्षेत्र या उसके किसी भाग के निवासी नागरिकों के किसी अनुभाग को, जिसकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति हैं, उसे बनाय रखने का अधिकार होगा।
  - राज्य द्वारा पोषित या राज्य-निधी से सहायता पाने वाली किसी शिक्षा संस्था में प्रवेश से किसी भी नागरिक को केवल धर्म, मूलवंश, जाति, भाषा या इनमें से किसी के आधार पर वंचित नहीं किया जाएगा।
- **अनुच्छेद 30 शिक्षा संस्थाओ की स्थापना और प्रशासन करने का अल्पसंख्यक वर्गों का अधिकार**
  - धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गों को अपनी रुचि की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन का अधिकार होगा।

- शिक्षा संस्थाओं को सहायता देने में राज्य किसी शिक्षा संस्था के विरुद्ध इस आधार पर विभेद नहीं करेगा कि वह धर्म या भाषा पर आधारित किसी अल्पसंख्यक वर्ग के प्रबंध में हैं।

वर्तमान में संस्कृति का शिक्षा पर प्रभाव :

एक समय था जब लोग अच्छी नौकरी और अच्छी शिक्षा पाने के लिए भारत से पलायन कर रहे थे। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव इतना अधिक था कि लोग अपने बच्चों को शिक्षा के लिए विदेश भेजते थे। हाल के वर्षों में एक सर्वेक्षण किया गया और उस सर्वेक्षण में पाया गया कि एनआरआई और भारतीय उपमहाद्वीप में रहने वाले लोग भारत में अच्छे बोर्डिंग स्कूलों की तलाश कर रहे है क्योंकि वे चाहते हैं कि उनके बच्चे भारत में पढे और अच्छी शिक्षा के साथ- साथ समृद्ध विरासत और संस्कृति का आनंद लें। इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण है, सैन फ्रांसिस्को में रहने वाले एक हरबंश सिंह ने अपने बच्चों को पढ़ने के लिए भारत में भेजा क्योंकि उनको लगता है की "भारत में पढ़ाई उन्हें सांस्कृतिक रूप से मजबूत और मानसिक रूप से इतना मजबूत बनाएगी कि वे नकरात्मक पश्चिमी प्रभावों का सामना कर सके, जिनसे हम परेशान हैं।"

आज के वर्तमान समय में संस्कृति- आधारित शिक्षा, शिक्षा का ऐसा तरीका है जो किसी भी संस्कृति की आत्मा में निहित सिद्धांतों, मानकों, धारणाओ और प्रथाओं पर केंद्रित है। हार्वर्ड के प्रोफेसर ब्रूनर के अनुसार, "संस्कृति कल्पना को प्रभावित करती है; जिसके हम न केवल अपने समाज का निर्माण करते हैं, बल्कि खुद का और अपनी क्षमताओं का नवीनीकरण भी करते हैं।

स्कूल में, अलग-अलग पृष्ठभूमि और संस्कृतियों के छात्र अक्सर इसलिए बाहर रह जाते है क्योंकि उन्हे ऐसा पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है जिसमें एक मजबूत सांस्कृतिक पूर्वाग्रह होता है। यह उस संस्कृति के साथ असंगत हैं जिसके वे आदि और एकीकृत है। यही कारण हैं कि ऐसा पाठ्यक्रम विकसित करना

महत्वपूर्ण हैं जो विभिन्न दृष्टिकोणों को एकीकृत करना हो। शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में बच्चे की शारीरिक, सामाजिक- सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को समायोजित किया जाना चाहिए। हमारी संस्कृति किसी भी सरिता की अजस्त्र धारा के समान बहती रहती हैं। दूसरे शब्दों में संस्कृति के विकास की धारा किसी सरिता की जल धारा के समान चलती रहती हैं, परंतु जिस प्रकार सरिता की जल धारा का प्रधान स्रोत सदा एक होता है, उसी प्रकार हमारी संस्कृति की धारा का प्राधान स्रोत हमारे प्राचीन धर्म साहित्य होते है, जैसे वेद, उपनिषद, कुरान शरीफ और बाइबिल। हमारी प्राचीन धरम साहित्य इस बात पर जोर देते है कि विद्यार्थी को किसी तत्व को हृदयंगम करने के पूर्व उसको गहन चिंतन और आत्म-विश्वास की कसौटी पर कसना चाहिए। इस प्रकार संस्कृति की कला को भी प्रभावित करती हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसकी आवश्यकताएं तथा आकांक्षाएं समाज के संस्कृति के अनुसार ही होते हैं, जिस समाज की संस्कृति का आधार आध्यात्मिक होता हैं उस समाज के शिक्षा का उद्देश्य भी बालकों की आध्यात्मिक उन्नति और विकास करना होता हैं। समाज विशेष की संस्कृति के प्रमुख तत्व समाज की शिक्षा के पाठ्यक्रम में पूर्ण रूप से समाहित होते हैं, समाज की भगौलीक स्थिति, जलवायु, वातावरण, रहन - सहन, कला , कौशल, संगीत, नृत्य, साहित्य, आदर्श-विचार, मूल्य सभी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके उनकी शिक्षकों बालकों को दी जाती हैं।

शिक्षा और संस्कृति, मानव जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू है जो एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं। शिक्षा, ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की प्रक्रिया है, जबकि संस्कृति, किसी समाज के जीवन जीने का तरीका है। दोनों ही व्यक्ति और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

"संस्कृति एक विश्वासों के समूह को समुन्नत करने की कला हैं।"

संदर्भ :

- जीवनसुत्रा, संस्कृति पर अनमोल विचार, जून 29, 2015
- शिक्षा और संस्कृति की अवधारणा, योर आर्टिकल्स लाइब्रेरी,फरवरी 2024
- द इम्पैक्ट ऑफ कल्चर अन एजुकेशन, लंदन कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीस, 4 अप्रैल, 2022
- सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, एससीआरटी, https ://scert.cg.gov. in , छतीसगढ़, रायपुर
- अरुण जैन, शिक्षा के सांस्कृतिक और सामाजिक विचार, संस्कृति और शिक्षा, पृ- 145,167,170

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
[illegible]nanikanagar vari Anandpura Road
[illegible]

Aro International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

छात्रों की क्षमताओं पर संवादात्मक मीडिया का प्रभाव

DR. RANJAY KUMAR SINGH
RESEARCH SCHOLAR OF SRI SATYA SAI UNIVERSITY
Dr. Hare Krishna
RESEARCH SUPERVISOR OF SRI SATYA SAI UNIVERSITY

सारांश

शिक्षा के प्रत्येक चरण के लिए प्रासंगिक ज्ञान के आधार के निर्माण के लिए प्रत्येक स्तर पर शिक्षक शिक्षा से संबंधित मामले की शैक्षिक और बौद्धिक समझ की एक उच्च डिग्री की आवश्यकता होती है। इसमें शिक्षा से संबंधित विषयों से संबंधित सैद्धांतिक ज्ञान का चयन शामिल है। शिक्षक शिक्षा अपनी सामग्री को दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के विषयों से प्राप्त करती है। ये विषय शिक्षक शिक्षा की बेहतर समझ और आवेदन के लिए आधार प्रदान करते हैं। दार्शनिक आधार छात्र शिक्षकों को दर्शनशास्त्र, प्राचीन और आधुनिक दार्शनिक विचारों के विभिन्न विद्यालयों, और शिक्षा पर दार्शनिक विचारकों के शैक्षिक विचारों और पाठ्यक्रम निर्माण और अनुशासन जैसे विभिन्न पहलुओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। समाजशास्त्रीय आधार छात्र शिक्षकों को एक राष्ट्र और दुनिया की शैक्षिक प्रणाली में समाज की भूमिका और उसकी गतिशीलता को समझने में मदद करता है। इसमें उन आदर्शों को समाहित किया गया है जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृश्यों को प्रभावित करते हैं। मनोवैज्ञानिक आधार छात्र शिक्षकों को छात्र के मनोवैज्ञानिक मेकअप में अंतर्दृष्टि विकसित करने में मदद करता है। यह छात्र शिक्षकों को अपने स्वयं, अपने छात्रों और सीखने की स्थितियों को समझने में सक्षम बनाता है, ताकि वे अपने छात्रों को सार्थक और प्रासंगिक शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकें।संवादात्मक मीडिया संचार का एक उभरता और शक्तिशाली माध्यम है। प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन

ANAND VIHAR INSTITUTE OF ED.
Gyanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

और सिनेमा के बाद संचार की चौथी लहर के रूप में संवादात्मक मीडिया ने दुनिया भर में लोगों की जीवन शैली में लहर ला दी है।

मुख्यशब्द—छात्र, संवादात्मक मीडिया, प्रभाव, बौद्धिक समझ, दार्शनिक विचार, शैक्षिक प्रणाली

प्रस्तावना

शिक्षा एक हीरे की तरह है जो एक अलग कोण से देखने पर एक अलग रंग में दिखाई देता है। इसे मनुष्य का तीसरा नेत्र माना जाता है, जो उसे सभी मामलों में एक अंतर्दृष्टि देता है और उसे सिखाता है कि उसे कैसे कार्य करना है। एक व्यक्ति, जिसके पास इसकी रोशनी नहीं है, को वास्तव में अंधा कहा जा सकता है। यह माँ की तरह एक व्यक्ति का पोषण करता है, उसे पिता की तरह उचित मार्ग पर ले जाता है और उसे पत्नी की तरह खुशी और आराम देता है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की संस्कृति को प्रसारित करता है। यह हमारी प्रसिद्धि को बढ़ाता है और हमें अधिक सुसंस्कृत बनाता है। यह हमारे समाज में सुधार के लिए एक रचनात्मक एजेंसी है। यह पुराने के साथ नए विचारों को जोड़ती है। यह विकास है और विकास कभी रुकता नहीं है। इसे लोकतांत्रिक शक्ति के रूप में माना जाता है। यह एक व्यक्ति के व्यवहार के संशोधन के रूप में परिभाषित किया गया है। यह वह शिक्षा है जो सभी वांछनीय गुणों और क्षमताओं को विकसित करती है और एक व्यक्ति को एक अच्छा इंसान बनाती है। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। शिक्षक को बच्चों के विकास के चरणों को जानना चाहिए। वह बच्चों में वांछित परिवर्तन लाता है। शिक्षा एक हथियार की तरह है जो दुनिया को बदल सकती है। यह एक जानबूझकर और जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। यह मानव पूंजी के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह व्यक्ति की भलाई और बेहतर जीवन यापन के अवसरों (बैटल एंड लेविस, 2002) से जुड़ा हुआ है। शिक्षा को एक प्रभावी उपकरण माना जाता है जो मनुष्य की स्थिति में वांछनीय परिवर्तन लाता है। यह नैतिक विचारों, आध्यात्मिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी

Princ...
...VEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA...
Bignanikanagar yari Anandpura Ru...
Aurangabad (Bihar) 824101

Aro International Research Journal
Peer Reviewed Multicisciplinary Indexed Journal
ISSN 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

पीढ़ी में बदल देता है। यह मानव के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किसी देश के विकास का एक स्रोत है। यह मानसिक क्षमता को व्यापक बनाता है और एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को विकसित करता है।

यह जीवन का एक तरीका प्रदान करता है और विभिन्न मूल्यों को विकसित करता है। स्कूल एक ऐसी जगह है जहां एक बच्चे का समग्र व्यक्तित्व विकसित होता है। यह एक बच्चे के व्यवहार के सभी तीन डोमेन को विकसित करता है जैसे संज्ञानात्मक, सकारात्मक और मनोविशेषज्ञ। इसे एक स्तंभ माना जाता है जो सीखने की प्रक्रिया, सामाजिक संचार, भावनाओं को संभालने आदि जैसी विभिन्न क्षमताओं को विकसित करता है। यह किसी भी बच्चे के लिए एक समाजीकरण संस्थान है। यह उन परिस्थितियों को दूर करता है जो छात्रों में दुर्भावना पैदा करती हैं और छात्रों के अवांछनीय व्यवहार को भी बदल देती हैं। यह एक ऐसी संस्था है, जो एक किशोर के व्यक्तित्व के विकास के लिए निर्देशित कुल शैक्षिक और समाजीकरण की प्रक्रिया में योगदान देती है। यह एक किशोर के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे अपना अधिकांश समय स्कूल में और घर में विद्वानों के काम में बिताते हैं। छात्रों के अवांछनीय व्यवहार का पता लगाने और उन्हें ठीक करने के लिए स्कूल की जिम्मेदारियां हैं।

आत्म–सम्मान शब्द ग्रीक शब्द से आया है जिसका अर्थ है "आत्म के लिए श्रद्धा आत्म–सम्मान का आत्म–मूल्य उन मूल्यों, विश्वासों और दृष्टिकोणों से संबंधित है जो हम अपने बारे में रखते हैं। आत्मसम्मान के सम्मान का हिस्सा मूल्य और मूल्य का वर्णन करता है। यह हमारे लिए स्वीकृति है कि हम अपने जीवन में किसी भी समय किसके लिए और क्या कर रहे हैं। यह एक मूल्य का आकलन है। यह मानव व्यवहार के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है जैसे कि आकांक्षा, सीखने के स्तर। इसे प्रमुख कारकों में से एक माना जाता है जो स्कूलों में सफलता और विफलता को निर्धारित करता है। यह दो अलग–अलग आयामों, क्षमता और मूल्य से बना है। क्षमता आयाम जो प्रभावकारिता आधारित आत्मसम्मान है, वह उस हद तक

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

संदर्भित करता है, जिस पर लोग खुद को सक्षम और प्रभावोत्पादक के रूप में देखते हैं। मूल्य आयाम जो मूल्य आधारित आत्मसम्मान है वह उस हद तक संदर्भित करता है जिस पर लोग खुद को मूल्यवान समझते हैं। यह मानव के संबंध को एकीकृत करने में एक दिशानिर्देश के रूप में कार्य करता है। जब कोई व्यक्ति अन्य लोगों के साथ अनुभवों के माध्यम से खुद की एक छवि बनाता है, तो जीवन भर उसका आत्म–सम्मान विकसित होता है। यह एक बुनियादी मानवीय जरूरत है। यह एक जीवन के साथ प्रेरणा और संतुष्टि से भी जुड़ा है। यह एक छात्र के सीखने के परिणामों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्कूल के वर्षों के दौरान, एक छात्र का आत्म–सम्मान प्रभावित होता है। यह किसी व्यक्ति की विचार प्रक्रिया को प्रभावित करता है। हर कोई सफलता प्राप्त करके अपने आत्मसम्मान को बढ़ाता है और असफलताओं से बचकर, इसे बनाए रखा जा सकता है। उच्च शैक्षणिक उपलब्धि वाले छात्र आत्म–सम्मान में वृद्धि महसूस करते हैं और आत्मविश्वास से भरे होते हैं। यह देखा गया है कि सकारात्मक आत्मसम्मान वाले छात्रों में पढ़ने की क्षमता और शैक्षणिक उपलब्धि का उच्च स्तर होता है। उनका अपने दैनिक जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण है।

शिक्षक शिक्षा की प्रकृति

1) शिक्षक शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है और इसकी सेवा और पूर्व–सेवा घटक एक दूसरे की प्रशंसा करते हैं। इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन (1987) के अनुसार, टीचर एजुकेशन को तीन चरणों में माना जा सकता है। प्री–सर्विस, इंडक्शन एंड इन–सर्विस। तीन चरणों को एक सतत प्रक्रिया के हिस्से के रूप में माना जाता है।

2) शिक्षक शिक्षा इस सिद्धांत पर आधारित है कि अध्यापक बनाए जाते हैं, धारणा के विपरीत पैदा नहीं होते हैं, अध्यापक पैदा होते हैं, बनते नहीं हैं। चूंकि शिक्षण को एक कला और एक विज्ञान माना जाता है, शिक्षक को न केवल ज्ञान प्राप्त करना है, बल्कि कौशल भी होता है।

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Gignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

3) शिक्षक शिक्षा व्यापक है। शिक्षकों के लिए पूर्व–सेवा और इन–सर्विस कार्यक्रमों के अलावा, इसका उद्देश्य विभिन्न सामुदायिक कार्यक्रमों और विस्तार गतिविधियों, वयस्क शिक्षा और गैर–औपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों, साक्षरता और समाज की विकास गतिविधियों में शामिल होना है।

4) यह हमेशा विकसित और गतिशील है। गतिशील समाज की चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम शिक्षकों को तैयार करने के लिए, शिक्षक शिक्षा को हाल के घटनाक्रमों और रुझानों के बीच संयम रखना होगा।

5) शिक्षक शिक्षा की पूरी प्रक्रिया का मूल सिद्धांत उसके पाठ्यक्रम, डिजाइन, संरचना, संगठन और लेन–देन के तरीकों में निहित है, साथ ही साथ इसकी उपयुक्तता की सीमा भी है।

6) अन्य व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों के रूप में शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में एक ज्ञान का आधार है जो क्षेत्र के अनुप्रयोगों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील है और इसमें कई संज्ञानात्मक विषयों में उपलब्ध सैद्धांतिक समझ का सार्थक, वैचारिक सम्मिश्रण शामिल है।

7) शिक्षक शिक्षा चरण–विशिष्ट कार्यक्रमों में विभेदित हो गई है। इससे पता चलता है कि ज्ञान का आधार पर्याप्त रूप से विशिष्ट और चरणों में विविधतापूर्ण है, जिसका उपयोग उन कार्यों के लिए प्रवेशी शिक्षकों को तैयार करने की प्रभावी प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए किया जाना चाहिए, जो प्रत्येक चरण में एक शिक्षक के प्रदर्शन की उम्मीद है।

8) यह एक प्रणाली है जिसमें इसके इनपुट, प्रक्रिया और आउटपुट की अन्योन्याश्रयता शामिल है।

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षक शिक्षा

शिक्षक शिक्षा के सभी स्तरों तक पहुँचती है, अर्थात् पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक। छात्रों और शिक्षा की आवश्यकताएं प्रत्येक स्तर पर भिन्न होती हैं। इसलिए स्तर और चरण–विशिष्ट शिक्षक तैयारी आवश्यक है। शिक्षक शिक्षा पेशेवर संस्थानों के शिक्षकों में शिक्षण कौशल के विकास में भी मदद करती है। पेशेवर संस्थानों में शिक्षकों को अपने संबंधित विषयों का केवल सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान है। उन्हें अपने पेशे में प्रवेश करने वाले छात्रों से निपटने के लिए विशेष शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। शिक्षक शिक्षा भी विशेष शिक्षा और शारीरिक शिक्षा तक पहुँचती है। इस प्रकार जहां शिक्षक हैं, वहां शिक्षक शिक्षा होगी। ज्ञान आधार पर्याप्त रूप से विशिष्ट है और चरणों में विविधतापूर्ण है, ताकि प्रत्येक चरण में एक शिक्षक से जो कार्य करने की उम्मीद की जाती है, उसके लिए प्रवेश करने वाले शिक्षकों को तैयार करने की प्रभावी प्रक्रिया विकसित हो सके।

शिक्षक शिक्षा का त्रिकोणीय आधार

शिक्षा के प्रत्येक चरण के लिए प्रासंगिक ज्ञान के आधार के निर्माण के लिए प्रत्येक स्तर पर शिक्षक शिक्षा से संबंधित मामले की शैक्षिक और बौद्धिक समझ की एक उच्च डिग्री की आवश्यकता होती है। इसमें शिक्षा से संबंधित विषयों से संबंधित सैद्धांतिक ज्ञान का चयन शामिल है, अर्थात् मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र, और इसे शिक्षक शिक्षा के लिए उपयुक्त रूपों में परिवर्तित करना। शिक्षक शिक्षा अपनी सामग्री को दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के विषयों से प्राप्त करती है। ये विषय शिक्षक शिक्षा की बेहतर समझ के लिए आधार प्रदान करते हैं। दार्शनिक आधार शिक्षक छात्र को दर्शनशास्त्र, प्राचीन और आधुनिक दार्शनिक विचारों के विभिन्न विद्यालयों, और शिक्षा पर दार्शनिक विचारकों के शैक्षिक विचारों और पाठ्यक्रम निर्माण और अनुशासन जैसे विभिन्न पहलुओं के बारे में अंतदृ ष्टि प्रदान करता है। समाजशास्त्रीय आधार छात्र शिक्षकों को एक राष्ट्र और दुनिया की शैक्षिक प्रणाली में समाज की भूमिका और उसकी गतिशीलता को समझने में

VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignahanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Aro International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

मदद करता है। इसमें उन आदर्शों को समाहित किया गया है जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृश्यों को प्रभावित करते हैं। मनोवैज्ञानिक आधार छात्र शिक्षकों को छात्र के मनोवैज्ञानिक में अंतर्दृष्टि को विकसित करने में मदद करता है। यह छात्र शिक्षकों को स्वयं, अपने छात्रों और सीखने की स्थितियों को समझने में सक्षम बनाता है, ताकि वे अपने छात्रों को सार्थक और प्रासंगिक शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकें।

शिक्षक शिक्षा के पहलू

शिक्षक शिक्षा का संबंध इन पहलुओं से है जैसे किसे, क्या और कैसे। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में शैक्षणिक गुणवत्ता और भावी शिक्षकों को तैयार करने के लिए उनके प्रभावी उपयोग शिक्षक शिक्षकों की व्यावसायिक क्षमता और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को मजबूत बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले तरीकों पर काफी हद तक निर्भर करते हैं। शिक्षक शिक्षा, इस प्रकार, पहले प्रभावी शिक्षक शिक्षकों की तैयारी से संबंधित है। शिक्षक शिक्षा छात्र अध्यापकों को उनके शिक्षण पेशे में प्रभावी रूप से कार्य करने के लिए प्रासंगिक ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल प्रदान करके पहुंचती है। यह छात्र शिक्षकों को वैचारिक और सैद्धांतिक ढांचे से लैस करने का कार्य करता है जिसके भीतर वे पेशे की जटिलताओं को समझ सकते हैं। इसका उद्देश्य पेशे के हितधारकों के प्रति छात्र शिक्षकों में आवश्यक रवैया बनाना है, ताकि वे बहुत सकारात्मक तरीके से पर्यावरण द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर सकें। यह कौशल के साथ छात्र शिक्षकों को सशक्त बनाता है जो उन्हें सबसे कुशल और प्रभावी तरीके से कार्यों को करने में सक्षम बनाता है। शिक्षक शिक्षा इसलिए इसकी विषय वस्तु पर ध्यान देती है।

संवादात्मक मीडिया की मुख्य विशेषताएं

संवादात्मक मीडिया मूल रूप से डिजिटल, योग्य नेटवर्क और संवादात्मक हैं। मोटे तौर पर, इंटरनेट, वेबसाइट, कंप्यूटर मल्टीमीडिया, वीडियो गेम, सीडी–रोम और डीवीडी मीडिया के संयोजन का गठन करते हैं। व्यावहारिक रूप से, मीडिया कभी

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

भी, कहीं भी, किसी भी डिजिटल डिवाइस पर सामग्री के लिए ऑन–डिमांड एक्सेस को संदर्भित करता है, साथ ही साथ संवादात्मक उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया और रचनात्मक भागीदारी। संवादात्मक मीडिया नई और अनियमित सामग्री की वास्तविक समय की पीढ़ी के लिए भी जाना जाता है। संवादात्मक मीडिया ने 20 वीं शताब्दी के अंतराल के दौरान दुनिया में प्रवेश किया। दुनिया ने सामाजिक परिवर्तनों और कंप्यूटर डिजाइन के बीच एक अलग तरह के समानांतर संबंध को भी देखा। शापिरो (1990) का तर्क है कि नई, डिजिटल प्रौद्योगिकियों की तीव्रता, सूचना, अनुभव और संसाधनों के नियंत्रण में संभावित रूप से मौलिक बदलाव का संकेत देती है। एंड्रयू एल (1991) का सुझाव है कि मीडिया के पास एक दिशा में खींचने की तकनीकी क्षमताएं हैं, आर्थिक और सामाजिक ताकतें विपरीत दिशा में वापस आती हैं। लोगों ने ऑडियो, वीडियो और इलेक्ट्रॉनिक पाठ संचार के एक सार्वभौमिक नेटवर्क के विकास को देखा है, जिसने पारस्परिक और जन संचार के बीच और सार्वजनिक और निजी संचार के बीच अंतर को धुंधला कर दिया है। न्यूमैन (2003) संवादात्मक मीडिया की विशेषताओं की पहचान करता है

• भौगोलिक दूरी का अर्थ बदल देना।

•संचार की मात्रा में भारी वृद्धि की अनुमति दें।

•संचार की गति बढ़ाने की संभावना प्रदान करें।

•संवादात्मक संचार के लिए अवसर प्रदान करें।

•संचार के रूपों को अनुमति दें जो पहले ओवरलैप और इंटरकनेक्ट करने के लिए अलग थे।

भारत में किशोरों का सतत विकास

भारत की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार – 2011 में 200 मिलियन से अधिक किशोरों की कुल आबादी का लगभग एक चौथाई हिस्सा है। किशोरों से संबंधित विशिष्ट

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIC
Gignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

मुद्दे भी विकास और विकास के विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करने वाले लिंग और उम्र के आधार पर भिन्न होते हैं। वास्तव में, किशोरों के सभी विशेषताओं में उम्र और लिंग में कटौती के जैविक कारक हैं। व्यवहार वैज्ञानिकों ने उल्लेख किया है कि किशोरावस्था मानव विकास के जीवन चक्र में एक महत्वपूर्ण अवधि है, जो तेजी से शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास द्वारा चिह्नित है और जिसके परिणामस्वरूप एटिट्यूडिनल और किशोरों के बीच व्यवहार में परिवर्तन, जो उनके संबंधित सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मील के पत्थर से काफी प्रभावित हैं। भारत में, स्कूल पाठ्यक्रम विषय सीखने पर अधिक जोर देता है, इस प्रकार मानव विकास के अन्य घटकों की उपेक्षा करता है विशेष रूप से जीवन कौशल, समस्या को सुलझाने, सक्षमता विकसित करने और कुछ बाधाओं के कारण सामाजिक कठिनाइयों से निपटने में भारत के संविधान ने किशोरों सहित भारत में मानव संसाधनों के विकास के लिए कई सुरक्षा उपायों और प्रावधानों की गारंटी दी है।. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने निम्न और उच्च शिक्षा के लाभ के लिए कई विकासात्मक कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया है। भारत में किशोरों के विकास के लिए नीतिगत पहलों की रूपरेखा निम्नलिखित है।

राष्ट्रीय पोषण नीति, 1983

राष्ट्रीय पोषण नीति ने माताओं और गृहिणियों के रूप में उनकी भूमिका के महत्व के संबंध में किशोर लड़कियों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया था। किशोर लड़कों को नीति में कोई उल्लेख नहीं मिला। किशोर लड़कों के विकास के लिए कोई गुंजाइश नहीं थी और यह कि किशोरों की भलाई की आवश्यकता थी, क्योंकि एक समूह को नीति निर्माताओं और नौकरशाहों द्वारा मान्यता नहीं दी गई थी।

शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति, 1986 (1992 में संशोधित)

1986 की राष्ट्रीय शैक्षिक नीति में मुख्य जोर नागरिकों के विशेष रूप से 15 से 35 वर्ष के आयु वर्ग के लिए निरक्षरता उन्मूलन और प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Aro International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

पर था। किशोरों के समूह ने आंशिक रूप से उन बच्चों का हिस्सा बनाया जिन्हें प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जानी थी और जो वयस्क साक्षरता गतिविधि के भागीदार थे। हालाँकि, नीति ने किशोरों को प्रति समूह के रूप में नहीं पहचाना, जिसके कारण उनकी विशेष आवश्यकताओं की अनदेखी हुई। कुछ हद तक रोजगार से संबंधित शैक्षिक आवश्यकताओं को उच्च माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से संबोधित किया गया था।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 1999

नीति में विशेष समूहों जैसे कि किशोर लड़कियों के स्वास्थ्य के लिए चिंता व्यक्त की गई है, केवल उनकी पोषण संबंधी जरूरतों के संबंध में। किशोरियों को विशिष्ट आवश्यकताओं और समस्याओं के साथ एक अलग समूह के रूप में व्यवहार करने के बजाय, गर्भवती महिलाओं और बच्चों के साथ जोड़ा जाता था। किशोर लड़कियों की गर्भावस्था और प्रसूति संबंधी स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को मुख्य रूप से नीति निर्माताओं और नौकरशाहों द्वारा ध्यान केंद्रित किया गया था।

नेशनल एड्स पॉलिसी, 2000

नीति निश्चित रूप से राष्ट्रीय स्वास्थ्य रणनीति का एक महत्वपूर्ण पहलू थी। चूंकि असुरक्षित यौन संबंध एड्स का एक प्रमुख स्रोत था और किशोरों ने यौन सक्रिय आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया, इसलिए नीति ने किशोरों को विशेष देखभाल और सुरक्षा सुनिश्चित की। प्रयोग, ज्ञान की कमी, सहकर्मी दबाव और साहस की झूठी भावना ने किशोरों को विशेष रूप से एसटीडी सहित एड्स के लिए कमजोर बना दिया।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000

नीति किशोरों को आबादी के एक भाग के रूप में देखती है जिसे संबोधित करने की आवश्यकता होती है और 12 रणनीतिक विषयों में से एक का विषय था। इस

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA...
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

नीति ने किशोरों की पहले की अदृश्यता को पहचान लिया और उन्हें विशेष रूप से सूचना, पोषण, गर्भनिरोधक उपयोग, एसटीडी और अन्य जनसंख्या संबंधी मुद्दों पर वर्गों में संदर्भित किया गया। किशोरों के लिए स्वास्थ्य पैकेज विकसित करना और शादी में कानूनी उम्र को लागू करना भी संबोधित किया गया था।

ड्राफ्ट नेशनल यूथ पॉलिसी, 2001

विशेष रूप से किशोरों के सशक्तीकरण के लिए कोई सरकारी नीति नहीं थी। हालांकि, इस नीति ने भारत में युवाओं के विकास के लिए पर्याप्त स्थान प्रदान किया। युवाओं के मुद्दों और चिंताओं को विशेष रूप से नीति द्वारा संबोधित किया गया था। इसका उद्देश्य भारतीय किशोरों के कल्याण को पूरा करना था। नीति के जोर क्षेत्रों में सशक्तीकरण, लिंग इक्विटी देश में युवा कल्याण के लिए एक अंतर–क्षेत्रीय दृष्टिकोण शामिल था। इस नीति ने वास्तव में किशोरावस्था की आयु (13–19) और परिपक्वता प्राप्त करने की उम्र (20–30 वर्ष) के बीच अंतर किया, जो मानव विकास के इन विभिन्न चरणों के बीच अंतर करने की दिशा में एक बदलाव का प्रतीक है।

महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए राष्ट्रीय नीति, 2001

नीति ने बालिकाओं को एक अलग श्रेणी के रूप में मान्यता दी थी और किशोरियाँ इस नीति की प्राथमिक लाभार्थी थीं। किशोर लड़कियों को मुख्य रूप से इस नीति द्वारा ध्यान केंद्रित किया गया था, जिसने भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण के एक नए युग की शुरूआत की।

किशोरियों की योजना (किशोरी शक्ति योजना), 2003

किशोरावस्था की लड़कियों (11 – 18 वर्ष) के पोषण और स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार के लिए कार्यक्रम को बाद में किशोरी शक्ति योजना के रूप में बदल दिया गया, गैर–औपचारिक प्रणाली के माध्यम से साक्षरता और संख्यात्मक कौशल प्रदान

Principal
VIVEKANAND VIRF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yan Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Aro International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

करते हुए, किशोर–आधारित लड़कियों को घर–आधारित और प्रशिक्षित किया गया। व्यावसायिक कौशल और जागरूकता को बढ़ावा देना और उन्हें 18 साल बाद शादी करने के लिए प्रोत्साहित करना। भारत में किशोर लड़कियों की भलाई को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक राज्य की स्थिति पर निर्भर करते हुए, इस संशोधित योजना से राज्यों को आवश्यकता आधारित दृष्टिकोण अपनाने के लिए लचीलापन प्रदान करने की उम्मीद थी।

राजीव गांधी पेयजल मिशन, 2003

इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत के सभी स्कूलों में सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता सुविधाएं प्रदान करना है। किशोर लड़के और लड़कियाँ इस कार्यक्रम के प्रमुख लाभार्थी थे। युवा मामले और खेल मंत्रालय, सामाजिक न्याय और अधिकारिता, मानव संसाधन विकास, ग्रामीण विकास और इसी तरह भारत में किशोरों सहित युवाओं के जीवन स्तर की बेहतरी के लिए कई कार्यक्रम भी शुरू किए। नेहरू युवा केंद्रों ने पूरे देश में किशोरों सहित आम लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने, शिक्षित करने और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों को अपनाने के लिए स्वास्थ्य जागरूकता इकाइयों की स्थापना की। नेहरू युवा केंद्रों के माध्यम से युवा कल्याण कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए युवा संगठनों की स्थापना की गई थी। ग्रामीण और आदिवासी किशोरों के लिए छात्रवृत्ति और छात्रावास सहित युवा कल्याण कार्यक्रमों को लागू करने के लिए पूरे देश में युवा समन्वयक भी नियुक्त किए गए थे। महिला समाख्या कार्यक्रम ने पूरे देश में किशोरियों और युवतियों की शैक्षिक, स्वास्थ्य और विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति की। इस कार्यक्रम के तहत कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश, आंद्र प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, असम और भारतीय गणराज्य के अन्य राज्यों में महिला शिक्षा केंद्र (महिला शैक्षिक केंद्र) स्थापित किए गए। किशोरी मेला और अन्य शैक्षिक कार्यक्रम भी देश में किशोर लड़कियों की शिक्षा और आत्म–विकास के अवसर पैदा करने के लिए आयोजित किए गए थे। किशोरों ने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन और सर्व शिक्षा अभियान का भी हिस्सा बनाया, जिसने 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को गुणवत्ता केंद्रित

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Aro International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एक मिशन मोड अपनाने की मांग की। स्वास्थ्य विभाग ने किशोरों सहित युवाओं के लिए शैक्षिक और स्वास्थ्य कार्यक्रमों की एक श्रृंखला भी शुरू की।

किशोर और संवादात्मक मीडिया

इंटरनेट से प्रेरित संवादात्मक मीडिया के प्रसार ने भारत में मीडिया के मामलों की स्थिति को पूरी तरह से बदल दिया है। संवादात्मक मीडिया प्रौद्योगिकियों के एक गति ने बच्चों और अन्य युवा पीढ़ी की मीडिया की आदतों को फिर से उन्मुख किया है। अनुभवजन्य अध्ययनों का जायजा लेने से संवादात्मक मीडिया के तेजी से विकास के दोनों आशाजनक और चौंकाने वाले परिणाम हैं। संवादात्मक मीडिया क्रांति ने बच्चों को अपनी उंगलियों पर दुनिया दी है। इंटरनेट, कंप्यूटर और मोबाइल तकनीकों ने पूरी दुनिया में युवा पीढ़ी को सीखने के नए अवसर पैदा किए हैं। संवादात्मक मीडिया द्वारा प्राप्त स्थिति बदल रही है और जल्द ही सबसे कम आम भाजक के लिए सुलभ हो जाएगी। संवादात्मक मीडिया का उपयोग उन छात्रों के लिए एक बुनियादी आवश्यकता बन गया है जिन्होंने शारीरिक परिपक्वता से बहुत पहले मानसिक परिपक्वता हासिल कर ली है। स्कूल जाने वाले छात्र संवादात्मक मीडिया प्रौद्योगिकियों की दुनिया का पता लगाने के लिए उत्सुक हैं। संवादात्मक मीडिया प्रौद्योगिकियों के आगमन ने बच्चों और किशोरों के जीवन को बदल दिया है। वर्तमान में संवादात्मक मीडिया वास्तव में युवा लोगों के जीवन का एक सर्वव्यापी पहलू है। आधुनिक समाज में किशोरों की बहुउद्देश्यीय आवश्यकताओं को संवादात्मक मीडिया सेवाओं द्वारा काफी हद तक पूरा किया जाता है। किशोरों का एक बड़ा दिन घर और बाहर दिन का लंबा समय बिताता है, टीवी देख कर, वीडियो गेम खेल करै, नेट पर सर्फिंग कर या मोबाइल और अन्य प्रकार के संवादात्मक मीडिया गैजेट्स का उपयोग करके है। दुनिया भर के समकालीन शोधकर्ताओं ने किशोरों पर संवादात्मक मीडिया के प्रभाव पर बहुत चिंता व्यक्त की है। वास्तव में, नई सहस्राब्दी में तकनीकी सफलताओं ने संवादात्मक मीडिया परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है।

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

संवादात्मक मीडिया प्रौद्योगिकी युवा दर्शकों को इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क बनाने के लिए कई अवसर प्रदान करती हैं जो कंप्यूटर के माध्यम से लोगों और सूचनाओं को जोड़ता है। संवादात्मक मीडिया ने फ्लूर (2003) के अनुसार वैश्वीकरण को लाया है। राइस (1984) ने संवादात्मक मीडिया को संचार तकनीकों के रूप में परिभाषित किया जो उपयोगकर्ता और सूचना के बीच उपयोगकर्ता–से–उपयोगकर्ता की सहभागिता और अन्तरक्रियाशीलता को सक्षम या सुविधाजनक बनाता है। संवादात्मक मीडिया ने लोगों को व्यक्तिगत ऑनलाइन मीडिया का उत्पादन करने में सक्षम किया है, जिसमें उनकी पसंद के चित्र, पाठ और ध्वनि शामिल हैं। बच्चों और किशोरों ने कंप्यूटर उपयोग के बुनियादी कौशल भी सीखे हैं जो उनके पाठ्यक्रम का हिस्सा बन गया है। इंटरनेट ने बच्चों, किशोरों और अन्य लोगों के लिए पर्याप्त सामाजिक स्थान प्रदान किया है। इंटरनेट अंतर वैयक्तिक संबंधों के लिए नए अवसर प्रदान करता है। बेम (2006) ने सुझाव दिया है कि गुमनामी और इसके सामाजिक जोखिम को कम करने से लोग अधिक ईमानदार हो सकते हैं और ऑफलाइन होने की तुलना में आत्म–प्रकटीकरण में अधिक जोखिम उठा सकते हैं। इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को गुमनामी प्रदान करता है और उन्हें उनके बारे में अधिक प्रकट करने में सक्षम बनाता है इसके अलावा इंटरनेट भी व्यक्ति के लिए कई पहचान रखने की गुंजाइश प्रदान करता है।

निष्कर्ष

संवादात्मक मीडिया का स्कूल जाने वाले बच्चों के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। अनुसंधान के वर्तमान निष्कर्ष शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, मनोवैज्ञानिकों, संचार शोधकर्ताओं और संवादात्मक मीडिया अध्ययन से जुड़े अन्य लोगों के बीच ज्ञान की खाई को भरने में मदद करते हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वाराणसी शहर उत्तर प्रदेश राज्य की प्रमुख शैक्षिक राजधानी में से एक है। वाराणसी शहर में शैक्षणिक संस्थान एक अनुकूल वातावरण प्रदान करने के अलावा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में निरंतर प्रगति कर रहे हैं। उच्च शैक्षणिक उपलब्धि वाले छात्र आत्म–सम्मान में वृद्धि महसूस करते हैं और आत्मविश्वास से भरे होते हैं। यह देखा

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCAT-
Bignanikanagar yari Anandpura Roau
Aurangabad (Bihar) 824101

गया है कि सकारात्मक आत्मसम्मान वाले छात्रों में पढ़ने की क्षमता और शैक्षणिक उपलब्धि का उच्च स्तर होता है। उनका अपने दैनिक जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण है। कम आत्म–सम्मान वाले छात्र शैक्षणिक और सामाजिक समस्याओं के साथ संघर्ष करते हैं जो वे स्कूल में सामना करते हैं। उनके जीवन में नकारात्मक दृष्टिकोण है। उच्च स्तर के आत्म–सम्मान वाले छात्र अपने साथियों द्वारा देखे जाने के तरीके के बारे में चिंता करने में अधिक समय नहीं बिताते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अब्दुल्ला एम। सी।, इलियास एच।, महिउद्दीन, आर। और उली जे। (2009) मलेशियाई विश्वविद्यालय में प्रथम वर्ष के छात्रों के बीच समायोजन, यूरोपीय जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 8 (3), 496–505।

- अब्दु–रहीम, बी.ओ. (2012)। दक्षिण–पश्चिम, नाइजीरिया, सोशल साइंस के इंटरनेशनल जर्नल, 31 (1), 93–98 में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन पर प्रभाव।

- अबूबकर, आर.बी. और एडबेबॉयगा, बी.आई. (2012)। कॉलेज गणित में अकादमिक उपलब्धियों के निर्धारक के रूप में आयु और लिंग,

- ओमोकू, नदी राज्य। प्राकृतिक और एप्लाइड साइंसेज के एशियाई जर्नल, 1 (2), 121–126।
- अबूबकर, आर.बी. और ओगुगुओ, ओडी (2011)। कॉलेज के गणित और विज्ञान के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के भविष्यवक्ता के रूप में उम्र और लिंग। "शिक्षण, सीखने और परिवर्तन पर अनुदेशात्मक सम्मेलन। शिक्षण और सीखने के लिए संस्था संघ

- आचार्य, पी। बी। और देशमुख, आर.एस. (2012)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का आत्म–सम्मान और अकादमिक उपलब्धि। इंटरनेशनल रेफर्ड रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम। अंक –29, 20–23।

- अधीम्बो, डब्ल्यू. एम., ओडवार, ए. जे. एंड माइल्ड्रेड, ए। ए। (2011)। किसुमू जिला केन्या में माध्यमिक स्कूल के छात्रों के बीच स्कूल समायोजन, लिंग और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। जर्नल ऑफ इमर्जिंग ट्रेंड्स इन एजुकेशनल रिसर्च एंड पॉलिसी स्टडीज, 2 (6), 493–497

- अहलूवालिया, एस. पी., और कालिया, ए. (1986)। कम प्राप्त करने वाले किशोरों में उच्च अंतर के बीच समायोजन अंतर। शैक्षिक अनुसंधान और विस्तार के जर्नल। 23 (3)।

- एकिनलेक, ओ.डब्ल्यू। (2012)। नाइजीरिया में पॉलिटेक्निक छात्रों के बीच टेस्ट चिंता, आत्मसम्मान और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंधों की जांच। कंप्यूटर अनुप्रयोग के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 51 (1) 47–50।

- एलिमी, ओ.एस., इहिनोला, जी। बी।, अलबी, एफ। ओ। (2012)। स्कूल के प्रकार, सुविधाएं और शैक्षणिक

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ISSN 0970-1745
SLRF Impect Factor 2.364

Shodh

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCAT
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Year-35 Vol-96 January, 2018 ISSN 0970-1745
UGC Approved No. 42069

Shodh

(A Refereed Research Journal, Law & Multidisciplinary)

EDITOR IN CHIEF
Dr. Surendra Pandey, Varanasi

EDITOR
Dr. Shailendra kumar

Prof. Gelina Rousseva

EDITORIAL BOARD
Dr. Mahmoud Sobhi
Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Kedar Nath Yadav
Assistant Professor, R.S.K.D. PG College, Jaunpur, U.P. India

Shri Sachin Awasthi
Department of Economics (M.P.)

Dr. Manohar Chitre
Asst. Professor Commerce, Mata Jijabai Girls' P.G. College, Moti Tabela, Indore.

Prof. Rajkumar Singh
F.M.S., Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

Prof. Rajeswar Pal
Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Prof. Sudhaker Singh
Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.

Princ...
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC...
Bignamkanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

1.	Problems of Enforcement of Pollution Control Legislations in India -An Appraisal and Suggested Reforms ***Dr. Dinesh Kumar Gupta**	1–10
2.	आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के विकास में सामाजिक परिस्थितियों का योगदान ***कु. अणिमा शुक्ला**	11–13
3.	Knowledge Management and Learning in Organizations ***Kedar Nath Yadav**	14–22
4.	परिवार नियोजन कार्यक्रम का सामाजिक जीवन पर प्रभाव ***Mukesh Kumar Malviya**	23–25
5.	An Analysis of Effectiveness of Viral Marketing Campaigns ***Sadhana Tiwari**	26–29
6.	GIRISH KARNAD'S *HAYAVADANA*: A CRITIQUE ***Talluri Mathew Bhaskar**	30–33
7.	भारत में ब्रिटिश शिक्षा का उद्भव एवं विकास ***डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे**	34–35
8.	हड़प्पा एवं वैदिक सभ्यता के समान तत्व ***डॉ0 बिन्दू त्रिपाठी**	36–38
9.	झारखण्ड राज्य के उराँव जनजाति में राजनीतिक चेतना का विकास ***डॉ० संतोष उराँव**	39–43
10.	Status of Women and Measures for eradication of violence against women ***Prativa Kumari**	44–49
11.	आधुनिकता - ऐतिहासिक विवेचन ***वीणा शुक्ला**	50–52

●●●●●

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Jnanikanagar yari Anandpura Roa
Aurangabad (Bihar) 824101

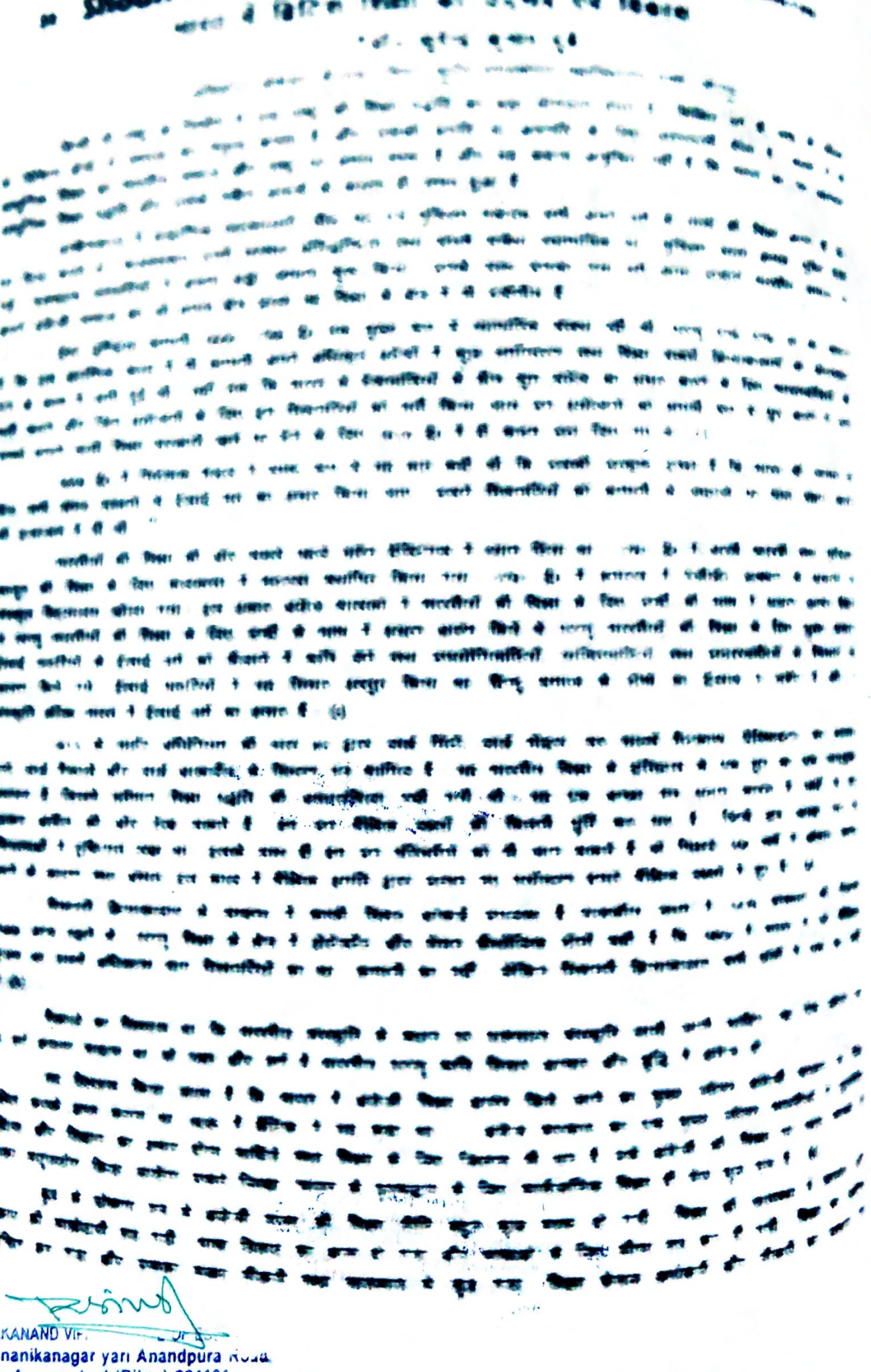

भारत में ब्रिटिश शिक्षा का उद्भव एवं विकास

VIVEKANAND VI...
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Signanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) ...101

Shodh

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Year 35 Vol 97 Feb 2018 ISSN 0970-1745

Shodh

(A Refereed Research Journal Law & Multidisciplinary)

[illegible]

Dr. Surendra Pandey, Varanasi

[illegible]

Dr. Shailendra Kumar

Prof. Galina [illegible]

[illegible]

Dr. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Dr. [illegible]

[illegible]

Prof. [illegible] Singh

[illegible]

Prof. [illegible] Pal

[illegible]

Prof. [illegible] Singh

[illegible]

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

1. [illegible]
[illegible]

2. [illegible]
[illegible]

3. [illegible]
[illegible]

4. [illegible]
[illegible]

5. Use of ICT for Developing Conceptual Understanding in Chemistry — [illegible]
[illegible]

6. This paper investigated the economic — [illegible]
[illegible]

7. [illegible]
[illegible]

8. [illegible] Policy of Indian Government — [illegible]
[illegible]

9. [illegible] of Political Participation of Dalit Women in Panchayati Raj Institutions — [illegible]
[illegible]

10. [illegible]
[illegible]

11. [illegible]
[illegible]

12. [illegible]
[illegible]

13. [illegible]
[illegible]

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIO[illegible]
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

[illegible]

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC[illegible]
[illegible]nagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ANAND VIPF INC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Vol. XVIII
Number 1

ISSN 2319-7129
(Special Issue) February, 2018

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC...
...gnanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ISSN : 2319-7129

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. XVIII, Number - 1 February, 2018

(*Special Issue*)

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC.
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

Cultural Diversity in South Asia: Challenges and Prospects 1
Dr. Amandeep Kaur

Preferential Policy: Concept, Debates and Contestation in China. 7
Chandra Sen

The Role of Civil Societies in Promoting Good Governance in Bangladesh 16
Minati Kalo

Conversion of Waste into Energy : A Case Study of Qatar 25
Sonal Kumari

Corruption and its Challenges to the Governance in China 29
Sumanta Kumar Sahu

Women's Educational Policies During Soviet a Period : Historical Analysis 39
Dr. Mahashraddha Yadav

History in Transition: A Reflection on Women's Educational Attainment in Soviet Union 50
Dr. Mahashraddha

Engaging in the Field Work: A Fieldworker's Note on Methodological Exploration on Education and Women's Empowerment 56
Dr. Shashwat Kumar

Contesting Terrain of Marginality in Education: A Study of Women Empowerment and Education in Pratapgarh, Uttar Pradesh 61
Dr. Shashwat Kumar

Special Economic Zones-An In-Depth Analysis of SEZ distribution 68
Dr. Sonu Kumar Mishra

Water Security Challenges in North Eastern Part of India on Sharing Trans-Boundary River of Brahmaputra Between India and China 76
Md. Najibullah Singakhongbam and Hena Bari

Yogic Management of Diabetes 84
Dr. R. Lakshminarayana

India' Act East Policy: A Study of Mekong-Ganga Cooperation 90
Himanshu

Responsible Wildlife Tourism: A Theoretical Review 98
Mahender Reddy Gavinolla and Prof. Sampada Kumar Swain

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

अशोक द्वारा नियुक्त 'धर्ममहामात्र एक प्रदेयः विश्लेषणात्मक समीक्षा 194
डॉ. सोनी कुमारी

डॉ.- राही मासूम रजा के कृतित्व का सामान्य परिचय 198
डॉ. तब्बसुम खान

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता 208
डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और आदिवासी 215
डॉ. तुंगनाथ मौआर

बिहार में महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज की भूमिका 224
डॉ. पूनम कुमारी

NITI Aayog (National Institution for Transforming India) 229
Dr. Poonam Kumari

Women Empowerment in Present Scenario 233
Dr. Poonam Kumari

A Trend of Intra-Industry Trade: A Sino-Indian Case Study 238
Madhurendra Singh

Taxation System in India 243
Madhurendra Singh

E-Banking 255
डॉ. पीयूष कुमार गुप्ता

राजनैतिक कारण और बाल अपराध 264
डॉ. तन्द्रा शरण

बाल अपराधी या बालापचार बच्चों का माता-पिता के साथ सम्बन्ध 267
डॉ. तन्द्रा शरण

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में शिक्षा पद्धति की पड़ताल 270
डॉ. अनिल शर्मा

Investigation of Psychological Factors Underlying Peptic Ulcer 274
Dr. Nishi Bijiya

Synthesis of Imine Bond Containing Insoluble Polymeric Ligand and its Transition Metal Complexes, Structural Characterization and Catalytic Activity on Esterification Reaction 280
Dr. Prabhakar Kumar

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे*

भूमिका

व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का ह्रास वैश्विक अशांति का प्रमुख कारण है। आधुनिक युग में शिक्षा आध्यात्मिक व नैतिक विकास प्रक्रिया के स्थान पर आर्थिक विकास की प्रक्रिया बन गयी है। शिक्षा के उद्देश्यो में आर्थिक विकास को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है। पाठ्यक्रम में केवल वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा को ही प्रधानता दी जा रही है तथा अध्यात्म, धर्म व नैतिकता को महत्व नहीं दिया जा रहा है जिसके कारण लोगों में अनुशासनहीनता एवं असन्तोष की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वर्तमान वैश्विक परिवेश में नैतिकता व मानवीयता का ह्रास हुआ है। आधुनिक भौतिकवादी युग में मानव ने मानसिक शान्ति ,परस्पर सद्भाव तथा एकाग्रता को खो दिया है जिसके कारण धार्मिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है।

आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी युग में एक ओर जहाँ मनुष्य के सुख– सुविधाओं में वृद्धि हुई है वही दूसरी ओर आणविक बमों के आविष्कार ने सम्पूर्ण मानव के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। विकास की इस तीव्र आँधी ने जहाँ जीवन के अधिकांश मानवीय मूल्यों, आस्थाओं और प्रतीकों पर प्रहार किया है, वहीं दूसरी तरफ सम्पूर्ण पीढ़ी को परम्परा व आधुनिकता , जड़ता एवं गतिमयता के द्वन्द्व में भटकने के लिए छोड़ दिया है। लोगों में मानवीय , आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्य समाप्त हो रहा है और भौतिकवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है परिणामस्वरूप मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है।

आज व्यक्ति के जीवन में भौतिक सुख–सुविधा एवं समृद्धि के नाम पर बहुत कुछ है, ज्ञान एवं कौशल की कमी नहीं है इसके बावजूद भी चारो तरफ अशान्ति, अराजकता एवं आतंकवाद का साम्राज्य व्याप्त है। मनुष्य, मनुष्य से ही भयभीत होने लगा है तथा लोगों का एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह गया है। यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि वर्तमान सामाजिक परिवेश की सभी समस्याओं की जड़ नैतिक मूल्य शिक्षा विहीन शिक्षा प्रणाली ही है। पहले शिक्षा का उद्देश्य मुक्ति होती थी चरित्र निर्माण होता था किन्तु आज मुक्ति, आध्यात्मिकता एवं चरित्र निर्माण की बात करना लोग अप्रासंगिक मान रहे हैं। वर्तमान समय में मनुष्य अपनी उन नैतिक मूल्यों से विमुख हो रहे हैं जिसे अंगीकरण करने पर न केवल अपना कल्याण अपितु पीड़ित मानवता को भी शान्ति प्रदान की जा सकती है। नैतिक मूल्यों के अभाव में आज के छात्र एवं शिक्षक अनैतिक गतिविधियों में लिप्त है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयों में हम छात्रों को विविध विषयों का ज्ञान प्रदान करते हैं किन्तु बालकों की आदतों, उनके व्यवहार, उनके आचरण, उनके स्वभाव आदि के परिमार्जन के लिए हम कोई उपाय नहीं करते। हमारा वर्तमान

*प्रवक्ता बी0एड0 कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के जौनपुर

...EKANAND VI... ... EDUCA...
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

पाठ्यक्रम नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की जानकारी ठीक से प्रदान नहीं करता। अतः वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की शिक्षा की प्रत्येक जागरूक नागरिक को आवश्यकता प्रतीत होती है।

औद्योगीकरण ने परिवार के एवं समाज के ढाँचे में परिर्वतन कर दिया है। अतः अब नैतिक मूल्यों की शिक्षा का दायित्व केवल घर या समाज पर ही नहीं छोड़ा जा सकता। विज्ञान की प्रगति ने हमारे चारों ओर के वातावरण में परिर्वतन कर दिया है। जनतन्त्र ने सामाजिक आकांक्षाओं में भी परिर्वतन कर दिया है। आज के युवाओं मे उत्साह है, किन्तु इस उत्साह को उचित दिशा देने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली अक्षम है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे नवयुवकों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी स्तर पर नहीं दी जाती। नये परिवेश में नैतिक मूल्यों की शिक्षा और आवश्यक हो गई है।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी राष्ट्र के लिए ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने से बालकों में सहिष्णुता, उदारता, सहयोग, समता, त्याग, संयम, विश्व–बन्धुत्व इत्यादि गुणों का विकास किया जा सकता है। वैश्विक शान्ति के लिए बालक का सर्वांगीण विकास आवश्यक है। वैश्विक शान्ति के लिए मानवीयता प्रथम आधार है क्योंकि वैश्विक शान्ति विश्व कल्याण के लिए है और विश्व कल्याण के लिए मानवीयता व मानव मात्र का कल्याण आवश्यक है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की प्रवृति का विकास किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

नैतिक मूल्यों की अवधारणा का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्यों को विकसित करने हेतु उपाय का अध्ययन करना।

वैश्विक शांति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्य की अवधारणा

वे निश्चित मानदण्ड जिसके आधार पर व्यक्ति, वस्तु, व्यवहार व घटना का अच्छा–बुरा,सही–गलत के रूप में परख की जाती है,मूल्य कहलाते हैं। मूल्य ही धर्म कहलाता है अर्थात धर्म उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जिनकी मन, वचन, कर्म की सत्य अभिव्यक्ति से ही मनुष्य कहलाता है। धर्म का अभिप्राय मानवोचित आचरण संहिता है। यह आचरण संहिता ही नैतिकता है और इस नैतिकता के मानदण्ड ही नैतिक मूल्य हैं। नैतिक मूल्यों के अभाव में कोई भी व्यक्ति, समाज या देश निश्चित रूप से पतनोन्मुख हो जायेगा। नैतिक मूल्य मनुष्य के विवेक में स्थित, आन्तरिक व अन्तः स्फूर्त तत्व हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में आधार का कार्य करते हैं। नैतिक मूल्यों के कारण ही समाज में संगठनकारी शक्तियाँ व प्रक्रिया गति प्राप्त करती है और विघटनकारी शक्तियों का क्षय होता है विश्वबन्धुत्व की भावना, मानवतावाद, समता भाव, प्रेम और त्याग जैसे नैतिक गुणों के अभाव में विश्वशांति , अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, मैत्री आदि की कल्पना भी नहीं की सकती है।

हरबर्ट. जैसे शिक्षाशास्त्री तो सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य ही नैतिकता का विकास मानते हैं। यदि पढ़–लिखकर बालक सच्चरित्र न बन सका तो शिक्षा बेकार है। छात्र में अनुशासन , सत्यवादिता, सहयोग, भ्रातृत्व, धैर्य आदि गुणो का विकास नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा सम्भव है। परिवार, समाज, संस्कृति, राजनैतिक संस्थाओं

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Signanikanagar ... dpura Road
Aurangabad Bihar, 824101

के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास, शुभ एवं भद्र के लिए श्रद्धाभाव का विकास एवं अन्याय, द्वेष, विशेषाधिकार, दबाव आदि के विरोध का साहस नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है।

नैतिक मूल्यों के प्रकार

प्रमुख नैतिक मूल्य निम्नलिखित है–

सत्य

वैश्विक शान्ति हेतु सत्य एक प्रमुख नैतिक मूल्य है। संसार में सत्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। आज लोगों में सत्य से दूर रहने की प्रवृत्ति है। यदि सत्य पर अडिग रहा जाय तो शान्ति सम्भव है। असत्य के मार्ग पर चलने के कारण ही लोगों का जीवन तनावग्रस्त है। प्राचीन समय में लोगों में यह विश्वास रहता था कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य का तात्पर्य केवल सच बोलना ही नहीं वरन् विचार, वाणी और आचार में भी सत्य होना आवश्यक है। सत्य का अनुपालन धर्म, राजनीति, समाज एवं परिवार सर्वत्र होना चाहिए। व्यक्ति जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह के प्रभाव में रहेगा, वह सत्य का दर्शन नहीं कर सकता। जो स्वयं नैतिक रूप से शक्तिमान होता है, वही सत्य मार्ग पर चल सकता है।

अहिंसा

वैश्विक अशान्ति के प्रमुख कारणों में लोगों में व्याप्त हिंसा की प्रवृत्ति भी है। आज लोग छोटी–छोटी बातों पर भी हिंसा का मार्ग अपना लेते हैं जो विद्रोह का प्रमुख कारण बन जाती है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए अहिंसा रूपी नैतिक मूल्य को प्रमुख रूप से ग्रहण करना होगा। प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों, उपनिषदों, एवं मनुस्मृति आदि के अनुसार अहिंसा का अर्थ साधारणतः किसी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाना एवं किसी का प्राण नहीं लेना है। जैन मत के अनुसार "सभी परिस्थितियों में सभी प्राणियों के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का वर्जन है।"

अहिंसा के बारे में महात्मा गाँधी जी का विचार था कि "यदि अहिंसा के पुजारी की सभी क्रियाओं के मूल में करूणा रहे, यदि वह क्षुद्र जीव को यथाशक्ति कष्ट पहुँचाने से बचता रहे और उसे बचाता रहे तथा इस प्रकार हिंसा के चक्कर से निरंतर दूर रहे तो फिर उसका विश्वास अहिंसा में अडिग हो जायेगा।" शत्रु से प्यार, बुराई के बदले भलाई और घृणा के बदले प्यार करने की भावना गाँधी जी के अहिंसा की कल्पना का तत्व था। उनकी अन्तर्दृष्टि थी कि यदि हम सत्य स्वरूप ईष्वर को पाना चाहते हैं तो हमें इसके लिए निश्चय ही अहिंसा का मार्ग अपनाना होगा।

प्रेम

वैश्विक शान्ति के लिए प्रेम रूपी नैतिक मूल्य भी अनिवार्यतः धारण करना होगा। हिंसा की प्रवृत्ति प्रेम के अभाव में ही उत्पन्न होती है। यदि हम लोगों के प्रति प्रेम का भाव रखें तो निश्चित ही अन्य लोगों का हमारे प्रति प्रेम का ही भाव रहेगा। आज भाई–भाई में भी सच्चे प्रेम का अभाव है जिसके कारण छोटी–छोटी बातों पर विवाद प्रारम्भ हो जाता है तथा कुछ लोग हिंसा का मार्ग चुन लेते हैं। जब लोगों में आपस में ही प्रेम का भाव नहीं है तो ऐसे लोगों से वैश्विक शान्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

Princip...
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF ED...
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

नैतिक मूल्यों में धर्म का भी प्रमुख स्थान है। नैतिकता के लिए धर्म का वही स्थान है, जो जमीन में उगने के लिए जल का होता है। धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है तथा यह हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत से परे है। चूंकि विश्व के सभी मानव एक ही ईश्वर की सन्तान है अतः सभी मानव आपस में भाई–भाई हैं सभी लोगों से नैतिकतापूर्ण व्यवहार करना ही सबसे बड़ा धर्म है। सच्चा धर्म यही शिक्षा देता है कि हमें ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे दूसरे को कष्ट पहुँचे। यदि सभी लोग इस धर्म का पालन करेंगे तो निश्चित रूप से वैश्विक शान्ति की स्थापना होगी।

ईमानदारी

नैतिक मूल्यों में ईमानदारी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ईमानदारी एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगों का विश्वास एक दूसरे पर बना रहता है। हमें अन्दर एवं बाहर दोनों रूप में ईमानदार रहना चाहिए। ईमानदारी से आत्मबल मजबूत होता है। कहा भी गया है "ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है (Honesty is the best Policy.)"

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु पाठ्यक्रम

नैतिक मूल्यों की उपस्थापना भी पाठ्यक्रम के माध्यम से ही सम्भव है। अन्धविश्वासों, संकुचित सिद्धान्त तथा रूढ़िगत धार्मिक व्यापारों से ऊपर उठकर ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जिसमें धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों का निरूपण हो। धर्म वह है जो मनुष्य–मनुष्य में मेल स्थापित करता है। भेद, घृणा, वैमनस्य तथा शत्रुता उत्पन्न करने वाले सिद्धान्त कभी भी धर्म की श्रेणी नहीं आ सकते। इसलिए आज के यथार्थवादी युग में शिक्षा के लिए धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का आँचल छोड़ना श्रेयस्कर नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन से पाठ्यक्रम का जो स्वरूप निखरता है, उसमें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर धर्म तथा संस्कृति, सामाजिक विषयों का अध्ययन, क्षेत्रीय भाषाएँ तथा उनका साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य तथा कृषि सम्बन्धी विषयों के अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने वाले कार्यक्रम, शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन की योजनाएँ, स्थानीय आवश्कताओं के अनुरूप शिल्पीय, व्यावसायिक तथा औद्योगिक विषयों का समावेश वांछनीय है। अधिक जीवन्त, उपयोगी, व्यापक तथा सार्थक बनाने के लिए पाठ्यक्रम को इतना लचीला बना दिया जाय कि सहपाठ्यक्रम, पाठ्येतर तथा पाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों एवं अध्ययनों का समायोजन अध्यापक परिस्थिति तथा आवश्कतानुकूल स्वयं कर सके। परीक्षोन्मुख पाठ्यक्रम एक जड़ एवं मृत भावना है जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु उपाय

विद्यार्थियों नैतिक मूल्यों के विकास के लिए नैतिक शिक्षा को भी एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाय और कुछ पुस्तकें निर्धारित कर दी जाय जिनके आधार पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा भलीभाति दी जा सके।

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATI
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर क्रमिक रूप में विकसित करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर जिन गुणों के विकास पर अत्यधिक बल हो, उनमें माता–पिता, आचार्य एवं अपने से बड़ो के प्रति श्रद्धाभाव भी है। यह श्रद्धा एवं आदर ऊपरी एवं दिखावटी न होकर मन से हो। इसके लिए छात्रों को समय–समय पर कुछ नियमों की जानकारी देनी पड़ेगी तथा 'श्रवणकुमार', 'राजा हरिश्चन्द्र' इत्यादि नैतिक मूल्य प्रधाननाटक कक्षा के सम्मुख उपस्थित किया जाय।

माध्यमिक स्तर पर राष्ट्र एवं विश्व के प्रति तथा मानवता के प्रति श्रद्धाभाव जाग्रत करना होगा। इसके लिए देश–प्रेमी, बलिदानी, एवं राष्ट्र–भक्तों की जीवनियाँ पढ़नी होगी। ऐसी कहानियों का चयन करना होगा जिनके आधार पर देश–प्रेम का विकास हो सके। उन घटनाओं पर बल देना होगा जो देश एवं विश्व के कार्यों मे प्रमुख हैं।

उच्च स्तर पर छात्रों में अपने पूर्वार्जित प्रेम एवं श्रद्धा की मीमांसा करनी होगी। संसार के विभिन्न धर्मों मे व्याप्त एकता को ढूँढ़ना होगा। इसके लिए उन्हें बुद्ध, कन्फ्यूशियस, सुकरात, ईसा, शंकर, मुहम्मद, कबीर, नानक, गाँधी, विवेकानंद, अरविन्द, दयानन्द आदि की जीवनियाँ पढ़ाई जायें। संसार के धार्मिक ग्रन्थों में सार्वभौमिक तत्व को छात्र पहचाने। इसके लिए इन ग्रन्थों से चुने हुए अंश को उन्हें पढ़ना होगा। इस स्तर पर यह सिखाया जाय कि वे धर्म के नैतिक मूल्य को समझ सकें। उन्हें धर्म का दर्शन पढ़ाया जाय, धर्म के मान्य एवं आदर्श सिद्धान्तों की व्याख्या उनके समक्ष प्रस्तुत की जाय ताकि वे युगानुरूप सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।

आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण नैतिकता से ओत–प्रोत हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का पालन कर सकें और नैतिक सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।विद्यालय का कार्य कुछ क्षण के मौन से आरम्भ हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का मनन करना सीखें। सरल कहानी के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी जाय।

भारत सरकार के सन् 1959 में बम्बई के तत्कालीन राज्यपाल श्री श्रीप्रकाशजी की अध्यक्षता में नैतिक मूल्यों के शिक्षा की एक समिति नियुक्त की गई थी, जिसके अध्यक्ष के अतिरिक्त अन्य तीन सदस्य थे– राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी० सी० चटर्जी, जम्मू–कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री फैजी और भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के संयुक्त सचिव श्री प्रेमकृपाल। इस समिति ने नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर विस्तार में विचार किया और अपने अन्य प्रतिवेदनों के अतिरिक्त निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुझाव दिये–

1. प्रारम्भिक स्तर

क. सामूहिक गायन के लिए प्रातः कुछ मिनटों के लिए छात्र सभा का आयोजन हो।

ख. भाषा शिक्षण के पाठ्यक्रम में सन्तों एवं धार्मिक नेताओं के जीवन व शिक्षा के विषय में सरल और रोचक कहानियों को सम्मिलित किया जाय।

ग. यथासम्भव श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग करके छात्रों की नैतिक शिक्षा में रुचि जाग्रत की जाय विशेषतः सुन्दर चित्र, फिल्मस्ट्रिप, सुन्दर कलाकृतियों के रंगीन पुनर्मुद्रण, वास्तुकला के नमूने प्रस्तुत किये जाय।

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

विद्यालय की समय सारिणी में एक सप्ताह में दो घण्टे नैतिक शिक्षा के लिए रखे जाने चाहिए। इन घण्टों में विश्व के धर्मों की रोचक कहानियाँ कही जाय। धर्म के वाह्य आडम्बर को पृथक रखा जाय।

विद्यालयी कार्य के माध्यम से छात्रों में 'सेवा की भावना' एवं 'कार्य ही पूजा है' की भावना जाग्रत की जाय।

विद्यालय में आयोजित शारीरिक शिक्षा एवं खेल का उद्देश्य चरित्र निर्माण हो।

माध्यमिक स्तर

प्रातःकालीन सभा में दो मिनट का मौन रखा जाय। इसके बाद पवित्र पुस्तकों या श्रेष्ठ साहित्य से कुछ अंश पढे जाय। सामूहिक गायन को भी प्रोत्साहित किया जाय।

इतिहास और सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में विश्व के महान धर्मों की शिक्षाओं के मूलतत्व पढ़े जाय। भाषा शिक्षण या सामान्य शिक्षण में विभिन्न धर्मों के विषय मे कथाएँ सम्मिलित की जाय।

सप्ताह मे एक घण्टा नैतिक मूल्यों की शिक्षा के लिए पृथक से रखा जाय। इस कक्षा में विचार–विमर्श को प्रोत्साहित किया जाय। उपयुक्त वक्ताओं को भी आमंत्रित करके नैतिक शिक्षा पर व्याख्यान कराया जाय।

छुट्टियों में या विद्यालयी समय के अतिरिक्त संगठित रूप में समाज सेवा की जाए। इस सेवा का उद्देश्य हो–श्रम के प्रति निष्ठा, मानवता से प्रेम, देशभक्ति और आत्मानुशासन।

विद्यालय में छात्र की उपलब्धियों की जाँच करते समय आचरण एवं चरित्र के गुणों की परीक्षा अवश्य हो।

3. विश्वविद्यालयी स्तर

प्रातः विभिन्न समूहों में छात्र मौन–चिन्तन करें। ऐच्छिक रूप से अध्यापकों के निरीक्षण में यह कार्य हो।

'तुलनात्मक धर्म' में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रचना की जाय और इसे महत्वपूर्ण विषय बनाया जाय।

उपसंहार

उपरोक्त विवरण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता अत्यधिक है। यदि सभी व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का समावेश कर दिया जाय तो लोगों में सकारात्मक विचार उत्पन्न होगा। वे आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे, कहीं भी हिंसा का भाव नहीं रहेगा तथा सभी लोगों में स्वार्थ की भावना त्याग कर परमार्थ की भावना जाग्रत होगी। केवल एक व्यक्ति में ही नैतिक मूल्यों का समावेश होने से ही वैश्विक शान्ति सम्भव नहीं है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए स्वयं में नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने के पश्चात् अन्य लोगों में भी नैतिक मूल्यों का समावेश कराना होगा। यह कार्य वही कर सकता है जो नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हों। यदि हमारे अन्दर नैतिक मूल्यों का अभाव रहेगा तो हम अन्य लोगों में नैतिक मूल्य का विकास नहीं करा सकेंगे। पहले हम स्वयं के अन्दर नैतिक मूल्य धारण करें, उसके पश्चात अन्य लोगों को नैतिक मूल्य धारण करने हेतु प्रेरित करें तभी वैश्विक शांति की स्थापना होगी जिससे

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDU.
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

सम्पूर्ण विश्व में भाईचारा, निःस्वार्थ की भावना, सौहार्द्र एवं प्रेम का वातावरण विकसित होगा तथा प्रत्येक मानव शान्तिपूर्वक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेगा ।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा ही वैश्विक शान्ति सम्भव है क्योंकि इसके द्वारा ही व्यक्ति में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लडाई–झगडे इत्यादि कुप्रवृत्तियों को रोका जा सकता है। यदि सभी जीवों में एक ही ईश्वर की सत्ता है तो मानव जाति में जाति–भेद, रंग–भेद, नस्ल–भेद, लिंग–भेद, ऊँच–नीच भेद अनुचित है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा बालकों में भेद–भाव रहित विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास उत्पन्न करके मानव मात्र की एकता पर बल तथा मानव जाति के अधिकतम कल्याण की प्रवृत्ति का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गाँधी, महात्मा : 'यंग इण्डिया' 15 मार्च 1926।

गाँधी, मोहन दास करमचन्द (1989) : 'मेरे सपनों का भारत', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

गुप्ता, राम बाबू(1993) : 'महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री' रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।

धनकर, रोहित (2004) : 'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला , हरियाणा ।

पाण्डेप रामशकल (2005) : 'शैक्षिक निबंध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

पाण्डेय, एच0 एल0 (2000) : 'गांधी, नेहरू, टैगोर एवं अम्बेडकर' प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद।

वार्ष्णेय, सोनी : 'नवनीत' फरवरी 2014

Website:- : www.navneethindi.com

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar vari Anandpura Road
Aurangabad Bihar 824101

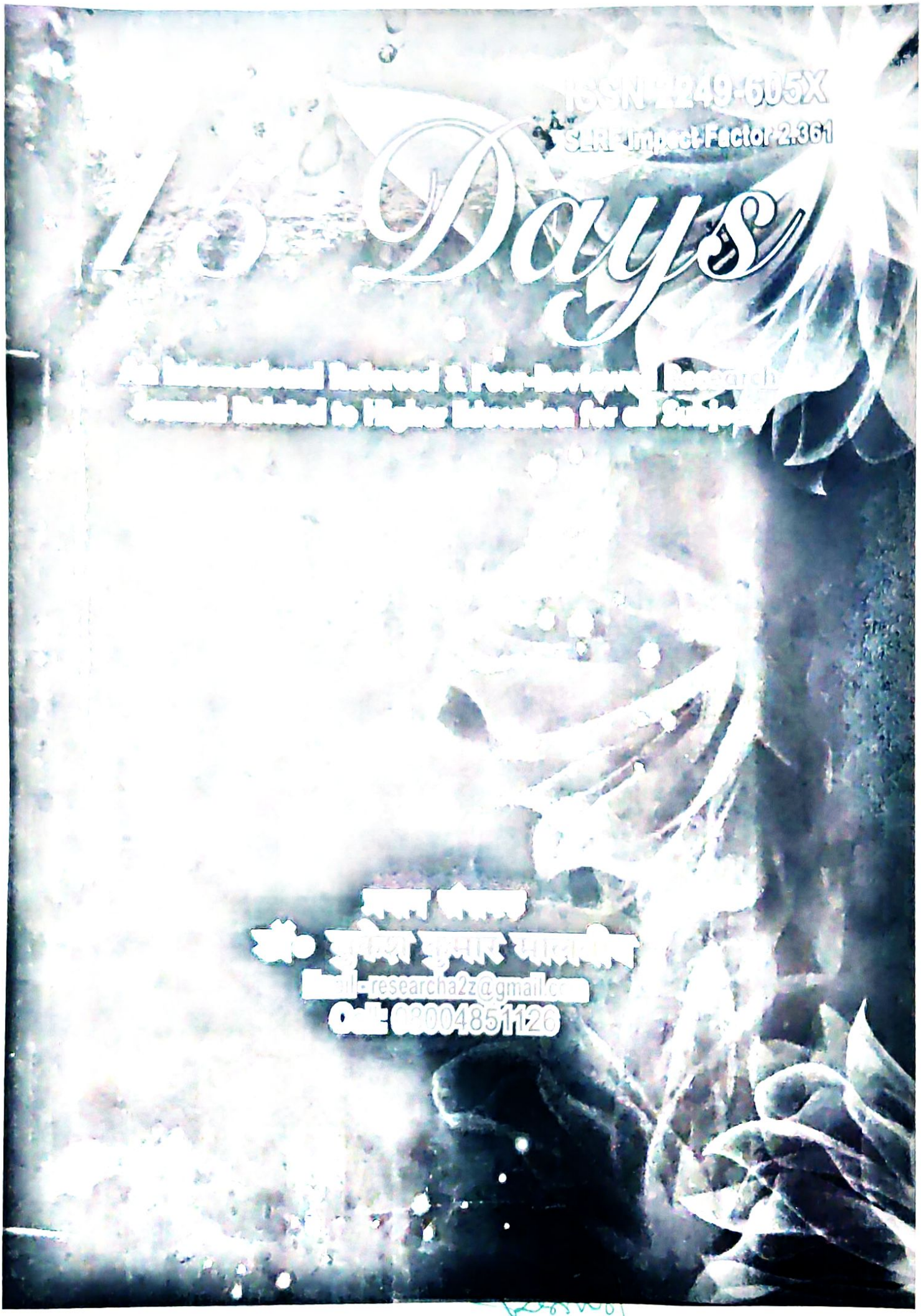

Pri
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Road

UGC Approved No.63423, SLRF Impact Factor: 2.361, ISSN 2249-605X

15Days

An International Research Refereed Journal Related to Higher Education for all Subject. Vol.155 Jan.2018

EDITOR IN CHIEF

MUKESH KUMAR MALVIYA
ASST. PROFESSOR
LAW SCHOOL, BHU, VARANASI (U. P.)
MO. +91-8004851126

SPECIAL MEMBER OF ADMINISTRATION

SHRI SHYAM BABU PATEL DEPUTY REGISTRAR & CAO (SSH) BANARAS HINDU UNIVERSITY VARANASI

MEMBERS OF EDITORIAL BOARD

DR. MONA PUROHIT HOD, LAW DEPARTMENT, BU, BHOPAL.
DR. ARCHANA RANKA HOD , SCHOOL OF LAW, DAVV, INDORE.
SHRI P.P.SINSH, HOD, LAW DEPARTMENT, DR.HSGVV SAGAR.
DR.AMRENDRA KUMAR MISHRA HOD, LAW DEPARTMENT, DDU GORAKHPUR.
DR. SHEPHALI YADAV HOD, LAW DEPARTMENT, MJPRV, BAREILLY.
DR. VANI BHUSHAN FORMER HOD, PG DEPARTMENT OF LAW, UNIVERSITY OF PATNA.
DR. J.K.JAIN PRINCIPAL NEW GOVT. LAW COLLEGE, INDORE.
DR. R.K. MURALI ASSO. PROFESSOR, LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.
DR. AHMED NASEEM, ASST. PROFESSOR, LAW DEPARTMENT, DDU, GORAKHPUR.
SHRI ROSHAN LAL ASST. PROFESSOR, LAW DEPARTMENT, UNIVERSITY OF ALLAHABAD.

PATRON

PROFESSOR SUKHPAL SINGH
VICE CHANCELLOR, HIDAYATULLAH NATIONAL LAW UNIVERSITY, RAIPUR.

SPECIAL RESEARCH SCHOLARS EDI. BOARD

PRIYANKA VAIDYA ASSISTANT PROFESSOR GOVT. P. G. COLLEGE NALAGARH DISTT. SOLAN (H. P.)
SHRI RANA NAVNEET ROY JUNIOR RESEARCH FELLOW, LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.

EDITORIAL ADVISORY BOARD

DR. SANTOSH KUMAR TIWARI ASST. PROFESSOR LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
DR. JADHAV SUNIL GULAB SINGH, ASST. PROFE, YASHVANT COLLEGE, NADED, (MH).
DR. SAMTA JAIN ASST.PROFESSOR (ECONOMICS), MATA GUJARI WOMENS COLLEGE, JABALPUR.
DR. AMIT KUMAR PANDEY HINDI DEPARTMENT, BHU VARANASI.
DR. DEEPAK SHARMA ASST. PROFESSOR PKR JAIN COLLEGE OF EDUCATION, AMBALA CITY.
DR. SHARAD DHAR SHARMA SENIER RESEARCH ASSOCIAT BHU VARANASI.
DR.SURENDRA PANDEY, DEPARTMENT OF HINDI, BHU VARANASI.
SHRI SUNIL KUMAR LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.
SHRI DILIP KUMAR ASST. PROFESSOR, LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
KOMAL PRASAD YADAV ASST. PROFESSOR, LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
KU. ANIMA SHUKLA ANUSHRI COLLEGE OF NURSING, JABALPUR.

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

1.	AN EXHAUSTIVE STUDY ON THE SKILL DEVELOPMENT FOR SURE SUCCESS THOUGH SELF DEVELOPMENT -A GUIDE TO ACHIEVE A DREAM JOB AND TO STRENGTHEN THE CAREER *Prof. Dr. V. Sundaresan	1–8
2.	THEORY OF PUNISHMENT AND SENTENCING *Parvati Rana	9–11
3.	Corporate Governance and Corporate Social Responsibility *Dr. Krishna Mukund	12–20
4.	भारत में धर्म की राजनीति *पूजा राय	21–25
5.	पर्यावरण एवं जनसंख्या *नीलम कुरील	26–28
6.	राँची नगर के उराँव जनजाति की सामाजिक–आर्थिक में परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। *डॉ0 गंगा केवट	29–31
7.	भारत में अनुसूचित जाति और सामाजिक न्याय की प्रासंगिकता *डा0 अमिता रानी	32–45
8.	भारत में परिवार के बदलते स्वरूप *डा0 आनन्द तनुजा	46–49
9.	राजस्थान में महिलाओं की सहभागिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा स्थिति एवं राजस्थान में सामाजिक चेतना *डॉ. सुमित्रा देवी शर्मा	50–56
10.	शिक्षा और समाज पर तकनीक का प्रभाव *डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे	57–59
11.	हिन्दुस्तानी सभ्यता –सर्वोच्च सभ्यता *वीणा शुक्ला	60–61

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikenagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

शिक्षा और समाज पर तकनीक का प्रभाव

*डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के, जौनपुर

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह प्राकृतिक शक्तियों को अपने वशीभूत करके अच्छे प्रभावों से लाभान्वित होता तथा बुरे प्रभावों से बचने का प्रयास करता रहता है। अपने इस कार्य–सिद्धि के लिए मानव ने विज्ञान का सहारा लिया है। इसी के द्वारा वह अपने जीविकोपार्जन के साधनों को नियंत्रित करता है तथा सामाजिक संबंधों और अपने बौद्धिक विकास को व्यक्त करता है। आज का वर्तमान समाज तकनीकी ज्ञान से ओत–प्रोत है। जिसका प्रभाव मनुष्य के लगभग सभी पहलुओं पर पड़ा है। यही कारण है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्था भी काफी हद तक बदल सी गई है। साथ ही साथ तकनीक के आ जाने से शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। जहाँ शिक्षा प्राचीन काल में केवल औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप में प्राप्त होती थी, वहीं आज तकनीक ने एक नये विधा को जन्म दिया है जिसे निरौपचारिक शिक्षा कही जा सकती है। जो वर्तमान समय में लगभग आधी शिक्षित आबादी को अपने से जोड़ रखी है।

शिक्षा : शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ होता है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में 'अ' प्रत्यय लगने से बना है। जिसका अर्थ है–सीखना और सीखाना। शिक्षा को अंग्रेजी में 'एजुकेशन' शब्द से नवाजा गया है जो लैटिन भाषा के एजूकेटम (म्कनबंजपवद) शब्द से बना है। म्कनबंजपवद दो शब्दों से मिलकर बना है–

E+Duco. E का अर्थ है 'out of' और 'Duco' का अर्थ है– 'To lead forth or to extract out'। अतः एजुकेशन का अर्थ है–बच्चे की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना।

प्रयोग की दृष्टि से शिक्षा शब्द का प्रयोग दो रूपों में होता है–एक प्रक्रिया के रूप में और दूसरा प्रक्रिया के परिणाम रूप में। जब हम कहते है कि उसकी शिक्षा सुचारू रूप से चल रही है तो यहाँ शिक्षा शब्द का प्रयोग प्रक्रिया रूप में है और जब हम यह कहते है कि उसने शिक्षा प्राप्त किया है तो यहां शिक्षा शब्द का प्रयोग परिणाम रूप में है। शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप की व्याख्या करने में मुख्य भूमिका दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, मनौवैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों ने अदा की है इन सबने शिक्षा को अपने–अपने दृष्टिकोण से परखा और परिभाषित किया है।

जगतगुरू शंकराचार्य की दृष्टि से : "सः विद्या या विमुक्तये, शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार–"मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।"

महात्मा गाँधी के अनुसार–"शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।"

पेस्टालॉजी के अनुसार–"शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि–शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

समाज (Society) : सामान्य रूप से व्यक्तियों के समूह को समाज कहते हैं। मानवशास्त्र में मनुष्यों के किसी भी समूह को समाज की संज्ञा दी जाती है। यहां तक कि आदिम मानवीय समुदाय को भी समाज कहा जाता है।

भूगोल के क्षेत्र में समान सभ्यता वाले लोगों के समुदाय को समाज कहते हैं जैसे–भारतीय समाज, यूरोपीय समाज। धर्मशास्त्र में धर्म विशेष को मानने वालो के समुदाय को समाज कहते हैं; जैसे–हिन्दू समाज, इसाई समाज, जैन समाज, बौद्ध समाज और मुसलमान समाज आदि। समाजशास्त्रीय अर्थ में व्यक्तियों के समूह को समाज नहीं कहते अपितु व्यक्तियों में पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था अथवा जाल को समाज कहते हैं। सभी समाजशास्त्री समाज को अमूर्त मानते हैं। इसकी कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्न है–

टालकॉट पार्सन्स के अनुसार :

समाज को उन मानवीय सम्बन्धों की पूर्ण जटिलता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो साधन तथा साध्य के सम्बन्ध द्वारा क्रिया करने से उत्पन्न होते हैं। वे चाहे वास्तविक हो अथवा प्रतीकात्मक।

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार :"समाज रीतियों एवं कार्य प्रणालियों की, अधिकार तथा पारस्परिक सहयोग की, अनेक समूहों तथा विभागों की मानव व्यवहार के नियन्त्रण और स्वतन्त्रताओं की एक व्यवस्था है। इस सतत् परिवर्तनशील व्यवस्था को हम समाज कहते है।"

तकनीक (Technology) : सामान्यतः तकनीक का अर्थ उपकरणों एवं यन्त्रों से लगाया जाता है। लोगों की यह धारणा सर्वथा भ्रामक है। उपकारणों एवं यन्त्रों का प्रयोग तो मनुष्य अपनी शक्ति के द्वारा करता है। अतः तकनीक वह व्यवस्थित ज्ञान या कुशलता है, जिसकी सहायता से उपकरणों एवं यन्त्रों का प्रयोग भली–भांति किया जाता है। कार्ल मार्क्स ने कहा है– "तकनीक मनुष्य के

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

द्वारा प्रकृति के साथ व्यवहार करने के प्रकार को व्यक्त करती है। यह उत्पादन की वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य अपना जीवन धारण करता है और जिसे वह अपने सामाजिक सम्बन्धो की संरचना के प्रकारों एवं उनसे उत्पन्न होने वाली बौद्धिक धारणाओं को प्रकट करता है।

अतएव हम यह कह सकते हैं कि तकनीक वह विशेष ज्ञान है जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीविकोपार्जन, सुविधा तथा अन्य साधनों का उपकरण तथा यन्त्र के रूप में उपयोग करता है और प्राकृतिक वातावरण पर प्रभाव स्थापित करता है। इस प्रकार वह अपने बौद्धिक क्षमता को व्यक्त करता है तथा प्राकृतिक शक्तियों पर अधिकार पाता है।

हम अपने जीवन को अधिक सुखमय एवं सुविधापूर्ण बनाने के लिए ही तकनीक का प्रयोग करते हैं। आज ऐसी–ऐसी मशीनों का इजाद हो रही है जिसमें मेहनत कम लगता है, व्यय कम लगता है और परिणाम बेहतर प्राप्त होता है तथा समय की बचत के कारण अवकाश भी अधिक मिलता है।

शिक्षा पर तकनीक का प्रभाव (Impact of Technology on Education) : शिक्षा जगत में तकनीक का प्रयोग सर्वप्रथम 1926 में अमेरिका में सिडनी–एल–प्रेसी ने ओहियों राज्य विश्वविद्यालय में शिक्षण मशीन के निर्माण द्वारा आरम्भ किया। इसके पश्चात 1930–40 के दशक में लुम्सडेन तथ ग्लेसर नामक तकनीक वेत्ताओं ने शिक्षा के यन्त्रीकरण करने का प्रयत्न किया। वर्तमान समय में अनेक प्रकार की तकनीकियों का विकास किया जा चुका है, जिनका प्रयोग शिक्षा को और अधिक सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने में किया जा रहा है। इसी का प्रभाव है कि आज विश्व की इतनी विशालयकाय जनसंख्या को शिक्षा सुलभ हो पा रही है। तकनीक ने शिक्षा के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है चाहे वह शिक्षा का लक्ष्य हो, शिक्षण विधि हो, शिक्षण सहायक सामग्री हो या शिक्षा की गुणवत्ता हो। अत. शिक्षा पर तकनीक के कुछ प्रमुख प्रभाव इस तरह देखे गये हैं–

1. **शिक्षा के लक्ष्य में परिवर्तन** : प्राचीन काल में शिक्षा के जो लक्ष्य थे वे आज नही रह गये हैं। शिक्षा के लक्ष्य में आज बहुत परिवर्तन हुआ है। पहले शिक्षा का लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नति, सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण एवं हस्तान्तरण, मोक्ष की प्राप्ति आदि था परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा का लक्ष्य भौतिकवादी हो गया है। वर्तमान समाज भौतिक सम्पन्नता और आध्यात्मिक विपन्नता की ओर उन्मुख हो गया है। आज समाज में वैज्ञानिक उन्नति हो रही है। मशीनों, उपकरणों की संख्या दिनो–दिन बढ़ती जा रही है। जिस शिक्षा में व्यक्ति को समृद्धि एवं भौतिक सम्पन्नता की प्राप्ति नही दिखाई दे रही है उस शिक्षा को व्यर्थ माना जाने लगा है।

2. **विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण** : तकनीक प्रगति के परिणामस्वरूप अनेक शिक्षण सहायक उपकरणों का आविष्कार किया जा रहा है. जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अकल्पनीय परिवर्तन हुआ है। आज श्रव्य–दृश्य सहायक सामग्री से शिक्षा को प्रभावशाली बनाया जा रहा है। शिक्षण प्रक्रिया में रेडियो, टेप रिकार्डर, ग्रामोफोन, मानचित्र मॉडल, ओ.एच.पी. स्लाइड, फिल्म प्रोजेक्टर बुलेटिन बोर्ड आदि का प्रयोग अधिकता से किया जा रहा है। जिसका परिणाम है कि वर्तमान समय में इसकी सहायता से कम समय तथा कम खर्च करके अधिक से अधिक लोगों तक शिक्षा पहुँचायी जा रही है। तकनीक की ही देन है कि आज छात्र घर बैठे–बैठे दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपनी शिक्षा को पूर्ण कर रहे है।

3. **सामाजिक शिक्षा पर तकनीक का प्रभाव** : तकनीक का प्रभाव हमारे परिवार एवं सामाजिक शिक्षा पर भी पड़ा है। परिवार के सभी सदस्य किसी न किसी एक व्यवसाय में लगे हुए हैं। लोग अपने व्यवसाय की ओर जितना ध्यान दे रहे हैं उतना परिवार के सदस्यों पर नहीं, जिसके कारण लोगों में पारस्परिक प्रेम, सद्भावना और सहयोग की कमी हुई है।

अतएव हम कह सकते हैं कि तकनीक एवं औद्योगीकरण का प्रभाव परिवार पर भी पड़ा है। बच्चों को पहले जो शिक्षा परिवार में मिलती थी, अब सम्मिलित परिवार प्रथा समाप्त हो जाने के कारण नहीं मिल पा रही है। अर्थात् बालक में नैतिकता एवं समाजीकरण का अभाव सा हो गया है।

समाज पर तकनीकी का प्रभाव : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य जिस समाज के बीच जन्म लेता है उसमें रहता है उसे उस समाज की भाषा; रहन–सहन, खान–पान आचरण की विधियाँ और रीति–रिवाज आदि सीखने होते हैं। बिना ये सब सीखे वह उस समाज में समायोजन नहीं कर सकता। उसका सदस्य नहीं बन सकता। वह ये सभी कार्य एक दिन में नहीं सीखता, इसमें उसे बहुत समय लगता है।

आज का समाज तकनीकी ज्ञान से ओतप्रोत है। इसका प्रभाव मनुष्य के जीवन के लगभग सभी पक्षों पर पड़ा है। यही कारण है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्था बिल्कुल बदल सी गई है। वेवलेन ने लिखा है, कि सामाजिक विघटन केवल टेक्नोलॉजी के कारण हो रहा है। आगबर्न ने रेडियो का प्रभाव 150 रूपों में दिखाते हुए यह सिद्ध किया है कि तकनीक का ऐसा विश्वव्यापी प्रभाव है कि उससे जीवन ही बदल गया है। यह प्रभाव उन देशों में और भी अधिक देखने को मिल रहा है जिन देशों में तकनीकी प्रगति अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई है।

परिवार पर प्रभाव : तकनीक के प्रभाव ने पारिवारिक ढांचे को बहुत अधिक खण्डित किया है। आज हमारे सामने परिवार का जो संगठन दिखाई दे रहा है वह पहले जैसा नहीं है, उसका अस्तित्व केवल कथन मात्र शेष रह गया है। छोटे बच्चों का पालन–पोषण नर्सरी स्कूलों में हो रहा है, माताएं अपनी उत्तरदायित्व से दूर होती जा रही है। बच्चों को माता–पिता एवं परिवार का प्यार एवं संस्कार नहीं मिल पा रहा है। जिससे बच्चे कुंठित होते जा रहे है।

धार्मिक संस्थाओं पर तकनीक का प्रभाव :

धार्मिक संस्थाओं जैसे–मंदिर, मस्जिद और गिरजाघरों आदि पर भी तकनीक का प्रभाव पड़ा है। लोगों के मन से आध्यात्मिक विश्वास अब दूर होता जा रहा है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति के लोग ईश्वर को मानते ही नहीं है और तर्क देते हैं कि आधुनिकता के दौर में इसे यांत्रिक माना जाने लगा है। इसलिए धार्मिक संस्थाओं का क्षरण होने लगा है। पहले चन्द्रमा को विश्वास

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar ...

का देवता माना जाता था, जिसका अब पर्दाफाश कर दिया गया है। वह कोई देवता नहीं है, वहां अमृत का समुद्र नहीं है, वहां केवल ऊँचे–ऊँचे नुकीले पहाड़, गड्ढे, पत्थर तथा रेत के कण मात्र हैं। मनुष्य अब मंगल तथा अन्य ग्रहों पर भी चढ़ाई करने लगा है।

तकनीक के कुछ अन्य प्रभाव

तकनीक का ही प्रभाव है कि व्यक्ति आज प्रत्येक कार्य समय से करना चाहता है। यदि कार्य में देरी होती है तो उसकी महत्ता समाप्त हो जाती है। यही कारण है कि समाज में एकता, अपनापन और घनिष्टता एवं सहयोग की भावना में कमी आयी है। तकनीक के कारण नगरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। जिसके कारण अनेक प्रकार के रोगों एवं अपराधों की संख्या में इजाफा हुआ है।

आज के युग में धन ही सब कुछ होता जा रहा है। धन प्राप्त करने के लिए उद्योग–धन्धे लगाये जा रहे हैं। पति–पत्नी दोनों ही नौकरी करके धन कमाना चाहते हैं। बच्चों की देखरेख हेतु शिशु परिचर्या खुल रहे हैं, नर्सरी स्कूल, डे बोर्डिंग, स्कूल खोले जा रहे हैं। परन्तु वहां उनकी उतनी तन्मयता से देखभाल एवं विकास नहीं हो पाता है, जितनी घर पर माताओं के द्वारा होता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आज आधुनिक तकनीक का प्रभाव हमारे पुरे समाज, जीवन शैली, रहन–सहन तथा शिक्षा की रूपरेखा, शिक्षा के पाठ्यक्रम, उद्देश्य आदि पर अत्यधिक दृढ़ता के साथ पड़ा है हमें तथा आपको इस तकनीक के सहयोग से शिक्षा एवं समाज को प्रगति के पथ की ओर उन्मुख करने में सहयोग करना चाहिए न कि अवनति की ओर।

संदर्भ

1.शरतेन्दु, सत्य नारायण दूबे : शिक्षा की नवीन दार्शनिक पृष्ठभूमि, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2009 2.लाल, रमन बिहारी : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ 3.शर्मा, आर0ए0 : शिक्षण तकनीकी, विनय रखेजा, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ 4.कुलश्रेष्ट, एस0 पी0: अग्रवाल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ 5.शुक्ला, सी–एस : शिक्षा के समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक आधार, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद। 6.उपाध्याय, राजेश्वर, एवं डॉ0 सरला पाण्डेय : शैक्षिक टेक्नोलॉजी के आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी 7.पाण्डेय, के0 पी0 : शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी 8.तोमर, गजेन्द्र सिंह : शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाली रोड, मेरठ

●●●●●

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

Vol. XVIII
Number 1

ISSN 2319-7129
(Special Issue) February, 2018

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

ISSN : 2319-7129

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. XVIII, Number - 1 February, 2018

(*Special Issue*)

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

CONTENTS

Cultural Diversity in South Asia: Challenges and Prospects 1
Dr. Amandeep Kaur

Preferential Policy: Concept, Debates and Contestation in China. 7
Chandra Sen

The Role of Civil Societies in Promoting Good Governance in Bangladesh 16
Minati Kalo

Conversion of Waste into Energy : A Case Study of Qatar 25
Sonal Kumari

Corruption and its Challenges to the Governance in China 29
Sumanta Kumar Sahu

Women's Educational Policies During Soviet a Period : Historical Analysis 39
Dr. Mahashraddha Yadav

History in Transition: A Reflection on Women's Educational Attainment in Soviet Union 50
Dr. Mahashraddha

Engaging in the Field Work: A Fieldworker's Note on Methodological Exploration on Education and Women's Empowerment 56
Dr. Shashwat Kumar

Contesting Terrain of Marginality in Education: A Study of Women Empowerment and Education in Pratapgarh, Uttar Pradesh 61
Dr. Shashwat Kumar

Special Economic Zones-An In-Depth Analysis of SEZ distribution 68
Dr. Sonu Kumar Mishra

Water Security Challenges in North Eastern Part of India on Sharing Trans-Boundary River of Brahmaputra Between India and China 76
Md. Najibullah Singakhongbam and Hena Bari

Yogic Management of Diabetes 84
Dr. R. Lakshminarayana

India' Act East Policy: A Study of Mekong-Ganga Cooperation 90
Himanshu

Responsible Wildlife Tourism: A Theoretical Review 98
Mahender Reddy Gavinolla and Prof. Sampada Kumar Swain

अशोक द्वारा नियुक्त 'धर्ममहामात्र एक प्रदेयः विश्लेषणात्मक समीक्षा 194
डॉ. सोनी कुमारी

डॉ.- राही मासूम रजा के कृतित्व का सामान्य परिचय 198
डॉ. तब्बसुम खान

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता 208
डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और आदिवासी 215
डॉ. तुंगनाथ मौआर

बिहार में महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज की भूमिका 224
डॉ. पूनम कुमारी

NITI Aayog (National Institution for Transforming India) 229
Dr. Poonam Kumari

Women Empowerment in Present Scenario 233
Dr. Poonam Kumari

A Trend of Intra-Industry Trade: A Sino-Indian Case Study 238
Madhurendra Singh

Taxation System in India 243
Madhurendra Singh

E-Banking 255
डॉ. पीयूष कुमार गुप्ता

राजनैतिक कारण और बाल अपराध 264
डॉ. तन्द्रा शरण

बाल अपराधी या बालापचार बच्चों का माता-पिता के साथ सम्बन्ध 267
डॉ. तन्द्रा शरण

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में शिक्षा पद्धति की पड़ताल 270
डॉ. अनिल शर्मा

Investigation of Psychological Factors Underlying Peptic Ulcer 274
Dr. Nishi Bijiya

Synthesis of Imine Bond Containing Insoluble Polymeric Ligand and its Transition Metal Complexes, Structural Characterization and Catalytic Activity on Esterification Reaction 280
Dr. Prabhakar Kumar

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे*

भूमिका

व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का ह्रास वैश्विक अशांति का प्रमुख कारण है। आधुनिक युग में शिक्षा आध्यात्मिक व नैतिक विकास प्रक्रिया के स्थान पर आर्थिक विकास की प्रक्रिया बन गयी है। शिक्षा के उद्देश्यो में आर्थिक विकास को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है। पाठ्यक्रम में केवल वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा को ही प्रधानता दी जा रही है तथा अध्यात्म, धर्म व नैतिकता को महत्व नहीं दिया जा रहा है जिसके कारण लोगो में अनुशासनहीनता एवं असन्तोष की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वर्तमान वैश्विक परिवेश में नैतिकता व मानवीयता का ह्रास हुआ है। आधुनिक भौतिकवादी युग में मानव ने मानसिक शान्ति ,परस्पर सद्भाव तथा एकाग्रता को खो दिया है जिसके कारण धार्मिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है।

आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी युग में एक ओर जहाँ मनुष्य के सुख– सुविधाओं में वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर आणविक बमों के आविष्कार ने सम्पूर्ण मानव के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। विकास की इस तीव्र आँधी ने जहाँ जीवन के अधिकांश मानवीय मूल्यों, आस्थाओं और प्रतीकों पर प्रहार किया है, वहीं दूसरी तरफ सम्पूर्ण पीढ़ी को परम्परा व आधुनिकता , जड़ता एवं गतिमयता के द्वन्द्व में भटकने के लिए छोड़ दिया है। लोगों में मानवीय , आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्य समाप्त हो रहा है और भौतिकवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है परिणामस्वरूप मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है।

आज व्यक्ति के जीवन में भौतिक सुख–सुविधा एवं समृद्धि के नाम पर बहुत कुछ है, ज्ञान एवं कौशल की कमी नहीं है इसके बावजूद भी चारो तरफ अशान्ति, अराजकता एवं आतंकवाद का साम्राज्य व्याप्त है। मनुष्य, मनुष्य से ही भयभीत होने लगा है तथा लोगों का एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह गया है। यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि वर्तमान सामाजिक परिवेश की सभी समस्याओं की जड़ नैतिक मूल्य शिक्षा विहीन शिक्षा प्रणाली ही है। पहले शिक्षा का उद्देश्य मुक्ति होती थी, चरित्र निर्माण होता था किन्तु आज मुक्ति, आध्यात्मिकता एवं चरित्र निर्माण की बात करना लोग अप्रासंगिक मान रहे हैं। वर्तमान समय में मनुष्य अपनी उन नैतिक मूल्यों से विमुख हो रहे हैं जिसे अंगीकरण करने पर न केवल अपना कल्याण अपितु पीड़ित मानवता को भी शान्ति प्रदान की जा सकती है। नैतिक मूल्यों के अभाव में आज के छात्र एवं शिक्षक अनैतिक गतिविधियों में लिप्त है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयों में हम छात्रों को विविध विषयों का ज्ञान प्रदान करते हैं किन्तु बालकों की आदतों, उनके व्यवहार, उनके आचरण, उनके स्वभाव आदि के परिमार्जन के लिए हम कोई उपाय नहीं करते। हमारा वर्तमान

*प्रवक्ता बी0एड0 कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के जौनपुर

वर्तमान नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की जानकारी ठीक से प्रदान नहीं करता। अतः वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की शिक्षा की प्रत्येक जागरूक नागरिक को आवश्यकता प्रतीत होती है।

औद्योगीकरण ने परिवार के एवं समाज के ढाँचे में परिर्वतन कर दिया है। अतः अब नैतिक मूल्यों की शिक्षा का दायित्व केवल घर या समाज पर ही नहीं छोड़ा जा सकता। विज्ञान की प्रगति ने हमारे चारों ओर के वातावरण में परिर्वतन कर दिया है। जनतन्त्र ने सामाजिक आकांक्षाओं में भी परिर्वतन कर दिया है। आज के युवाओं में उत्साह है, किन्तु इस उत्साह को उचित दिशा देने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली अक्षम है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे नवयुवकों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी स्तर पर नहीं दी जाती। नये परिवेश में नैतिक मूल्यों की शिक्षा और आवश्यक हो गई है।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी राष्ट्र के लिए ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने से बालकों में सहिष्णुता, उदारता, सहयोग, समता, त्याग, संयम, विश्व–बन्धुत्व इत्यादि गुणों का विकास किया जा सकता है। वैश्विक शान्ति के लिए बालक का सर्वांगीण विकास आवश्यक है। वैश्विक शान्ति के लिए मानवीयता प्रथम आधार है क्योंकि वैश्विक शान्ति विश्व कल्याण के लिए है और विश्व कल्याण के लिए मानवीयता व मानव मात्र का कल्याण आवश्यक है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की प्रवृति का विकास किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

नैतिक मूल्यों की अवधारणा का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्यों को विकसित करने हेतु उपाय का अध्ययन करना।

वैश्विक शांति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्य की अवधारणा

वे निश्चित मानदण्ड जिसके आधार पर व्यक्ति, वस्तु, व्यवहार व घटना का अच्छा–बुरा,सही–गलत के रूप में परख की जाती है,मूल्य कहलाते हैं। मूल्य ही धर्म कहलाता है अर्थात धर्म उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जिनकी मन, वचन, कर्म की सत्य अभिव्यक्ति से ही मनुष्य कहलाता है। धर्म का अभिप्राय मानवोचित आचरण संहिता है। यह आचरण संहिता ही नैतिकता है और इस नैतिकता के मानदण्ड ही नैतिक मूल्य हैं। नैतिक मूल्यों के अभाव में कोई भी व्यक्ति, समाज या देश निश्चित रूप से पतनोन्मुख हो जायेगा। नैतिक मूल्य मनुष्य के विवेक में स्थित, आन्तरिक व अन्तः स्फूर्त तत्व हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में आधार का कार्य करते हैं। नैतिक मूल्यों के कारण ही समाज में संगठनकारी शक्तियाँ व प्रक्रिया गति प्राप्त करती है और विघटनकारी शक्तियों का क्षय होता है विश्वबन्धुत्व की भावना, मानवतावाद, समता भाव, प्रेम और त्याग जैसे नैतिक गुणों के अभाव में विश्वशांति , अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, मैत्री आदि की कल्पना भी नहीं की सकती है।

हरबर्ट. जैसे शिक्षाशास्त्री तो सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य ही नैतिकता का विकास मानते हैं। यदि पढ़–लिखकर बालक सच्चरित्र न बन सका तो शिक्षा बेकार है। छात्र में अनुशासन , सत्यवादिता, सहयोग, भ्रातृत्व, धैर्य आदि गुणो का विकास नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा सम्भव है। परिवार, समाज, संस्कृति, राजनैतिक संस्थाओं

के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास, शुभ एवं भद्र के लिए श्रद्धाभाव का विकास एवं अन्याय, द्वेष, विशेषाधि
कार, दबाव आदि के विरोध का साहस नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है।

नैतिक मूल्यों के प्रकार

प्रमुख नैतिक मूल्य निम्नलिखित है–

सत्य

वैश्विक शान्ति हेतु सत्य एक प्रमुख नैतिक मूल्य है। संसार में सत्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। आज लोगों में सत्य से दूर रहने की प्रवृत्ति है। यदि सत्य पर अडिग रहा जाय तो शान्ति सम्भव है। असत्य के मार्ग पर चलने के कारण ही लोगों का जीवन तनावग्रस्त है। प्राचीन समय में लोगों में यह विश्वास रहता था कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य का तात्पर्य केवल सच बोलना ही नहीं वरन् विचार, वाणी और आचार में भी सत्य होना आवश्यक है। सत्य का अनुपालन धर्म, राजनीति, समाज एवं परिवार सर्वत्र होना चाहिए। व्यक्ति जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह के प्रभाव में रहेगा, वह सत्य का दर्शन नहीं कर सकता। जो स्वयं नैतिक रूप से शक्तिमान होता है, वही सत्य मार्ग पर चल सकता है।

अहिंसा

वैश्विक अशान्ति के प्रमुख कारणों में लोगों में व्याप्त हिंसा की प्रवृत्ति भी है। आज लोग छोटी–छोटी बातों पर भी हिंसा का मार्ग अपना लेते हैं जो विद्रोह का प्रमुख कारण बन जाती है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए अहिंसा रूपी नैतिक मूल्य को प्रमुख रूप से ग्रहण करना होगा। प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों, उपनिषदों, एवं मनुस्मृति आदि के अनुसार अहिंसा का अर्थ साधारणतः किसी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाना एवं किसी का प्राण नहीं लेना है। जैन मत के अनुसार "सभी परिस्थितियों में सभी प्राणियों के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का वर्जन है।"

अहिंसा के बारे में महात्मा गाँधी जी का विचार था कि "यदि अहिंसा के पुजारी की सभी क्रियाओं के मूल में करूणा रहे, यदि वह क्षुद्र जीव को यथाशक्ति कष्ट पहुँचाने से बचता रहे और उसे बचाता रहे तथा इस प्रकार हिंसा के चक्कर से निरंतर दूर रहे तो फिर उसका विश्वास अहिंसा में अडिग हो जायेगा।" शत्रुओं से प्यार, बुराई के बदले भलाई और घृणा के बदले प्यार करने की भावना गाँधी जी के अहिंसा की कल्पना का तत्व था। उनकी अन्तर्दृष्टि थी कि यदि हम सत्य स्वरूप ईश्वर को पाना चाहते हैं तो हमें इसके लिए निश्चय ही अहिंसा का मार्ग अपनाना होगा।

प्रेम

वैश्विक शान्ति के लिए प्रेम रूपी नैतिक मूल्य भी अनिवार्यतः धारण करना होगा। हिंसा की प्रवृत्ति प्रेम के अभाव में ही उत्पन्न होती है। यदि हम लोगों के प्रति प्रेम का भाव रखें तो निश्चित ही अन्य लोगों के हमारे प्रति प्रेम का ही भाव रहेगा। आज भाई–भाई में भी सच्चे प्रेम का अभाव है जिसके कारण छोटी–छोटी बातों पर विवाद प्रारम्भ हो जाता है तथा कुछ लोग हिंसा का मार्ग चुन लेते हैं। जब लोगों में आपस में ही प्रेम का भाव नहीं है तो ऐसे लोगों से वैश्विक शान्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

नैतिक मूल्यों में धर्म का भी प्रमुख स्थान है। नैतिकता के लिए धर्म का वही स्थान है, जो जमीन में ...के लिए जल का होता है। धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है तथा यह हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत ... है। चूंकि विश्व के सभी मानव एक ही ईश्वर की सन्तान है अतः सभी मानव आपस में भाई–भाई ... लोगो से नैतिकतापूर्ण व्यवहार करना ही सबसे बड़ा धर्म है। सच्चा धर्म यही शिक्षा देता है कि हमें ...कार्य नहीं करना चाहिए जिससे दूसरे को कष्ट पहुँचे। यदि सभी लोग इस धर्म का पालन करेंगे तो ... रूप से वैश्विक शान्ति की स्थापना होगी।

...दारी

नैतिक मूल्यों में ईमानदारी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ईमानदारी एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगों ... विश्वास एक दूसरे पर बना रहता है। हमें अन्दर एवं बाहर दोनों रूप में ईमानदार रहना चाहिए। ...दारी से आत्मबल मजबूत होता है। कहा भी गया है "ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है (Honesty is the ... Policy.)"

...क मूल्यों के विकास हेतु पाठ्यक्रम

नैतिक मूल्यों की उपस्थापना भी पाठ्यक्रम के माध्यम से ही सम्भव है। अन्धविश्वासों, संकुचित सिद्ध... तथा रूढ़िगत धार्मिक व्यापारों से ऊपर उठकर ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जिसमें धर्म के आधारभूत ...न्तों का निरूपण हो। धर्म वह है जो मनुष्य–मनुष्य में मेल स्थापित करता है। भेद, घृणा, वैमनस्य तथा ...णा उत्पन्न करने वाले सिद्धान्त कभी भी धर्म की श्रेणी नहीं आ सकते। इसलिए आज के यथार्थवादी युग ... शिक्षा के लिए धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का आँचल छोड़ना श्रेयस्कर नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन से पाठ्यक्रम का जो स्वरूप निखरता है, उसमें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर धर्म तथा ...स्कृति, सामाजिक विषयों का अध्ययन, क्षेत्रीय भाषाएँ तथा उनका साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य तथा कृषि सम्बन्ध ... विषयों के अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने वाले कार्यक्रम, शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन ... योजनाएँ, स्थानीय आवश्कताओं के अनुरूप शिल्पीय, व्यावसायिक तथा औद्योगिक विषयों का समावेश ...नीय है। अधिक जीवन्त, उपयोगी, व्यापक तथा सार्थक बनाने के लिए पाठ्यक्रम को इतना लचीला बना ... जाय कि सहपाठ्यक्रम, पाठ्येतर तथा पाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों एवं अध्ययनों का समायोजन अध्यापक ...स्थिति तथा आवश्कतानुकूल स्वयं कर सके। परीक्षोन्मुख पाठ्यक्रम एक जड़ एवं मृत भावना है जिसकी ... आवश्यकता नहीं है।

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु उपाय

विद्यार्थियों नैतिक मूल्यों के विकास के लिए नैतिक शिक्षा को भी एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाय और कुछ पुस्तकें निर्धारित कर दी जाय जिनके आधार पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा ...भाति दी जा सके।

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर क्रमिक रूप में विकसित करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर जिन गुणों के विकास पर अत्यधिक बल हो, उनमें माता–पिता, आचार्य एवं अपने से बड़ो के प्रति श्रद्धाभाव भी है। यह श्रद्धा एवं आदर ऊपरी एवं दिखावटी न होकर मन से हो। इसके लिए छात्रों को समय–समय पर कुछ नियमों की जानकारी देनी पड़ेगी तथा 'श्रवणकुमार', 'राजा हरिश्चन्द्र' इत्यादि नैतिक मूल्य प्रधाननाटक कक्षा के सम्मुख उपस्थित किया जाय।

माध्यमिक स्तर पर राष्ट्र एवं विश्व के प्रति तथा मानवता के प्रति श्रद्धाभाव जाग्रत करना होगा। इसके लिए देश–प्रेमी, बलिदानी, एवं राष्ट्र–भक्तों की जीवनियाँ पढ़नी होगी। ऐसी कहानियों का चयन करना होगा जिनके आधार पर देश–प्रेम का विकास हो सके। उन घटनाओं पर बल देना होगा जो देश एवं विश्व के कार्यों मे प्रमुख हैं।

उच्च स्तर पर छात्रों में अपने पूर्वार्जित प्रेम एवं श्रद्धा की मीमांसा करनी होगी। संसार के विभिन्न धर्मों मे व्याप्त एकता को ढूँढना होगा। इसके लिए उन्हें बुद्ध, कन्फ्यूशियस, सुकरात, ईसा, शंकर, मुहम्मद, कबीर, नानक, गाँधी, विवेकानंद, अरविन्द, दयानन्द आदि की जीवनियाँ पढ़ाई जायें। संसार के धार्मिक ग्रन्थों में सार्वभौमिक तत्व को छात्र पहचाने। इसके लिए इन ग्रन्थों से चुने हुए अंश को उन्हें पढ़ना होगा। इस स्तर पर यह सिखाया जाय कि वे धर्म के नैतिक मूल्य को समझ सकें। उन्हें धर्म का दर्शन पढ़ाया जाय, धर्म के मान्य एवं आदर्श सिद्धान्तों की व्याख्या उनके समक्ष प्रस्तुत की जाय ताकि वे युगानुरूप सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।

आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण नैतिकता से ओत–प्रोत हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का पालन कर सकें और नैतिक सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।विद्यालय का कार्य कुछ क्षण के मौन से आरम्भ हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का मनन करना सीखें। सरल कहानी के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी जाय।

भारत सरकार के सन् 1959 में बम्बई के तत्कालीन राज्यपाल श्री श्रीप्रकाशजी की अध्यक्षता में नैतिक मूल्यों के शिक्षा की एक समिति नियुक्त की गई थी, जिसके अध्यक्ष के अतिरिक्त अन्य तीन सदस्य थे– राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी० सी० चटर्जी, जम्मू–कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री फैजी और भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के संयुक्त सचिव श्री प्रेमकृपाल। इस समिति ने नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर विस्तार में विचार किया और अपने अन्य प्रतिवेदनों के अतिरिक्त निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुझाव दिये–

1. प्रारम्भिक स्तर

क. सामूहिक गायन के लिए प्रातः कुछ मिनटों के लिए छात्र सभा का आयोजन हो।

ख. भाषा शिक्षण के पाठ्यक्रम में सन्तों एवं धार्मिक नेताओं के जीवन व शिक्षा के विषय में सरल और रोचक कहानियों को सम्मिलित किया जाय।

ग. यथासम्भव श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग करके छात्रों की नैतिक शिक्षा में रुचि जाग्रत की जाए विशेषतः सुन्दर चित्र, फिल्मस्ट्रिप, सुन्दर कलाकृतियों के रंगीन पुनर्मुद्रण, वास्तुकला के नमूने प्रस्तुत किये जाय।

कालांश की समय सारिणी में एक सप्ताह में दो घण्टे नैतिक शिक्षा के लिए रखे जाने चाहिए। इन घण्टों में विश्व के धर्मों की रोचक कहानियाँ कही जाय। धर्म के बाह्य आडम्बर को पृथक रखा जाय।

सेवाकार्यों के माध्यम से छात्रों में 'सेवा की भावना' एवं 'कार्य ही पूजा है' की भावना जाग्रत की जाय।

खेलकूद में आयोजित शारीरिक शिक्षा एवं खेल का उद्देश्य चरित्र निर्माण हो।

प्राथमिक स्तर

प्रातःकालीन सभा में दो मिनट का मौन रखा जाय। इसके बाद पवित्र पुस्तकों या श्रेष्ठ साहित्य से कुछ अंश पढ़े जाय। सामूहिक गायन को भी प्रोत्साहित किया जाय।

इतिहास और सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में विश्व के महान धर्मों की शिक्षाओं के मूलतत्व पढ़े जाय। भाषा शिक्षण या सामान्य शिक्षण में विभिन्न धर्मों के विषय मे कथाएँ सम्मिलित की जाय।

सप्ताह मे एक घण्टा नैतिक मूल्यों की शिक्षा के लिए पृथक से रखा जाय। इस कक्षा में विचार–विमर्श को प्रोत्साहित किया जाय। उपयुक्त वक्ताओं को भी आमंत्रित करके नैतिक शिक्षा पर व्याख्यान कराया जाय।

छुट्टियों मे या विद्यालयी समय के अतिरिक्त संगठित रूप में समाज सेवा की जाए। इस सेवा का उद्देश्य हो–श्रम के प्रति निष्ठा, मानवता से प्रेम, देशभक्ति और आत्मानुशासन।

विद्यालय में छात्र की उपलब्धियों की जाँच करते समय आचरण एवं चरित्र के गुणों की परीक्षा अवश्य हो।

3. विश्वविद्यालयी स्तर

प्रातः विभिन्न समूहों में छात्र मौन–चिन्तन करें। ऐच्छिक रूप से अध्यापकों के निरीक्षण में यह कार्य हो।

'तुलनात्मक धर्म' में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रचना की जाय और इसे महत्वपूर्ण विषय बनाया जाय।

उपसंहार

उपरोक्त विवरण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता अत्यधिक है। यदि सभी व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का समावेश कर दिया जाय तो लोगों में उच्च विचार उत्पन्न होगा। वे आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे, कहीं भी हिंसा का भाव नहीं रहेगा तथा सभी लोगों में स्वार्थ की भावना त्याग कर परमार्थ की भावना जाग्रत होगी। केवल एक व्यक्ति में ही नैतिक मूल्यों का समावेश होने से ही वैश्विक शान्ति सम्भव नहीं है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए स्वयं में नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने के पश्चात् अन्य लोगों में भी नैतिक मूल्यों का समावेश कराना होगा। यह कार्य वही कर सकता है जो नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हों। यदि हमारे अन्दर नैतिक मूल्यों का अभाव रहेगा तो हम अन्य लोगों में नैतिक मूल्य का विकास नहीं करा सकेंगे। पहले हम स्वयं के अन्दर नैतिक मूल्य धारण करें, उसके पश्चात् अन्य लोगों को नैतिक मूल्य धारण करने हेतु प्रेरित करें तभी वैश्विक शांति की स्थापना होगी जिससे

सम्पूर्ण विश्व में भाईचारा, निःस्वार्थ की भावना, सौहार्द एवं प्रेम का वातावरण विकसित होगा तथा प्रत्येक मानव शान्तिपूर्वक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेगा ।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा ही वैश्विक शान्ति सम्भव है क्योंकि इसके द्वारा ही व्यक्ति में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लड़ाई–झगड़े इत्यादि कुप्रवृत्तियों को रोका जा सकता है। यदि सभी जीवों में एक ही ईश्वर की सत्ता है तो मानव जाति में जाति–भेद, रंग–भेद, नस्ल–भेद, लिंग–भेद, ऊँच–नीच भेद अनुचित है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा बालकों में भेद–भाव रहित विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास उत्पन्न करके मानव मात्र की एकता पर बल तथा मानव जाति के अधिकतम कल्याण की प्रवृत्ति का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गाँधी, महात्मा : 'यंग इण्डिया' 15 मार्च 1926।

गाँधी, मोहन दास करमचन्द (1989) : 'मेरे सपनों का भारत', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

गुप्ता, राम बाबू(1993) : 'महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री' रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।

धनकर, रोहित (2004) : 'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला , हरियाणा ।

पाण्डेय रामशकल (2005) : 'शैक्षिक निबंध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

पाण्डेय, एच0 एल0 (2000) : 'गांधी, नेहरू, टैगोर एवं अम्बेडकर' प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद।

वार्ष्णेय, सोनी : 'नवनीत' फरवरी 2014

Website:- : www.navneethindi.com

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar vari Anandpura Road
Aurangabad Bihar 824101

ISSN 22[illegible]-2552

अधिकार

ADHIKAR

...ational Refe... Journal Related to High... Educa...

Adhikar

प्रधान संपादक

डॉ० मुकेश कुमार मालवीय

E-Mail: adhikara2z@gmail.com

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATK
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

GC Approved No.45496, SLRF Impact Factor: 2.360, ISSN 2231-2552

अधिकार

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिका)

ADHIKAR

An International Research Journal Related to Higher Education for all Subject

प्रधान संपादक
मुकेश कुमार मालवीय
(सहायक प्राध्यापक)
विधि–संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ0प्र0)
संपर्क–08004851126

संपादक एवं समन्वयक
ओमकार प्रसाद मालवीय
राकेश कुमार मालवीय

कार्यकारी संपादक
डॉ. रजनीश कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक विधि–संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

संपादकीय
ओमकार प्रसाद मालवीय
(संपादक एवं समन्वयक)
अधिकार शोध–पत्रिका
मुकाम पोस्ट–चाँद, तहसील–चौरई
जिला– छिन्दवाड़ा (म.प्र0) 480110

संरक्षक
प्रो. (डॉ.) निशा दुबे
कुलपति, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
प्रो. बी. सी. निर्मल
विधि–संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संपादक मण्डल
प्रो. तिकाशा शोबा
मानवाधिकार संगठन, काठमांडू नेपाल
प्रो. सरोज बिल्लोरे
राजनीति–विज्ञान विभाग, ओल्ड जी.डी.सी., इंदौर
डॉ. लोयला टॉय
स्पेस साइन्स, जर्मनी
डॉ. मोना पुरोहित (विभागाध्यक्ष)
विधि–विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. जे.के. जैन (पूर्व प्राचार्य)
शासकीय नवीन विधि महाविद्यालय, इंदौर
डॉ. अजेन्द्र श्रीवास्तव
विधि–संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. एस. के. तिवारी
एकेडेमिक स्टॉफ कॉलेज, बी.एच.यू. वाराणसी
डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव (रीडर)
हिन्दी डॉ.शकुन्तला मिश्रा पुनर्वास वि.वि.,लखनऊ

शोधपत्र भेजने हेतु नियमः–शोधपत्र हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में E-mail:adhikara2z@gmail.com पर भेज सकते हैं। हिन्दी, कृतिदेव–10 में तथा अंग्रेजी, न्यू-रोमन में होना चाहिए। शोधपत्र सारगर्भित अधिकतम शब्द सीमा 2500 शब्द या लगभग 10 पेज में होना चाहिए। शोधपत्र के अन्त में शोधार्थी का नाम, मोबाईल नं0, ई–मेल सहित पूरा पता लिखा होना चाहिए। सहयोग राशि प्रत्येक शोधपत्र के लिए SBI DD 1500/–Mukesh Kumar Malviya,Varanasi" के नाम से बनवायें। अधिक जानकारी के लिए प्रधान संपादक से संपर्क करें।

शर्तेंः–1.शोध–पत्रिका में समस्त पद अवैतनिक हैं। सभी रचनाओं एवं शोधों में विचार लेखकों के हैं; अतः उनके विचार से संपादक मंडल या शोध–पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस शोध–पत्रिका के प्रकाशन, संपादन, एवं मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये। त्रुटि हेतु संपादक, मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। किसी भी विवाद का क्षेत्राधिकार न्यायालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) होगा।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रण, प्रकाशन, संपादक द्वारा चाँद, जिला–छिन्दवाड़ा से प्रकाशित एवं सूर्या बुक एण्ड फार्म कम्प्यूटर सेन्टर, लंका, बी0एच0यू0, वाराणसी से मुद्रित।

Bighanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

CONTENTS

1.	DOMESTIC VIOLENCE IN INDIA: AN OVERVIEW *Manju Arya	1–6
2.	Corporate Social Responsibility in India *Dr. Krishna Mukund	7–13
3.	भारत में डॉ0 अम्बेडकर का अनुसूचित जाति सशक्तीकरण और अस्पृश्यता की समस्या पर–सामाजिक न्याय अनुप्रयोग *डा0 अमिता रानी	14–20
4.	भारतीय मध्यमवर्गीय हिन्दू पारम्परिक परिवारों पर आधुनिकता का प्रभाव *डा0 आनन्द तनुजा	21–26
5.	झारखण्ड के मुण्डा जनजाति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। (राँची नगर के संदर्भ में) *डॉ0 गंगा केवट	27–30
6.	गाँधी दर्शन की प्रमुख विशेषताऐं *वीणा शुक्ला	31–33
7.	कोशी क्षेत्र में बाढ़ की समस्या एवं बाँध निर्माण : "एक ऐतिहासिक अध्ययन" *मो0 रफत परवेज	34–36
8.	रेणु की कहानियों में लोक–संस्कृति *डॉ0 चन्दन कुमार सिंह	37–38
9.	Child Labour and its Socio - Economic Determinants: A Case Study of Nalanda District *Prativa Kumari	39–46
10.	बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका *डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे	47–49

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका

*डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के, जौनपुर

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षक की कल्पना चिन्तन करने के बजाय, चिन्तित रहने वाले एक मनुष्य के रूप में की जा सकती है। अधिकांश अभिभावकों को लगता है कि उनके बच्चों को पढ़ाने की पूरी जिम्मेदारी शिक्षकों की ही है। सरकारी विद्यालयों मे पढ़ाने वाले शिक्षक यह महसूस करते हैं कि इन विद्यार्थियों के अभिभावक अपने बच्चों पर तनिक भी ध्यान नहीं देते हैं जबकि निजी विद्यालयों के शिक्षकों के ऊपर बेहतर प्रदर्शन करने का दबाव होता है। निजी विद्यालयों के शिक्षकों को कम वेतन मिलने के कारण तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड रहा है। शिक्षक एक ऐसा सामाजिक प्राणी है जो शैक्षिक प्रशासन के भय युक्त वातावरण में जीता है और विद्यालय में बच्चों के लिए 'भयमुक्त माहौल' बनाने का रचनात्मक काम करता है। वह विद्यार्थियों को सवाल पूछने और जबाब देने के लिए प्रेरित करता है। अध्यापकों को कई अवसरों पर अधिकारियों की फटकार, अभिभावकों द्वारा दुर्व्यवहार एवं छात्रों के अनुशासनहीनता का शिकार होना पड़ता है। वह शिक्षाविदों की बुनी भूलभुलैया की प्रयोगशाला में लम्बे समय से अपने धैर्य की परीक्षा दे रहा है। बच्चों को अपने सामने परीक्षा से भयमुक्त और पढ़ाई की जिम्मेदारी से मुक्त होते हुए देख रहा है। उसे बच्चों को शिक्षा बिना किसी दण्ड एवं दबाव के देना है। विद्यार्थियों को भी इस बात की जानकारी रहती है कि हम कितना भी शरारत करेंगे, शिक्षक हमें दण्ड नहीं देंगे परिणामस्वरूप अधिकांश विद्यालयों में अनुशासनहीनता देखने को मिल रही है।

महिला शिक्षकों की भी अपनी समस्यायें हैं। उन पर घर की तमाम जिम्मेदारियों के कारण उनको खुद पढने का समय नहीं मिल पाता। नये ज्ञान की अपूर्णता के कारण उनमें कक्षा में अच्छा प्रदर्शन का अभाव रहता है जिसके कारण वे तनावग्रस्त रहती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आज शिक्षा के बदलते स्वरूप और भारतीय शिक्षा प्रणाली को देखते हुए इस पर गम्भीर विचार–विमर्श की आवश्यकता है कि शिक्षा क्या है और वह कौन सा परिवेश है जिसमें शिक्षा बदल रही है। शिक्षा के इस बदलते परिवेा में शिक्षकों के क्या कर्त्तव्य होने चाहिए। देखा जाय तो जैसे ही मनुष्य अपनी प्राकृतिक अवस्था से निकलकर सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में संगठित हुआ, शिक्षा उसका अभिन्न अंग बन गई। प्रारम्भिक अवस्था में जहाँ मनुष्यों की प्रमुख आवश्यकता भूख मिटाना, अपने जीवन की रक्षा करना तथा इस दुनिया के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हमारे मन में ज्ञान के प्रति अनुराग उत्पन्न करे। शिक्षा मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं को दूर रखने के साथ–साथ आध्यात्मिक पूर्णता भी प्रदान करती हैं। यह जीवन में सन्तोष और स्थिरता को जन्म देती है। साथ ही व्यक्ति को नवीनीकृत करते हुए उसे भविष्यद्रष्टा, समकालीन और नए विचारों से परिपूर्ण भी करती है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्राचीन शिक्षा प्रणाली से अत्यधिक परिवर्तन परिलक्षित होता है। शिक्षा में इतनी विषमता पहले कभी नहीं थी जितनी उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में दिखती है। एक तरफ कुछ विद्यालय बहुत महंगे है तथा दूसरी ओर अधिकतर ऐसे विद्यालय है जहाँ न पर्याप्त बुनियादी सुविधाएं हैं, न विद्यार्थियों के अनुपात में शिक्षक। व्यावसायिक पाठ्यक्रम वाले कालेजों में नामांकन को लेकर मारामारी मची रहती है क्योंकि इन पाठ्यक्रमों से अच्छे कैरियर का रास्ता खुलता है। इन कॉलेजों में प्रवेश पाना पैसे की ताकत पर निर्भर करता है। इन परिस्थितियों ने समाज को प्रभावित करना और बदलना शुरू कर दिया। नब्बे के दशक में लागू की गई आर्थिक नीतियों के कारण स्वयं को कई जिम्मेदारियों से मुक्त करना शुरू कर दिया और राज्य के द्वारा संचालित अनेक क्षेत्रों को बाजार के हवाले कर दिया। परिणामस्वरूप, शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण की बाढ़ सी आ गई। बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों और गाँवों तक प्राइवेट विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की भरमार हो गई। शिक्षा अब सरकारी नीतियों से तय न होकर बाजार के नियमों से संचालित होने लगी। आज के दौर में शिक्षकों का कर्त्तव्य और बढ़ गया है। उपरोक्त परिस्थितियों को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन समीचीन एवं प्रासंगिक है।

अध्ययन का उद्देश्य: प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
2. विद्यालय के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
3. समाज के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
4. ज्ञान परम्परा एवं उसके मूल्य–मर्यादाओं के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।

1. विद्यार्थियों के प्रति कर्त्तव्य

शिक्षक का प्रथम कर्त्तव्य विद्यार्थियों को सुशिक्षित करना है। सुशिक्षा का प्रमुख स्तर है पाठ्य–विषय का समुचित ज्ञान कराना, यानी उन्हें विषयवस्तु के तथ्यों, संकल्पनाओं, परिभाषाओं, सिद्धान्तों आदि की सम्यक जानकारी देना तथा समझदारी विकसित करना। आज प्रायः हम जानकारी के स्तर से ऊपर नहीं उठ पाते। समझदारी विकसित करने में शिक्षक

VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATION
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

की रूचि कम होती है और विद्यार्थी की तो उससे भी कम। विद्यार्थी तो केवल परीक्षा में अच्छा अंक प्राप्त करना चाहता है उसका काम केवल जानकारी से ही चल जाता है। परीक्षा में प्रश्न भी केवल जानकारी से ही सम्बन्धित पूछे जाते है समझदारी के क्षेत्र से नही। शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य है–विद्यार्थी को अपने विषय का 'विद्वान' बना देना। ऐसी विद्वता तब आती है जब विद्यार्थी मे जानकारी और समझदारी से भी आगे बढकर समालोचनात्मक और विवेचनात्मक क्षमता विकसित होती है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी को स्वतंत्र अध्ययन, चिंतन, मनन के लिए प्रेरित किया जाय। उसके सामने चुनौतीपूर्ण प्रश्न रखे जाय, और उसे स्वतंत्र लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाय। इस प्रयास में वह ज्ञानार्जन के साथ–साथ ज्ञान सृजन में भी सक्षम हो पाएगा। विद्यार्थी को इस स्तर तक ले आ देना जहाँ वह स्वप्रयास से ही ज्ञानार्जन और ज्ञानसृजन के मार्ग पर आगे बढ सके, यही सुशिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है। विद्यार्थी के मन में विद्यार्जन के प्रति ऐसी ललक पैदा कर देना तभी सम्भव होगा जब स्वयं शिक्षक के मन में भी ज्ञान के प्रति वही उत्साह और निष्ठा हो। एक अच्छा शिक्षक जीवन पर्यन्त विद्यार्थी होता है। कहा भी गया है कि एक जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपक को प्रज्वलित कर सकता है।

किसी एक विषय का भलीभांति ज्ञान प्रदान करके विद्यार्थी को उस विषय में पारंगत बना देना शिक्षा व्यवस्था और शिक्षक के दायित्व का एक स्तर है। पर इस प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता का विकास करना उसका उच्चतर स्तर है। समय के साथ विषय–विशेष का ज्ञान तो बदलता रहता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्र में यह परिवर्तन अधिक गतिमान होता है। आज का सीखा हुआ ज्ञान कुछ ही वर्षों में अप्रासंगिक हो जाता है। पर बौद्धिक कौशल जीवन पर्यन्त हमारा साथ देता है। इसके सहारे हम किसी भी नए विषय का ज्ञान अर्जित कर सकते है। केवल ज्ञान और विद्या के क्षेत्र में ही नहीं, विकसित बुद्धि वाले लोग जीवन के किसी भी क्षेत्र में सामने आने वाली समस्यायों का सही विश्लेषण कर सकते हैं, उनका समुचित समाधान ढूंढ सकते हैं, और भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकते है। ऐसे बुद्धिमान, सुयोग्य और सक्षम व्यक्तियों का निर्माण करना ही उच्च शिक्षा के गुणवत्ता की सच्ची कसौटी है। बौद्धिक विकास के साथ–साथ विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना तथा उनकी सामाजिक, नैतिक चेतना का विकास करना शिक्षकों के दायित्वों का एक प्रमुख आयाम है। विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षाप्राप्त विज्ञजनों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने ज्ञान और कौशल द्वारा समाज का हित करेंगे, उसके उत्थान में सहायक होंगे। पर सामाजिक–नैतिक चेतना के अभाव में वे केवल अपनी व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि के प्रति ही सचेष्ट रहते है। ऐसे स्वार्थ प्रेरित और स्वकेन्द्रित लोग देश को, समाज को कुछ दे नहीं पाते। उल्टे अपनी बौद्धिक क्षमता और चतुराई से समाज का शोषण ही अधिक करते हैं। अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए वे समाज का अहित करने में भी कोई संकोच नहीं करते।

2. विद्यालय के प्रति कर्त्तव्य

शिक्षक विद्यालय का वेतन भोगी कर्मचारी होता है। विद्यालय उसे आजीविका देती है साथ ही एक उच्च स्तर का सामाजिक दर्जा भी देती है। विद्यालय का शिक्षक होने के कारण ही उसे सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है। अतः यह अपेक्षित है कि उसके मन में अपनी संस्था के प्रति कृतज्ञता का भाव हो। इस भाव से प्रेरित व्यक्ति निष्ठापूर्वक संस्था की सेवा करेगा, उसके उद्देश्यों को आगे बढ़ायेगा और संस्था के उत्थान में अपना पूर्ण योगदान करेगा। इस सेवाभाव और निष्ठाभाव से प्रेरित शिक्षक संस्था के हित को अपने हित के ऊपर रखेगा। कोई भी ऐसा काम नहीं करेगा जिससे संस्था की गरिमा को आंच आती हो। संस्था के प्रति कर्त्तव्यों का दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है, अनुशासन। संस्था द्वारा निर्दिष्ट और अपेक्षित सभी कामों को पूरी लगन और ईमानदारी से करना शिक्षक का नैतिक कर्त्तव्य है। इन कामों में शैक्षणिक और शिक्षणेतर दोनों तरह के काम शामिल होते हैं। प्रत्येक संस्था के अपने नियम–कानून, काम करने के तौर–तरीके होते हैं। संस्था आशा करती है कि उसके कर्मचारियों का आचरण इनके अनुरूप होगा। इसी प्रकार संस्था के कर्मचारियों, अधिकारियों और शिक्षकों में छोटे–बड़े का एक पदानुक्रम होता है। इसकी मर्यादाओं का अनुपालन करना भी शिक्षकों का कर्त्तव्य होता है। यह उनके हित में भी है क्योंकि आज जो कनिष्ठ है कल वही वरिष्ठ होगा। जो अपने से वरिष्ठ जनों को सम्मान देता है, वही आगे चलकर अपने से कनिष्ठ लोगों का सम्मान पाता है।

3. समाज के प्रति कर्त्तव्य

विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था एक सामाजिक संरचना है। इसे समाज ने अपनी कुछ महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित किया है। इसमें प्रमुख हैं, समाजतंत्र को सुचारू रूप से चलाते रहने के लिए विभिन्न प्रकार के ज्ञान–कौशल से युक्त व्यक्तियों का सृजन करना, ऐसे लोगों को तैयार करना जो सामाजिक–आर्थिक विकास को आगे बढा सकें, उसे अधिक गतिमान बना सकें, और इसमें आने वाले नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि विश्वविद्यालय से निकले उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की बौधिक क्षमता एवं कार्यकुशलता के साथ–साथ सामाजिक–चेतना भी विकसित हो, वे समाज को अपना समझें, अपने सामाजिक दायित्वों को जाने और स्वीकार करें और जिनके मन में अपने ज्ञान–कौशल से एक बेहतर समाज बनाने का उत्साह हो। ऐसे उच्चकोटि के प्रबुद्ध, सक्षम और संवेदनशील 'मानव संसाधन' का विकास करना विश्वविद्यालय और उसके शिक्षकों का प्रमुख सामाजिक दायित्व है। सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय में पठन–पाठन के विषय और शोध कार्य हमारे अपने समाज की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखकर तय किए जाये। वैसे तो ज्ञान–विज्ञान का एक बड़ा भाग सार्वभौमिक

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCA
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

होता है पर उसमें बहुत कुछ ऐसा भी होता है जो हर समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करता है। नयी पीढ़ी को देने के लिए इस विशाल ज्ञान भण्डार से क्या चयनित किया जाता है और उन्हें किस रूप में प्रस्तुत किया जाता है यह भी देश–काल में मान्य सामाजिक–सांस्कृतिक दर्शन से प्रभावित होता है। शिक्षकों का एक अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक कर्त्तव्य सामाजिक गतिविधियों की निष्पक्ष, नीतिसम्मत और विवेकपूर्ण समालोचना करना है। अपने ज्ञान और तर्कशक्ति के द्वारा ये इन गतिविधियों के कारकों को, उनके छिपे हुए पहलुओं को और उनके दूरगामी परिणामों को देख–समझ सकते हैं और उन्हें उजागर कर सकते हैं। आज के जटिल समाज में प्राय आर्थिक और राजनैतिक शक्तियाँ अपने निहितार्थ को पूरा करने के लिए लोक–लुभावने नारों और कार्यक्रमों से सामान्य जनता को भ्रमित करने का प्रयास करती रहती हैं। इनसे जनता को आगाह करना और लोकहित के सजग प्रहरी के रूप में काम करना भी प्रबुद्धजन का दायित्व है। लोकतंत्र की सफलता के लिए बुद्धिजीवियों द्वारा सामाजिक समालोचना का यह दायित्व निभाना नितांत आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्वानों और शिक्षकों की योग्यता एवं निष्पक्षता में सामान्यजन का विश्वास हो।

4. ज्ञान परम्परा एवं उसके मूल्य–मर्यादाओं के प्रति कर्त्तव्य

मानव सभ्यता के विकास क्रम में सृजित ज्ञान के विशाल ज्ञानकोष के संरक्षक और संवाहक विश्वविद्यालय के विद्वान शिक्षक ही हैं। इस कोष को अक्षुण्ण बनाये रखना, इसकी अभिवृद्धि करना, उसे नयी धाराओं, उपधाराओं में प्रवाहित करना और उसकी गरिमा को बनाये रखना शिक्षकों का परम धर्म है। अपनी वृत्ति को इस परम्परा के प्रति समर्पण के पवित्र भाव से देखने में, और उसे केवल जीविकोपार्जन का माध्यम के रूप में देखने में जमीन–आसमान का अंतर है। ज्ञान–परम्परा के अपने विशिष्ट और उत्कृष्ट मूल्य हैं। इन मूल्यों के अनुरूप आचरण करना सभी विद्वानों, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं का दायित्व है।

ज्ञान परम्परा का पहला मूल्य है–बौद्धिक ईमानदारी। इस मूल्य के कई भाव हैं। इनमें एक है, किसी भी ज्ञान, विचार अथवा सिद्धान्त की प्रामाणिकता को सुनिश्चित करके, उसे भली–भांति सत्यापित करके ही उसका प्रतिपादन करना। तथ्यों से छेड़छाड करना, अपने अनुकूल तथ्यों को चुनना और अन्य की जानबूझ कर अनदेखी कर देना, बौद्धिक बेईमानी है। बौद्धिक ईमानदारी से ही मिलता–जुलता ज्ञान परम्परा का एक दूसरा मूल्य है, बौद्धिक और वैचारिक खुलापन। एक ही विषय पर दृष्टि–भेद के कारण अलग–अलग विद्वानों के मत भिन्न होते हैं। अपने विचारों से भिन्न विचारों को भी उचित आदर और महत्व देना एक अच्छे विद्वान का लक्षण है। अपने किसी विचार या शोध में त्रुटि सिद्ध हो जाने पर, या उससे बेहतर विचार सामने आ जाने पर, अपनी गलती या कमी को सहर्ष और शालीनतापूर्वक स्वीकार कर लेना, वैचारिक खुलापन है। विद्या और ज्ञान निरंतर गतिमान धारा की भांति होते हैं। पुराने और स्थापित सिद्धान्त, विचार, मत, शास्त्र संशोधित होते रहते हैं एवं परिवर्तित होते रहते हैं।

विद्या से परिष्कृत व्यक्तित्व का एक प्रमुख गुण है–विनम्रता। संस्कृत का प्रसिद्ध नीति–वाक्य है:

विद्या ददाति विनयम्। विद्यया न प्रमदितव्यम्।

अपने ज्ञान का अहंकार विद्वानों का सबसे बड़ा दुर्गुण और शत्रु है। ऐसे अहंवादी जन आत्मप्रशंसा और आत्मतुष्टि में ही निमग्न रह जाते हैं। अपने को सर्वज्ञ मानकर दूसरों को अपने से तुच्छ समझने लगते हैं। वास्तविक विद्या प्रेमी वह है जो विद्यार्थी भाव से सदैव और सबसे सीखता रहता है और अपने ज्ञान–भंडार की अभिवृद्धि करता रहता है। सभी बड़े विद्वानों के व्यक्तित्व में विनम्रता का भाव परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष–बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज निःसन्देह शिक्षा के क्षेत्र में विषमतायें बढ़ी हैं। छात्र अनुशासनहीन होते जा रहे हैं। पाठ्यक्रम में जटिलता आ रही है, प्रशासन एवं प्रबन्धक के प्रति जबाबदेही भी बढ़ती जा रही हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि शिक्षक अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन ईमानदारीपूर्वक करता रहे तो निश्चित रूप से अनेक जटिलताओं के बावजूद भी शिक्षा व्यवस्था उत्तम स्तर की हो जायेगी तथा विद्यार्थी भी पठन–पाठन में पूर्णरूप से रूचि लेने लगेंगे। इसके लिए शिक्षक द्वारा उपरोक्त सभी क्षेत्रों में कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। शिक्षक सर्वप्रथम अपने विद्यार्थियों के प्रति कर्त्तव्य का निर्वहन करें जिससे छात्र रूचिपूर्वक विषयवस्तु का गहनता से अध्ययन करें एवं ज्ञान के साथ–साथ समझ भी विकसित कर सके। विद्यालय, समाज, ज्ञान परम्परा और उसकी मूल्य–मर्यादाओं के प्रति कर्त्तव्यों के निर्वहन से शिक्षक अपने योग्यता एवं निपुणता से आपस में सभी लोगों के साथ अन्तर्क्रिया द्वारा एक स्वस्थ शैक्षिक वातावरण का निर्माण करने में सफल हो सकेंगे।

सन्दर्भ

अग्निहोत्री, रवीन्द्र (1973) : 'भारतीय शिक्षा : दशा तथा दिशा' केदारनाथ–रामनाथ एण्ड कम्पनी मेरठ। 2.घनकर, रोहित (2004):'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला,' हरियाणा। 3.पाण्डेय, रामशकल (1983):'शिक्षा दर्शन' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 4.पाण्डेय, रामशकल (2003):'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 5.पाण्डेय, रामशकल (2005):'शैक्षिक निबन्ध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 6.जर्नल :'शैक्षिक परिसंवाद' Vol. 2, No. 2 जुलाई 2012 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी। 7.Website : www. educationmirror.org 8.www. jansatta.com

●●●●●

Principal
VIVEKANAND VIPF INSTITUTE OF EDUCATIC
Bignanikanagar yari Anandpura Road
Aurangabad (Bihar) 824101

ISSN 2231-2552
SLRF Impact Factor 2.360

अधिकार

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

ADHIKAR

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

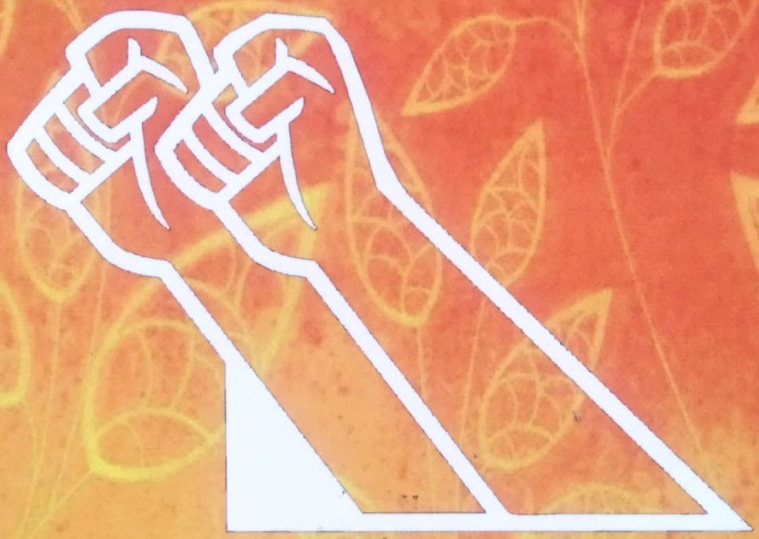

Adhikar

प्रधान संपादक
डॉ० मुकेश कुमार मालवीय
E-Mail: adhikara2z@gmail.com

UGC Approved No.45496, SLRF Impact Factor: 2.360, ISSN 2231-2552

अधिकार

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिका)

ADHIKAR

An International Research Journal Related to Higher Education for all Subject

प्रधान संपादक
मुकेश कुमार मालवीय
(सहायक प्राध्यापक)
विधि–संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ0प्र0)
संपर्क–08004851126

संपादक एवं समन्वयक
ओमकार प्रसाद मालवीय
राकेश कुमार मालवीय

कार्यकारी संपादक
डॉ. रजनीश कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक विधि–संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

संपादकीय
ओमकार प्रसाद मालवीय
(संपादक एवं समन्वयक)
अधिकार शोध–पत्रिका
मुकाम पोस्ट–चाँद, तहसील–चौरई
जिला– छिन्दवाड़ा (म.प्र0) 480110

संरक्षक
प्रो. (डॉ.) निशा दुबे
कुलपति, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
प्रो. बी. सी. निर्मल
विधि–संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संपादक मण्डल
प्रो. तिकाशा शोबा
मानवाधिकार संगठन, काठमांडू नेपाल
प्रो. सरोज बिल्लोरे
राजनीति–विज्ञान विभाग, ओल्ड जी.डी.सी., इंदौर
डॉ. लोयला टॉय
स्पेस साइन्स, जर्मनी
डॉ. मोना पुरोहित (विभागाध्यक्ष)
विधि–विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. जे.के. जैन (पूर्व प्राचार्य)
शासकीय नवीन विधि महाविद्यालय, इंदौर
डॉ. अजेन्द्र श्रीवास्तव
विधि–संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. एस. के. तिवारी
एकेडेमिक स्टॉफ कॉलेज, बी.एच.यू. वाराणसी
डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव (रीडर)
हिन्दी डॉ.शकुन्तला मिश्रा पुनर्वास वि.वि.,लखनऊ

शोधपत्र भेजने हेतु नियमः–शोधपत्र हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में **E-mail:adhikara2z@gmail.com** पर भेज सकते हैं। हिन्दी, कृतिदेव–10 में तथा अंग्रेजी, न्यू-रोमन में होना चाहिए। शोधपत्र सारगर्भित अधिकतम शब्द सीमा 2500 शब्द या लगभग 10 पेज में होना चाहिए। शोधपत्र के अन्त में शोधार्थी का नाम, मोबाईल नं0, ई–मेल सहित पूरा पता लिखा होना चाहिए। सहयोग राशि प्रत्येक शोधपत्र के लिए **SBI DD 1500/–Mukesh Kumar Malviya,Varanasi"** के नाम से बनवायें। अधिक जानकारी के लिए प्रधान संपादक से संपर्क करें।

शर्तेः–1.शोध–पत्रिका में समस्त पद अवैतनिक हैं। सभी रचनाओं एवं शोधों में विचार लेखकों के हैं; अतः उनके विचार से संपादक मंडल या शोध–पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस शोध–पत्रिका के प्रकाशन, संपादन, एवं मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये। त्रुटि हेतु संपादक, मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। किसी भी विवाद का क्षेत्राधिकार न्यायालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) होगा।

2.स्वत्वाधिकारी, मुद्रण, प्रकाशन, संपादक द्वारा चाँद, जिला–छिन्दवाड़ा से प्रकाशित एवं सूर्या बुक एण्ड फार्म कम्प्यूटर सेन्टर, लंका, बी0एच0यू0, वाराणसी से मुद्रित।

CONTENTS

1.	DOMESTIC VIOLENCE IN INDIA: AN OVERVIEW ***Manju Arya**	1–6
2.	Corporate Social Responsibility in India ***Dr. Krishna Mukund**	7–13
3.	भारत में डॉ0 अम्बेडकर का अनुसूचित जाति सशक्तीकरण और अस्पृश्यता की समस्या पर–सामाजिक न्याय अनुप्रयोग ***डा0 अमिता रानी**	14–20
4.	भारतीय मध्यमवर्गीय हिन्दू पारम्परिक परिवारों पर आधुनिकता का प्रभाव ***डा0 आनन्द तनुजा**	21–26
5.	झारखण्ड के मुण्डा जनजाति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। (राँची नगर के संदर्भ में) ***डॉ0 गंगा केवट**	27–30
6.	गाँधी दर्शन की प्रमुख विशेषताऐं ***वीणा शुक्ला**	31–33
7.	कोशी क्षेत्र में बाढ़ की समस्या एवं बाँध निर्माण : ''एक ऐतिहासिक अध्ययन'' ***मो0 रफत परवेज**	34–36
8.	रेणु की कहानियों में लोक–संस्कृति ***डॉ0 चन्दन कुमार सिंह**	37–38
9.	Child Labour and its Socio - Economic Determinants: A Case Study of Nalanda District ***Prativa Kumari**	39–46
10.	बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका ***डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे**	47–49

बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका

*डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के, जौनपुर

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षक की कल्पना चिन्तन करने के बजाय, चिन्तित रहने वाले एक मनुष्य के रूप में की जा सकती है। अधिकांश अभिभावकों को लगता है कि उनके बच्चों को पढ़ाने की पूरी जिम्मेदारी शिक्षकों की ही है। सरकारी विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षक यह महसूस करते हैं कि इन विद्यार्थियों के अभिभावक अपने बच्चों पर तनिक भी ध्यान नहीं देते हैं जबकि निजी विद्यालयों के शिक्षकों के ऊपर बेहतर प्रदर्शन करने का दबाव होता है। निजी विद्यालयों के शिक्षकों को कम वेतन मिलने के कारण तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड रहा है। शिक्षक एक ऐसा सामाजिक प्राणी है जो शैक्षिक प्रशासन के भय युक्त वातावरण में जीता है और विद्यालय में बच्चों के लिए 'भयमुक्त माहौल' बनाने का रचनात्मक काम करता है। वह विद्यार्थियों को सवाल पूछने और जबाब देने के लिए प्रेरित करता है। अध्यापकों को कई अवसरों पर अधिकारियों की फटकार, अभिभावकों द्वारा दुर्व्यवहार एवं छात्रों के अनुशासनहीनता का शिकार होना पड़ता है। वह शिक्षाविदों की बुनी भूलभुलैया की प्रयोगशाला में लम्बे समय से अपने धैर्य की परीक्षा दे रहा है। बच्चों को अपने सामने परीक्षा से भयमुक्त और पढ़ाई की जिम्मेदारी से मुक्त होते हुए देख रहा है। उसे बच्चों को शिक्षा बिना किसी दण्ड एवं दबाव के देना हैं। विद्यार्थियों को भी इस बात की जानकारी रहती है कि हम कितना भी शरारत करेंगे, शिक्षक हमें दण्ड नहीं देंगे परिणामस्वरूप अधिकांश विद्यालयों में अनुशासनहीनता देखने को मिल रही है।

महिला शिक्षकों की भी अपनी समस्यायें हैं। उन पर घर की तमाम जिम्मेदारियों के कारण उनको खुद पढने का समय नहीं मिल पाता। नये ज्ञान की अपूर्णता के कारण उनमें कक्षा में अच्छा प्रदर्शन का अभाव रहता है जिसके कारण वे तनावग्रस्त रहती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आज शिक्षा के बदलते स्वरूप और भारतीय शिक्षा प्रणाली को देखते हुए इस पर गम्भीर विचार–विमर्श की आवश्यकता है कि शिक्षा क्या है और वह कौन सा परिवेश है जिसमें शिक्षा बदल रही है। शिक्षा के इस बदलते परिवेा में शिक्षकों के क्या कर्त्तव्य होने चाहिए। देखा जाय तो जैसे ही मनुष्य अपनी प्राकृतिक अवस्था से निकलकर सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में संगठित हुआ, शिक्षा उसका अभिन्न अंग बन गई। प्रारम्भिक अवस्था में जहाँ मनुष्यों की प्रमुख आवश्यकता भूख मिटाना, अपने जीवन की रक्षा करना तथा इस दुनिया के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हमारे मन में ज्ञान के प्रति अनुराग उत्पन्न करे। शिक्षा मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं को दूर रखने के साथ–साथ आध्यात्मिक पूर्णता भी प्रदान करती हैं। यह जीवन में सन्तोष और स्थिरता को जन्म देती है। साथ ही व्यक्ति को नवीनीकृत करते हुए उसे भविष्यद्रष्टा, समकालीन और नए विचारों से परिपूर्ण भी करती है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्राचीन शिक्षा प्रणाली से अत्यधिक परिवर्तन परिलक्षित होता है। शिक्षा में इतनी विषमता पहले कभी नहीं थी जितनी उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में दिखती है। एक तरफ कुछ विद्यालय बहुत महंगे है तथा दूसरी ओर अधिकतर ऐसे विद्यालय है जहाँ न पर्याप्त बुनियादी सुविधाएं हैं, न विद्यार्थियों के अनुपात में शिक्षक। व्यावसायिक पाठ्यक्रम वाले कालेजों में नामांकन को लेकर मारामारी मची रहती है क्योंकि इन पाठ्यक्रमों से अच्छे कैरियर का रास्ता खुलता है। इन कॉलेजों में प्रवेश पाना पैसे की ताकत पर निर्भर करता है। इन परिस्थितियों ने समाज को प्रभावित करना और बदलना शुरू कर दिया। नब्बे के दशक में लागू की गई आर्थिक नीतियों के कारण स्वयं को कई जिम्मेदारियों से मुक्त करना शुरू कर दिया और राज्य के द्वारा संचालित अनेक क्षेत्रों को बाजार के हवाले कर दिया। परिणामस्वरूप, शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण की बाढ़ सी आ गई। बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों और गाँवों तक प्राइवेट विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की भरमार हो गई। शिक्षा अब सरकारी नीतियों से तय न होकर बाजार के नियमों से संचालित होने लगी। आज के दौर में शिक्षकों का कर्त्तव्य और बढ़ गया है। उपरोक्त परिस्थितियों को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन समीचीन एवं प्रासंगिक है।

अध्ययन का उद्देश्यः प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
2. विद्यालय के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
3. समाज के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।
4. ज्ञान परम्परा एवं उसके मूल्य–मर्यादाओं के प्रति शिक्षकों के कर्त्तव्य का अध्ययन करना।

1. विद्यार्थियों के प्रति कर्त्तव्य

शिक्षक का प्रथम कर्त्तव्य विद्यार्थियों को सुशिक्षित करना है। सुशिक्षा का प्रमुख स्तर है पाठ्य–विषय का समुचित ज्ञान कराना, यानी उन्हें विषयवस्तु के तथ्यों, संकल्पनाओं, परिभाषाओं, सिद्धान्तों आदि की सम्यक जानकारी देना तथा समझदारी विकसित करना। आज प्रायः हम जानकारी के स्तर से ऊपर नहीं उठ पाते। समझदारी विकसित करने में शिक्षक

की रूचि कम होती है और विद्यार्थी की तो उससे भी कम। विद्यार्थी तो केवल परीक्षा में अच्छा अंक प्राप्त करना चाहता है उसका काम केबल जानकारी से ही चल जाता है। परीक्षा में प्रश्न भी केवल जानकारी से ही सम्बन्धित पूछे जाते है समझदारी के क्षेत्र से नहीं। शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य है–विद्यार्थी को अपने विषय का 'विद्वान' बना देना। ऐसी विद्वता तब आती है जब विद्यार्थी में जानकारी और समझदारी से भी आगे बढ़कर समालोचनात्मक और विवेचनात्मक क्षमता विकसित होती है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी को स्वतंत्र अध्ययन, चिंतन, मनन के लिए प्रेरित किया जाय। उसके सामने चुनौतीपूर्ण प्रश्न रखे जाय, और उसे स्वतंत्र लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाय। इस प्रयास में वह ज्ञानार्जन के साथ–साथ ज्ञान सृजन में भी सक्षम हो पाएगा। विद्यार्थी को इस स्तर तक ले आ देना जहाँ वह स्वप्रयास से ही ज्ञानार्जन और ज्ञानसृजन के मार्ग पर आगे बढ सके, यही सुशिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है। विद्यार्थी के मन में विद्यार्जन के प्रति ऐसी ललक पैदा कर देना तभी संभव होगा जब स्वयं शिक्षक के मन में भी ज्ञान के प्रति वही उत्साह और निष्ठा हो। एक अच्छा शिक्षक जीवन पर्यन्त विद्यार्थी होता है। कहा भी गया है कि एक जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपक को प्रज्वलित कर सकता है।

किसी एक विषय का भलीभांति ज्ञान प्रदान करके विद्यार्थी को उस विषय में पारंगत बना देना शिक्षा व्यवस्था और शिक्षक के दायित्व का एक स्तर है। पर इस प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता का विकास करना उसका उच्चतर स्तर है। समय के साथ विषय–विशेष का ज्ञान तो बदलता रहता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्र में यह परिवर्तन अधिक गतिमान होता है। आज का सीखा हुआ ज्ञान कुछ ही वर्षों में अप्रासंगिक हो जाता है। पर बौद्धिक कौशल जीवन पर्यन्त हमारा साथ देता है। इसके सहारे हम किसी भी नए विषय का ज्ञान अर्जित कर सकते है। केवल ज्ञान और विद्या के क्षेत्र में ही नहीं, विकसित बुद्धि वाले लोग जीवन के किसी भी क्षेत्र में सामने आने वाली समस्यायों का सही विश्लेषण कर सकते हैं, उनका समुचित समाधान ढूंढ सकते हैं, और भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकते है। ऐसे बुद्धिमान, सुयोग्य और सक्षम व्यक्तियों का निर्माण करना ही उच्च शिक्षा के गुणवत्ता की सच्ची कसौटी है। बौद्धिक विकास के साथ–साथ विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना तथा उनकी सामाजिक, नैतिक चेतना का विकास करना शिक्षकों के दायित्वों का एक प्रमुख आयाम है। विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षाप्राप्त विज्ञजनों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने ज्ञान और कौशल द्वारा समाज का हित करेंगे, उसके उत्थान में सहायक होंगे। पर सामाजिक–नैतिक चेतना के अभाव में वे केवल अपनी व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि के प्रति ही सचेष्ट रहते है। ऐसे स्वार्थ प्रेरित और स्वकेन्द्रित लोग देश को, समाज को कुछ दे नहीं पाते। उल्टे अपनी बौद्धिक क्षमता और चतुराई से समाज का शोषण ही अधिक करते हैं। अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए वे समाज का अहित करने में भी कोई संकोच नहीं करते।

2. विद्यालय के प्रति कर्त्तव्य

शिक्षक विद्यालय का वेतन भोगी कर्मचारी होता है। विद्यालय उसे आजीविका देती है साथ ही एक उच्च स्तर का सामाजिक दर्जा भी देती है। विद्यालय का शिक्षक होने के कारण ही उसे सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है। अतः यह अपेक्षित है कि उसके मन में अपनी संस्था के प्रति कृतज्ञता का भाव हो। इस भाव से प्रेरित व्यक्ति निष्ठापूर्वक संस्था की सेवा करेगा, उसके उद्देश्यों को आगे बढ़ायेगा और संस्था के उत्थान में अपना पूर्ण योगदान करेगा। इस सेवाभाव और निष्ठाभाव से प्रेरित शिक्षक संस्था के हित को अपने हित के ऊपर रखेगा। कोई भी ऐसा काम नहीं करेगा जिससे संस्था की गरिमा को आंच आती हो। संस्था के प्रति कर्त्तव्यों का दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है, अनुशासन। संस्था द्वारा निर्दिष्ट और अपेक्षित सभी कामों को पूरी लगन और ईमानदारी से करना शिक्षक का नैतिक कर्त्तव्य है। इन कामों में शैक्षणिक और शिक्षणेतर दोनों तरह के काम शामिल होते हैं। प्रत्येक संस्था के अपने नियम–कानून, काम करने के तौर–तरीके होते हैं। संस्था आशा करती है कि उसके कर्मचारियों का आचरण इनके अनुरूप होगा। इसी प्रकार संस्था के कर्मचारियों, अधिकारियों और शिक्षकों में छोटे–बड़े का एक पदानुक्रम होता है। इसकी मर्यादाओं का अनुपालन करना भी शिक्षकों का कर्त्तव्य होता है। यह उनके हित में भी है क्योंकि आज जो कनिष्ठ है कल वही वरिष्ठ होगा। जो अपने से वरिष्ठ जनों को सम्मान देता है, वही आगे चलकर अपने से कनिष्ठ लोगों का सम्मान पाता है।

3. समाज के प्रति कर्त्तव्य

विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था एक सामाजिक संरचना है। इसे समाज ने अपनी कुछ महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित किया है। इसमें प्रमुख हैं, समाजतंत्र को सुचारू रूप से चलाते रहने के लिए विभिन्न प्रकार के ज्ञान–कौशल से युक्त व्यक्तियों का सृजन करना, ऐसे लोगों को तैयार करना जो सामाजिक–आर्थिक विकास को आगे बढ़ा सकें, उसे अधिक गतिमान बना सकें, और इसमें आने वाले नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि विश्वविद्यालय से निकले उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की बौधिक क्षमता एवं कार्यकुशलता के साथ–साथ सामाजिक–चेतना भी विकसित हो, वे समाज को अपना समझें, अपने सामाजिक दायित्वों को जाने और स्वीकार करें और जिनके मन में अपने ज्ञान–कौशल से एक बेहतर समाज बनाने का उत्साह हो। ऐसे उच्चकोटि के प्रबुद्ध, सक्षम और संवेदनशील 'मानव संसाधन' का विकास करना विश्वविद्यालय और उसके शिक्षकों का प्रमुख सामाजिक दायित्व है। सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय में पठन–पाठन के विषय और शोध कार्य हमारे अपने समाज की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखकर तय किए जाये। वैसे तो ज्ञान–विज्ञान का एक बड़ा भाग सार्वभौमिक

होता है पर उसमें बहुत कुछ ऐसा भी होता है जो हर समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करता है। नयी पीढ़ी को देने के लिए इस विशाल ज्ञान भण्डार से क्या चयनित किया जाता है और उन्हें किस रूप में प्रस्तुत किया जाता है यह भी देश–काल में मान्य सामाजिक–सांस्कृतिक दर्शन से प्रभावित होता है। शिक्षकों का एक अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक कर्त्तव्य सामाजिक गतिविधियों की निष्पक्ष, नीतिसम्मत और विवेकपूर्ण समालोचना करना है। अपने ज्ञान और तर्कशक्ति के द्वारा वे इन गतिविधियों के कारकों को, उनके छिपे हुए पहलुओं को और उनके दूरगामी परिणामों को देख–समझ सकते हैं और उन्हें उजागर कर सकते हैं। आज के जटिल समाज में प्राय: आर्थिक और राजनैतिक शक्तियाँ अपने निहितार्थ को पूरा करने के लिए लोक–लुभावने नारों और कार्यक्रमों से सामान्य जनता को भ्रमित करने का प्रयास करती रहती हैं। इनसे जनता को आगाह करना और लोकहित के सजग प्रहरी के रूप में काम करना भी प्रबुद्धजन का दायित्व है। लोकतंत्र की सफलता के लिए बुद्धिजीवियों द्वारा सामाजिक समालोचना का यह दायित्व निभाना नितांत आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्वानों और शिक्षकों की योग्यता एवं निष्पक्षता में सामान्यजन का विश्वास हो।

4. ज्ञान परम्परा एवं उसके मूल्य–मर्यादाओं के प्रति कर्त्तव्य

मानव सभ्यता के विकास क्रम में सृजित ज्ञान के विशाल ज्ञानकोष के संरक्षक और संवाहक विश्वविद्यालय के विद्वान शिक्षक ही हैं। इस कोष को अक्षुण्ण बनाये रखना, इसकी अभिवृद्धि करना, उसे नयी धाराओं, उपधाराओं में प्रवाहित करना और उसकी गरिमा को बनाये रखना शिक्षकों का परम धर्म है। अपनी वृत्ति को इस परम्परा के प्रति समर्पण के पवित्र भाव से देखने में, और उसे केवल जीविकोपार्जन का माध्यम के रूप में देखने में जमीन–आसमान का अंतर है। ज्ञान–परम्परा के अपने विशिष्ट और उत्कृष्ट मूल्य हैं। इन मूल्यों के अनुरूप आचरण करना सभी विद्वानों, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं का दायित्व है।

ज्ञान परम्परा का पहला मूल्य है–बौद्धिक ईमानदारी। इस मूल्य के कई भाव हैं। इनमें एक है, किसी भी ज्ञान, विचार अथवा सिद्धान्त की प्रामाणिकता को सुनिश्चित करके, उसे भली–भांति सत्यापित करके ही उसका प्रतिपादन करना। तथ्यों से छेड़छाड़ करना, अपने अनुकूल तथ्यों को चुनना और अन्य की जानबूझ कर अनदेखी कर देना, बौद्धिक बेईमानी है। बौद्धिक ईमानदारी से ही मिलता–जुलता ज्ञान परम्परा का एक दूसरा मूल्य है, बौद्धिक और वैचारिक खुलापन। एक ही विषय पर दृष्टि–भेद के कारण अलग–अलग विद्वानों के मत भिन्न होते हैं। अपने विचारों से भिन्न विचारों को भी उचित आदर और महत्व देना एक अच्छे विद्वान का लक्षण है। अपने किसी विचार या शोध में त्रुटि सिद्ध हो जाने पर, या उससे बेहतर विचार सामने आ जाने पर, अपनी गलती या कमी को सहर्ष और शालीनतापूर्वक स्वीकार कर लेना, वैचारिक खुलापन है। विद्या और ज्ञान निरंतर गतिमान धारा की भांति होते हैं। पुराने और स्थापित सिद्धान्त, विचार, मत, शास्त्र संशोधित होते रहते हैं एवं परिवर्तित होते रहते हैं।

विद्या से परिष्कृत व्यक्तित्व का एक प्रमुख गुण है–विनम्रता। संस्कृत का प्रसिद्ध नीति–वाक्य है:

विद्या ददाति विनयम्। विद्यया न प्रमदितव्यम्।

अपने ज्ञान का अहंकार विद्वानों का सबसे बड़ा दुर्गुण और शत्रु है। ऐसे अहंवादी जन आत्मप्रशंसा और आत्मतुष्टि में ही निमग्न रह जाते हैं। अपने को सर्वज्ञ मानकर दूसरों को अपने से तुच्छ समझने लगते हैं। वास्तविक विद्या प्रेमी वह है जो विद्यार्थी भाव से सदैव और सबसे सीखता रहता है और अपने ज्ञान–भंडार की अभिवृद्धि करता रहता है। सभी बड़े विद्वानों के व्यक्तित्व में विनम्रता का भाव परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष–बदलते शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज निःसन्देह शिक्षा के क्षेत्र में विषमतायें बढ़ी है। छात्र अनुशासनहीन होते जा रहे हैं। पाठ्यक्रम में जटिलता आ रही है, प्रशासन एवं प्रबन्धक के प्रति जबाबदेही भी बढ़ती जा रही हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि शिक्षक अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन ईमानदारीपूर्वक करता रहे तो निश्चित रूप से अनेक जटिलताओं के बावजूद भी शिक्षा व्यवस्था उत्तम स्तर की हो जायेगी तथा विद्यार्थी भी पठन–पाठन में पूर्णरूप से रूचि लेने लगेंगे। इसके लिए शिक्षक द्वारा उपरोक्त सभी क्षेत्रों में कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। शिक्षक सर्वप्रथम अपने विद्यार्थियों के प्रति कर्त्तव्य का निर्वहन करें जिससे छात्र रूचिपूर्वक विषयवस्तु का गहनता से अध्ययन करें एवं ज्ञान के साथ–साथ समझ भी विकसित कर सके। विद्यालय, समाज, ज्ञान परम्परा और उसकी मूल्य–मर्यादाओं के प्रति कर्त्तव्यों के निर्वहन से शिक्षक अपने योग्यता एवं निपुणता से आपस में सभी लोगों के साथ अन्तर्क्रिया द्वारा एक स्वस्थ शैक्षिक वातावरण का निर्माण करने में सफल हो सकेंगे।

सन्दर्भ

1,अग्निहोत्री, रवीन्द्र (1973) : 'भारतीय शिक्षा : दशा तथा दिशा' केदारनाथ–रामनाथ एण्ड कम्पनी मेरठ। 2,घनकर, रोहित (2004):'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला, हरियाणा। 3,पाण्डेय, रामशकल (1983):'शिक्षा दर्शन' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 4,पाण्डेय, रामशकल (2003):'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 5,पाण्डेय, रामशकल (2005):'शैक्षिक निबन्ध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा। 6,जर्नल :'शैक्षिक परिसंबाद' Vol. 2, No. 2 जुलाई 2012 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी। 7,Website : www. educationmirror.org 8,www. jansatta.com

ISSN 2249-605X
SLRF Impect Factor 2.361

15 Days

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

प्रधान संपादक
डॉ० मुकेश कुमार मालवीय
Email - researcha2z@gmail.com
Cell: 08004851126

UGC Approved No.63423, SLRF Impact Factor: 2.361, ISSN 2249-605X

15Days

An International Research Refereed Journal Related to Higher Education for all Subject. Vol.155 Jan.2018

EDITOR IN CHIEF

MUKESH KUMAR MALVIYA
ASST. PROFESSOR
LAW SCHOOL, BHU, VARANASI (U. P.)
MO. +91-8004851126

SPECIAL MEMBER OF ADMINISTRATION

SHRI SHYAM BABU PATEL DEPUTY REGISTRAR & CAO (SSH) BANARAS HINDU UNIVERSITY VARANASI

MEMBERS OF EDITORIAL BOARD

DR. MONA PUROHIT HOD, LAW DEPARTMENT, BU, BHOPAL.
DR. ARCHANA RANKA HOD , SCHOOL OF LAW, DAVV, INDORE.
SHRI P.P.SINSH, HOD, LAW DEPARTMENT, DR.HSGVV SAGAR.
DR.AMRENDRA KUMAR MISHRA HOD, LAW DEPARTMENT, DDU GORAKHPUR.
DR. SHEPHALI YADAV HOD, LAW DEPARTMENT, MJPRV, BAREILLY.
DR. VANI BHUSHAN FORMER HOD, PG DEPARTMENT OF LAW, UNIVERSITY OF PATNA.
DR. J.K.JAIN PRINCIPAL NEW GOVT. LAW COLLEGE, INDORE.
DR. R.K. MURALI ASSO. PROFESSOR, LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.
DR. AHMED NASEEM, ASST. PROFESSOR, LAW DEPARTMENT, DDU, GORAKHPUR.
SHRI ROSHAN LAL ASST. PROFESSOR, LAW DEPARTMENT, UNIVERSITY OF ALLAHABAD.

PATRON

PROFESSOR SUKHPAL SINGH
VICE CHANCELLOR, HIDAYATULLAH NATIONAL LAW UNIVERSITY, RAIPUR.

SPECIAL RESEARCH SCHOLARS EDI. BOARD

PRIYANKA VAIDYA ASSISTANT PROFESSOR GOVT. P. G. COLLEGE NALAGARH DISTT. SOLAN (H. P.)
SHRI RANA NAVNEET ROY JUNIOR RESEARCH FELLOW, LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.

EDITORIAL ADVISORY BOARD

DR. SANTOSH KUMAR TIWARI ASST. PROFESSOR LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
DR. JADHAV SUNIL GULAB SINGH, ASST. PROFE, YASHVANT COLLEGE, NADED, (MH).
DR. SAMTA JAIN ASST.PROFESSOR (ECONOMICS), MATA GUJARI WOMENS COLLEGE, JABALPUR.
DR. AMIT KUMAR PANDEY HINDI DEPARTMENT, BHU VARANASI.
DR. DEEPAK SHARMA ASST. PROFESSOR PKR JAIN COLLEGE OF EDUCATION, AMBALA CITY.
DR. SHARAD DHAR SHARMA SENIER RESEARCH ASSOCIAT BHU VARANASI.
DR.SURENDRA PANDEY, DEPARTMENT OF HINDI, BHU VARANASI.
SHRI SUNIL KUMAR LAW SCHOOL, BHU, VARANASI.
SHRI DILIP KUMAR ASST. PROFESSOR, LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
KOMAL PRASAD YADAV ASST. PROFESSOR, LAW FACULTY, NGB UNIVERSITY, ALLAHABAD.
KU. ANIMA SHUKLA ANUSHRI COLLEGE OF NURSING, JABALPUR.

CONTENTS

1.	AN EXHAUSTIVE STUDY ON THE SKILL DEVELOPMENT FOR SURE SUCCESS THOUGH SELF DEVELOPMENT –A GUIDE TO ACHIEVE A DREAM JOB AND TO STRENGTHEN THE CAREER ***Prof. Dr. V. Sundaresan**	1–8
2.	THEORY OF PUNISHMENT AND SENTENCING ***Parvati Rana**	9–11
3.	Corporate Governance and Corporate Social Responsibility ***Dr. Krishna Mukund**	12–20
4.	भारत में धर्म की राजनीति ***पूजा राय**	21–25
5.	पर्यावरण एवं जनसंख्या ***नीलम कुरील**	26–28
6.	राँची नगर के उराँव जनजाति की सामाजिक–आर्थिक में परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। ***डॉ0 गंगा केवट**	29–31
7.	भारत में अनुसूचित जाति और सामाजिक न्याय की प्रासंगिकता ***डा0 अमिता रानी**	32–45
8.	भारत में परिवार के बदलते स्वरूप ***डा0 आनन्द तनुजा**	46–49
9.	राजस्थान में महिलाओं की सहभागिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा स्थिति एवं राजस्थान में सामाजिक चेतना ***डॉ. सुमित्रा देवी शर्मा**	50–56
10.	शिक्षा और समाज पर तकनीक का प्रभाव ***डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे**	57–59
11.	हिन्दुस्तानी सभ्यता –सर्वोच्च सभ्यता ***वीणा शुक्ला**	60–61

शिक्षा और समाज पर तकनीक का प्रभाव

*डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी०एड० विभाग कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के, जौनपुर

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह प्राकृतिक शक्तियों को अपने वशीभूत करके अच्छे प्रभावों से लाभान्वित होता तथा बुरे प्रभावों से बचने का प्रयास करता रहता है। अपने इस कार्य–सिद्धि के लिए मानव ने विज्ञान का सहारा लिया है। इसी के द्वारा वह अपने जीविकोपार्जन के साधनों को नियंत्रित करता है तथा सामाजिक संबंधों और अपने बौद्धिक विकास को व्यक्त करता है। आज का वर्तमान समाज तकनीकी ज्ञान से ओत–प्रोत है। जिसका प्रभाव मनुष्य के लगभग सभी पहलुओं पर पड़ा है। यही कारण है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्था भी काफी हद तक बदल सी गई है। साथ ही साथ तकनीक के आ जाने से शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। जहाँ शिक्षा प्राचीन काल में केवल औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप में प्राप्त होती थी, वहीं आज तकनीक ने एक नये विधा को जन्म दिया है जिसे निरौपचारिक शिक्षा कही जा सकती है। जो वर्तमान समय में लगभग आधी शिक्षित आबादी को अपने से जोड़ रखी है।

शिक्षा : शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ होता है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में 'अ' प्रत्यय लगने से बना है। जिसका अर्थ है–सीखना और सीखाना। शिक्षा को अंग्रेजी में 'एजुकेशन' शब्द से नवाजा गया है जो लैटिन भाषा के एजूकेटम (म्कनबंजपवद) शब्द से बना है। म्कनबंजपवद दो शब्दों से मिलकर बना है–

E+Duco. E का अर्थ है 'out of' और 'Duco' का अर्थ है– 'To lead forth or to extract out'। अतः एजुकेशन का अर्थ है–बच्चे की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना।

प्रयोग की दृष्टि से शिक्षा शब्द का प्रयोग दो रूपों में होता है–एक प्रक्रिया के रूप में और दूसरा प्रक्रिया के परिणाम रूप में। जब हम कहते है कि उसकी शिक्षा सुचारू रूप से चल रही है तो यहाँ शिक्षा शब्द का प्रयोग प्रक्रिया रूप में है और जब हम यह कहते है कि उसने शिक्षा प्राप्त किया है तो यहां शिक्षा शब्द का प्रयोग परिणाम रूप में है। शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप की व्याख्या करने में मुख्य भूमिका दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, मनौवैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों ने अदा की है इन सबने शिक्षा को अपने–अपने दृष्टिकोण से परखा और परिभाषित किया है।

जगतगुरू शंकराचार्य की दृष्टि से : ''सः विद्या या विमुक्तये, शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार–''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।''

महात्मा गाँधी के अनुसार–''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''

पेस्टालॉजी के अनुसार–''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।''

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि–शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

समाज (Society) : सामान्य रूप से व्यक्तियों के समूह को समाज कहते हैं। मानवशास्त्र में मनुष्यों के किसी भी समूह को समाज की संज्ञा दी जाती है। यहां तक कि आदिम मानवीय समुदाय को भी समाज कहा जाता है।

भूगोल के क्षेत्र में समान सभ्यता वाले लोगों के समुदाय को समाज कहते हैं जैसे–भारतीय समाज, यूरोपीय समाज। धर्मशास्त्र में धर्म विशेष को मानने वालो के समुदाय को समाज कहते हैं; जैसे–हिन्दू समाज, इसाई समाज, जैन समाज, बौद्ध समाज और मुसलमान समाज आदि। समाजशास्त्रीय अर्थ में व्यक्तियों के समूह को समाज नहीं कहते अपितु व्यक्तियों में पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था अथवा जाल को समाज कहते हैं। सभी समाजशास्त्री समाज को अमूर्त मानते हैं। इसकी कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्न है–

टालकॉट पार्सन्स के अनुसार :

समाज को उन मानवीय सम्बन्धों की पूर्ण जटिलता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो साधन तथा साध्य के सम्बन्ध द्वारा क्रिया करने से उत्पन्न होते हैं। वे चाहे वास्तविक हो अथवा प्रतीकात्मक।

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार :''समाज रीतियों एवं कार्य प्रणालियों की, अधिकार तथा पारस्परिक सहयोग की, अनेक समूहों तथा विभागों की मानव व्यवहार के नियन्त्रण और स्वतन्त्रताओं की एक व्यवस्था है। इस सतत् परिवर्तनशील व्यवस्था को हम समाज कहते है।''

तकनीक (Technology) : सामान्यतः तकनीक का अर्थ उपकरणों एवं यन्त्रों से लगाया जाता है। लोगों की यह धारणा सर्वथा भ्रामक है। उपकारणों एवं यन्त्रों का प्रयोग तो मनुष्य अपनी शक्ति के द्वारा करता है। अतः तकनीक वह व्यवस्थित ज्ञान या कुशलता है, जिसकी सहायता से उपकरणों एवं यन्त्रों का प्रयोग भली–भांति किया जाता है। कार्ल मार्क्स ने कहा है– ''तकनीक मनुष्य के

द्वारा प्रकृति के साथ व्यवहार करने के प्रकार को व्यक्त करती है। यह उत्पादन की वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य अपना जीवन धारण करता है और जिसे वह अपने सामाजिक सम्बन्धो की संरचना के प्रकारों एवं उनसे उत्पन्न होने वाली बौद्धिक धारणाओं को प्रकट करता है।''

अतएव हम यह कह सकते हैं कि तकनीक वह विशेष ज्ञान है जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीविकोपार्जन, सुविधा तथा अन्य साधनों का उपकरण तथा यन्त्र के रूप में उपयोग करता है और प्राकृतिक वातावरण पर प्रभाव स्थापित करता है। इस प्रकार वह अपने बौद्धिक क्षमता को व्यक्त करता है तथा प्राकृतिक शक्तियों पर अधिकार पाता है।

हम अपने जीवन को अधिक सुखमय एवं सुविधापूर्ण बनाने के लिए ही तकनीक का प्रयोग करते हैं। आज ऐसी–ऐसी मशीनों का इजाद हो रही है जिसमें मेहनत कम लगता है, व्यय कम लगता है और परिणाम बेहतर प्राप्त होता है तथा समय की बचत के कारण अवकाश भी अधिक मिलता है।

शिक्षा पर तकनीक का प्रभाव (Impact of Technology on Education) : शिक्षा जगत में तकनीक का प्रयोग सर्वप्रथम 1926 में अमेरिका में सिडनी–एल–प्रेसी ने ओहियों राज्य विश्वविद्यालय में शिक्षण मशीन के निर्माण द्वारा आरम्भ किया। इसके पश्चात् 1930–40 के दशक में लुम्सडेन तथ ग्लेसर नामक तकनीक वेत्ताओं ने शिक्षा के यन्त्रीकरण करने का प्रयत्न किया। वर्तमान समय में अनेक प्रकार की तकनीकियों का विकास किया जा चुका है, जिनका प्रयोग शिक्षा को और अधिक सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने में किया जा रहा है। इसी का प्रभाव है कि आज विश्व की इतनी विशालयकाय जनसंख्या को शिक्षा सुलभ हो पा रही है। तकनीक ने शिक्षा के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है चाहे वह शिक्षा का लक्ष्य हो, शिक्षण विधि हो, शिक्षण सहायक सामग्री हो या शिक्षा की गुणवत्ता हो। अतः शिक्षा पर तकनीक के कुछ प्रमुख प्रभाव इस तरह देखे गये हैं–

1. शिक्षा के लक्ष्य में परिवर्तन : प्राचीन काल में शिक्षा के जो लक्ष्य थे वे आज नही रह गये हैं। शिक्षा के लक्ष्य में आज बहुत परिवर्तन हुआ है। पहले शिक्षा का लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नति, सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण एवं हस्तान्तरण, मोक्ष की प्राप्ति आदि था परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा का लक्ष्य भौतिकवादी हो गया है। वर्तमान समाज भौतिक सम्पन्नता और आध्यात्मिक विपन्नता की ओर उन्मुख हो गया है। आज समाज में वैज्ञानिक उन्नति हो रही है। मशीनों, उपकरणों की संख्या दिनो–दिन बढ़ती जा रही है। जिस शिक्षा में व्यक्ति को समृद्धि एवं भौतिक सम्पन्नता की प्राप्ति नही दिखाई दे रही है उस शिक्षा को व्यर्थ माना जाने लगा है।

2. विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण : तकनीक प्रगति के परिणामस्वरूप अनेक शिक्षण सहायक उपकरणों का आविष्कार किया जा रहा है, जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अकल्पनीय परिवर्तन हुआ है। आज श्रव्य–दृश्य सहायक सामग्री से शिक्षा को प्रभावशाली बनाया जा रहा है। शिक्षण प्रक्रिया में रेडियो, टेप रिकार्डर, ग्रामोफोन, मानचित्र मॉडल, ओ.एच.पी. स्लाइड, फिल्म प्रोजेक्टर बुलेटिन बोर्ड आदि का प्रयोग अधिकता से किया जा रहा है। जिसका परिणाम है कि वर्तमान समय में इसकी सहायता से कम समय तथा कम खर्च करके अधिक से अधिक लोगों तक शिक्षा पहुँचायी जा रही है। तकनीक की ही देन है कि आज छात्र घर बैठे–बैठे दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपनी शिक्षा को पूर्ण कर रहे है।

3. सामाजिक शिक्षा पर तकनीक का प्रभाव : तकनीक का प्रभाव हमारे परिवार एवं सामाजिक शिक्षा पर भी पड़ा है। परिवार के सभी सदस्य किसी न किसी एक व्यवसाय में लगे हुए हैं। लोग अपने व्यवसाय की ओर जितना ध्यान दे रहे हैं उतना परिवार के सदस्यों पर नहीं, जिसके कारण लोगों में पारस्परिक प्रेम, सद्भावना और सहयोग की कमी हुई है।

अतएव हम कह सकते हैं कि तकनीक एवं औद्योगीकरण का प्रभाव परिवार पर भी पड़ा है। बच्चों को पहले जो शिक्षा परिवार में मिलती थी, अब सम्मिलित परिवार प्रथा समाप्त हो जाने के कारण नहीं मिल पा रही है। अर्थात् बालक में नैतिकता एवं समाजीकरण का अभाव सा हो गया है।

समाज पर तकनीकी का प्रभाव : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य जिस समाज के बीच जन्म लेता है उसमें रहता है उसे उस समाज की भाषा; रहन–सहन, खान–पान आचरण की विधियाँ और रीति–रिवाज आदि सीखने होते हैं। बिना ये सब सीखे वह उस समाज में समायोजन नहीं कर सकता। उसका सदस्य नहीं बन सकता। वह ये सभी कार्य एक दिन में नहीं सीखता, इसमें उसे बहुत समय लगता है।

आज का समाज तकनीकी ज्ञान से ओतप्रोत है। इसका प्रभाव मनुष्य के जीवन के लगभग सभी पक्षों पर पड़ा है। यही कारण है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्था बिल्कुल बदल सी गई है। वेवलेन ने लिखा है, कि सामाजिक विघटन केवल टेक्नोलॉजी के कारण हो रहा है। आगबर्न ने रेडियो का प्रभाव 150 रूपों में दिखाते हुए यह सिद्ध किया है कि तकनीक का ऐसा विश्वव्यापी प्रभाव है कि उससे जीवन ही बदल गया है। यह प्रभाव उन देशों में और भी अधिक देखने को मिल रहा है जिन देशों में तकनीकी प्रगति अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई है।

परिवार पर प्रभाव : तकनीक के प्रभाव ने पारिवारिक ढांचे को बहुत अधिक खण्डित किया है। आज हमारे सामने परिवार का जो संगठन दिखाई दे रहा है वह पहले जैसा नहीं है, उसका अस्तित्व केवल कथन मात्र शेष रह गया है। छोटे बच्चों का पालन–पोषण नर्सरी स्कूलों में हो रहा है, माताएं अपनी उत्तरदायित्व से दूर होती जा रही है। बच्चों को माता–पिता एवं परिवार का प्यार एवं संस्कार नहीं मिल पा रहा है। जिससे बच्चे कुंठित होते जा रहे है।

धार्मिक संस्थाओं पर तकनीक का प्रभाव :

धार्मिक संस्थाओं जैसे–मंदिर, मस्जिद और गिरजाघरों आदि पर भी तकनीक का प्रभाव पड़ा है। लोगों के मन से आध्यात्मिक विश्वास अब दूर होता जा रहा है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति के लोग ईश्वर को मानते ही नहीं है और तर्क देते हैं कि आधुनिकता के दौर में इसे यांत्रिक माना जाने लगा है। इसलिए धार्मिक संस्थाओं का क्षरण होने लगा है। पहले चन्द्रमा को विश्वास

का देवता माना जाता था, जिसका अब पर्दाफाश कर दिया गया है। वह कोई देवता नहीं है, वहां अमृत का समुद्र नहीं है, वहां केवल ऊँचे–ऊँचे नुकीले पहाड़, गड्ढे, पत्थर तथा रेत के कण मात्र हैं। मनुष्य अब मंगल तथा अन्य ग्रहों पर भी चढ़ाई करने लगा है।

तकनीक के कुछ अन्य प्रभाव

तकनीक का ही प्रभाव है कि व्यक्ति आज प्रत्येक कार्य समय से करना चाहता है। यदि कार्य में देरी होती है तो उसकी महत्ता समाप्त हो जाती है। यही कारण है कि समाज में एकता, अपनापन और घनिष्टता एवं सहयोग की भावना में कमी आयी है। तकनीक के कारण नगरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। जिसके कारण अनेक प्रकार के रोगों एवं अपराधों की संख्या में इजाफा हुआ है।

आज के युग में धन ही सब कुछ होता जा रहा है। धन प्राप्त करने के लिए उद्योग–धन्धे लगाये जा रहे हैं। पति–पत्नी दोनों ही नौकरी करके धन कमाना चाहते हैं। बच्चों की देखरेख हेतु शिशु परिचर्या खुल रहे हैं, नर्सरी स्कूल, डे बोर्डिंग, स्कूल खोले जा रहे हैं। परन्तु वहां उनकी उतनी तन्मयता से देखभाल एवं विकास नहीं हो पाता है, जितनी घर पर माताओं के द्वारा होता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आज आधुनिक तकनीक का प्रभाव हमारे पुरे समाज, जीवन शैली, रहन–सहन तथा शिक्षा की रूपरेखा, शिक्षा के पाठ्यक्रम, उद्देश्य आदि पर अत्यधिक दृढ़ता के साथ पड़ा है हमें तथा आपको इस तकनीक के सहयोग से शिक्षा एवं समाज को प्रगति के पथ की ओर उन्मुख करने में सहयोग करना चाहिए न कि अवनति की ओर।

संदर्भ

1.शरतेन्दु, सत्य नारायण दूबे : शिक्षा की नवीन दार्शनिक पृष्ठभूमि, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2009 2.लाल, रमन बिहारी : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ 3.शर्मा, आर0ए0 : शिक्षण तकनीकी, विनय रखेजा, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ 4.कुलश्रेष्ठ, एस0 पी0: अग्रवाल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ 5.शुक्ला, सी–एस : शिक्षा के समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक आधार, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद। 6.उपाध्याय, राजेश्वर, एवं डॉ0 सरला पाण्डेय : शैक्षिक टेक्नोलॉजी के आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी 7.पाण्डेय, के0 पी0 : शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी 8.तोमर, गजेन्द्र सिंह : शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाली रोड, मेरठ

●●●●●

ISSN 0970-1745
SLRF Impect Factor 2.364

Shodh

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

प्रधान संपादक
डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय

Year-35 Vol-96 January, 2018 **ISSN 0970-1745**
UGC Approved No. 42069

Shodh

(A Refereed Research Journal, Law & Multidisciplinary)

EDITOR IN CHIEF

Dr. Surendra Pandey, Varanasi

EDITOR

Dr. Shailendra kumar

Prof. Gelina Rousseva

EDITORIAL BOARD

Dr. Mahmoud Sobhi
Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Kedar Nath Yadav
Assistant Professor, R.S.K.D. PG College, Jaunpur, U.P. India

Shri Sachin Awasthi
Department of Economics (M.P.)

Dr. Manohar Chitre
Asst. Professor Commerce, Mata Jijabai Girls' P.G. College, Moti Tabela, Indore.

Prof. Rajkumar Singh
F.M.S., Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

Prof. Rajeswar Pal
Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Prof. Sudhaker Singh
Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.

CONTENTS

1.	Problems of Enforcement of Pollution Control Legislations in India -An Appraisal and Suggested Reforms ***Dr. Dinesh Kumar Gupta**	1—10
2.	आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के विकास में सामाजिक परिस्थितियों का योगदान ***कु. अणिमा शुक्ला**	11—13
3.	Knowledge Management and Learning in Organizations ***Kedar Nath Yadav**	14—22
4.	परिवार नियोजन कार्यक्रम का सामाजिक जीवन पर प्रभाव ***Mukesh Kumar Malviya**	23—25
5.	An Analysis of Effectiveness of Viral Marketing Campaigns ***Sadhana Tiwari**	26—29
6.	GIRISH KARNAD'S *HAYAVADANA*: A CRITIQUE ***Talluri Mathew Bhaskar**	30—33
7.	भारत में ब्रिटिश शिक्षा का उद्‌भव एवं विकास ***डॉ० सुरेन्द्र कुमार दुबे**	34—35
8.	हड़प्पा एवं वैदिक सभ्यता के समान तत्व ***डॉ0 बिन्दू त्रिपाठी**	36—38
9.	झारखण्ड राज्य के उराँव जनजाति में राजनीतिक चेतना का विकास ***डॉ० संतोष उराँव**	39—43
10.	Status of Women and Measures for eradication of violence against women ***Prativa Kumari**	44—49
11.	आधुनिकता - ऐतिहासिक विवेचन ***वीणा शुक्ला**	50—52

●●●●●

भारत में ब्रिटिश शिक्षा का उद्भव एवं विकास

*डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

[illegible]

[illegible] अंग्रेजी को अनुचित महत्व दिया और उसके बोझ से छात्रों के दिमाग [illegible] अंग्रेजी ने हमारी शिक्षा के प्रति दिनोंदिन बेरुखी और शिक्षा के स्तर में जो गिरावट आयी उसके मुख्य कारण हैं :

1. भूमण्डलीय संस्कृति की तीव्रगामिता बनाम शिक्षा माध्यम में पहचानीय हेतु भारतीयों का अरुचि शिक्षण।
2. द्विभाषीकरण नीतिगत की नीति की अवधारणा विभाजक परिणाम का की एक वर्ग में से का परिणाम भारतीय शिक्षण में गई थे।
3. शिक्षा की बौद्धिक दासता से मुक्त कराने वाले नीतियों की तैयारी के का में प्रयोग।
4. द्विभाषीकरण की नीति में पहले प्राथमिक शिक्षा का अंग्रेजी माध्यम तथा माध्यमिक शिक्षा का भारतीय माध्यम को देकर अपना निर्णायक अंतर्राष्ट्रीय स्तर में पहचान बनाते थे।

ब्रिटिश प्रशासन की शिक्षा नीति में पढ़ने वाली उपलब्धि यह थी कि इसने भारत को अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य और कुछ हद तक पश्चिम की दार्शनिक विचारधारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास और सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थाओं से परिचय कराया। यह परम्परा सदियों से उपयुक्त परम्परा पर हुआ एक भारत में भारतीय संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था अपनी ईतिहास अवस्था में थी। इन परम्पराओं का सही तौरतरीकों समझ पढ़ने भारतीय मनिषियों को पुरानी पुस्तिका से विदेशी की दासता से मुक्त किया और आधुनिक भारतीय शिक्षा में पुनर्जागरण की पीठ रख दी।

संदर्भ

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]

ISSN 0970-1745
SJIF Impact Factor

Shodh

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

Year-35 Vol-97 Feb.2018 ISSN 0970-1745

UGC Approved No. 42869

Shodh

(A Refereed Research Journal, Law & Multidisciplinary)

EDITOR IN CHIEF

Dr. Surendra Pandey, Varanasi

EDITOR

Dr. Shailendra Kumar

Prof. Galina Rousseva

EDITORIAL BOARD

Dr. Mahmoud Sabri

Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Kedar Nath Yadav

Assistant Professor, R.S.K.D. PG College, Jaunpur, U.P. India

Shri Sachin Awasthi

Department of Economics Government College, Aron, Distt-Guna (M.P.)

Dr. Manohar Chitre

Asst. Professor Commerce, Mata Jijabai Govt. P.G. College, Moti Tabela, Indore

Prof. Rajkumar Singh

F.M.S., Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

Prof. Rajeswar Pal

Al Jouf University, Sakaka (KSA)

Prof. Sudhakar Singh

Banaras Hindu University, Varanasi U.P.

CONTENTS

1. Bhopal Mass Disaster Litigation: Legal Issues and Outcome — 1–[illegible]
*Dr. Dinesh Kumar Gupta

2. Right to Health: A distant Dream in West Bengal, a critical analysis — [illegible]–[illegible]
*Bhabani Prasad Mishra

3. Violence against Women in India: An Overview — [illegible]–[illegible]
*Dr. Mallikarjun Talwar

4. Protection of Investors' Interest: An Analytical Study — [illegible]–[illegible]
*Pratima Pandey

5. Use of ICT for Developing Conceptual Understanding in Chemistry — [illegible]–[illegible]
*Prashant Thote

6. This paper investigated the awareness — [illegible]–[illegible]
*Vipin

7. भारतीय राजनीति [illegible] सामाजिक संरचना — [illegible]–[illegible]
*डॉ. [illegible] श्रीवास्तव

8. Covid-19 and Policy of Indian Government — [illegible]–[illegible]
*Dr. [illegible]

9. An Observation of Political Participation of Dalit Women in Panchayati Raj Institutions — [illegible]–[illegible]
*Pratiba Kumari

10. कोसी क्षेत्र में कृषि सिंचाई एवं युवा रोजगार की समस्या: कारण एवं निवारण — [illegible]–[illegible]
*[illegible]

11. सरस्वती नदी के [illegible] पुरातत्व — [illegible]–[illegible]
*डॉ. [illegible]

12. विद्यार्थी जीवन में [illegible] आधारित अनुसंधान का महत्व — [illegible]–[illegible]
*डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

13. गांधी एवं आधुनिकता — [illegible]–[illegible]
*[illegible] शुक्ला

विद्यार्थी जीवन में स्वतन्त्रता आधारित अनुशासन का महत्व

*डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

[illegible]

प्रस्तावना

[illegible]

[illegible]

समस्या की आवश्यकता एवं महत्व

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अध्ययन के उद्देश्य

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

स्वतन्त्रता की अवधारणा

[illegible]

अनुप्रयोग की आवश्यकता

1. [illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

4. [illegible]

5. [illegible]

6. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

निष्कर्ष

[illegible]

संदर्भ

[illegible]

Vol. XVIII
Number 1

ISSN 2319-7129
(Special Issue) February, 2018

EDU WORLD

A Multidisciplinary International
Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

ISSN : 2319-7129

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. XVIII, Number - 1 February, 2018

(*Special Issue*)

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

CONTENTS

Cultural Diversity in South Asia: Challenges and Prospects 1
Dr. Amandeep Kaur

Preferential Policy: Concept, Debates and Contestation in China. 7
Chandra Sen

The Role of Civil Societies in Promoting Good Governance in Bangladesh 16
Minati Kalo

Conversion of Waste into Energy : A Case Study of Qatar 25
Sonal Kumari

Corruption and its Challenges to the Governance in China 29
Sumanta Kumar Sahu

Women's Educational Policies During Soviet a Period : Historical Analysis 39
Dr. Mahashraddha Yadav

History in Transition: A Reflection on Women's Educational Attainment in Soviet Union 50
Dr. Mahashraddha

Engaging in the Field Work: A Fieldworker's Note on Methodological Exploration on Education and Women's Empowerment 56
Dr. Shashwat Kumar

Contesting Terrain of Marginality in Education: A Study of Women Empowerment and Education in Pratapgarh, Uttar Pradesh 61
Dr. Shashwat Kumar

Special Economic Zones-An In-Depth Analysis of SEZ distribution 68
Dr. Sonu Kumar Mishra

Water Security Challenges in North Eastern Part of India on Sharing Trans-Boundary River of Brahmaputra Between India and China 76
Md. Najibullah Singakhongbam and Hena Bari

Yogic Management of Diabetes 84
Dr. R. Lakshminarayana

India' Act East Policy: A Study of Mekong-Ganga Cooperation 90
Himanshu

Responsible Wildlife Tourism: A Theoretical Review 98
Mahender Reddy Gavinolla and Prof. Sampada Kumar Swain

अशोक द्वारा नियुक्त 'धर्ममहामात्र एक प्रदेयः विश्लेषणात्मक समीक्षा 194
डॉ. सोनी कुमारी

डॉ.- राही मासूम रजा के कृतित्व का सामान्य परिचय 198
डॉ. तब्बसुम खान

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता 208
डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और आदिवासी 215
डॉ. तुंगनाथ मौआर

बिहार में महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज की भूमिका 224
डॉ. पूनम कुमारी

NITI Aayog (National Institution for Transforming India) 229
Dr. Poonam Kumari

Women Empowerment in Present Scenario 233
Dr. Poonam Kumari

A Trend of Intra-Industry Trade: A Sino-Indian Case Study 238
Madhurendra Singh

Taxation System in India 243
Madhurendra Singh

E-Banking 255
डॉ. पीयूष कुमार गुप्ता

राजनैतिक कारण और बाल अपराध 264
डॉ. तन्द्रा शरण

बाल अपराधी या बालापचार बच्चों का माता-पिता के साथ सम्बन्ध 267
डॉ. तन्द्रा शरण

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में शिक्षा पद्धति की पड़ताल 270
डॉ. अनिल शर्मा

Investigation of Psychological Factors Underlying Peptic Ulcer 274
Dr. Nishi Bijiya

Synthesis of Imine Bond Containing Insoluble Polymeric Ligand and its Transition Metal Complexes, Structural Characterization and Catalytic Activity on Esterification Reaction 280
Dr. Prabhakar Kumar

वैश्विक शान्ति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे*

भूमिका

व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का ह्रास वैश्विक अशांति का प्रमुख कारण है। आधुनिक युग में शिक्षा आध्यात्मिक व नैतिक विकास प्रक्रिया के स्थान पर आर्थिक विकास की प्रक्रिया बन गयी है। शिक्षा के उद्देश्यो में आर्थिक विकास को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है। पाठ्यक्रम में केवल वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा को ही प्रधानता दी जा रही है तथा अध्यात्म, धर्म व नैतिकता को महत्व नहीं दिया जा रहा है जिसके कारण लोगों में अनुशासनहीनता एवं असन्तोष की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वर्तमान वैश्विक परिवेश में नैतिकता व मानवीयता का ह्रास हुआ है। आधुनिक भौतिकवादी युग में मानव ने मानसिक शान्ति ,परस्पर सद्भाव तथा एकाग्रता को खो दिया है जिसके कारण धार्मिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है।

आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी युग में एक ओर जहाँ मनुष्य के सुख– सुविधाओं में वृद्धि हुई है वही दूसरी ओर आणविक बमों के आविष्कार ने सम्पूर्ण मानव के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। विकास की इस तीव्र आँधी ने जहाँ जीवन के अधिकांश मानवीय मूल्यों, आस्थाओं और प्रतीकों पर प्रहार किया है, वहीं दूसरी तरफ सम्पूर्ण पीढ़ी को परम्परा व आधुनिकता , जड़ता एवं गतिमयता के द्वन्द्व में भटकने के लिए छोड़ दिया है। लोगों में मानवीय , आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्य समाप्त हो रहा है और भौतिकवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है परिणामस्वरूप मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है।

आज व्यक्ति के जीवन में भौतिक सुख–सुविधा एवं समृद्धि के नाम पर बहुत कुछ है, ज्ञान एवं कौशल की कमी नहीं है इसके बावजूद भी चारो तरफ अशान्ति, अराजकता एवं आतंकवाद का साम्राज्य व्याप्त है। मनुष्य, मनुष्य से ही भयभीत होने लगा है तथा लोगों का एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह गया है। यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि वर्तमान सामाजिक परिवेश की सभी समस्याओं की जड़ नैतिक मूल्य शिक्षा विहीन शिक्षा प्रणाली ही है। पहले शिक्षा का उद्देश्य मुक्ति होती थी, चरित्र निर्माण होता था किन्तु आज मुक्ति, आध्यात्मिकता एवं चरित्र निर्माण की बात करना लोग अप्रासंगिक मान रहे हैं। वर्तमान समय में मनुष्य अपनी उन नैतिक मूल्यों से विमुख हो रहे हैं जिसे अंगीकरण करने पर न केवल अपना कल्याण अपितु पीड़ित मानवता को भी शान्ति प्रदान की जा सकती है। नैतिक मूल्यों के अभाव में आज के छात्र एवं शिक्षक अनैतिक गतिविधियों में लिप्त है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयों में हम छात्रों को विविध विषयों का ज्ञान प्रदान करते हैं किन्तु बालकों की आदतों, उनके व्यवहार, उनके आचरण, उनके स्वभाव आदि के परिमार्जन के लिए हम कोई उपाय नहीं करते। हमारा वर्तमान

*प्रवक्ता बी0एड0 कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय चक्के जौनपुर

पाठ्यक्रम नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों की जानकारी ठीक से प्रदान नहीं करता। अतः वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की शिक्षा की प्रत्येक जागरूक नागरिक को आवश्यकता प्रतीत होती है।

औद्योगीकरण ने परिवार के एवं समाज के ढ़ाँचे में परिर्वतन कर दिया है। अतः अब नैतिक मूल्यों की शिक्षा का दायित्व केवल घर या समाज पर ही नहीं छोड़ा जा सकता। विज्ञान की प्रगति ने हमारे चारों ओर के वातावरण में परिर्वतन कर दिया है। जनतन्त्र ने सामाजिक आकांक्षाओं में भी परिर्वतन कर दिया है। आज के युवाओं में उत्साह है, किन्तु इस उत्साह को उचित दिशा देने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली अक्षम है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे नवयुवकों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी स्तर पर नहीं दी जाती। नये परिवेश में नैतिक मूल्यों की शिक्षा और आवश्यक हो गई है।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा किसी राष्ट्र के लिए ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने से बालकों में सहिष्णुता, उदारता, सहयोग, समता, त्याग, संयम, विश्व–बन्धुत्व इत्यादि गुणों का विकास किया जा सकता है। वैश्विक शान्ति के लिए बालक का सर्वांगीण विकास आवश्यक है। वैश्विक शान्ति के लिए मानवीयता प्रथम आधार है क्योंकि वैश्विक शान्ति विश्व कल्याण के लिए है और विश्व कल्याण के लिए मानवीयता व मानव मात्र का कल्याण आवश्यक है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में आत्मानुशासन की प्रवृति का विकास किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

नैतिक मूल्यों की अवधारणा का अध्ययन करना।
नैतिक मूल्यों को विकसित करने हेतु उपाय का अध्ययन करना।
वैश्विक शांति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

नैतिक मूल्य की अवधारणा

वे निश्चित मानदण्ड जिसके आधार पर व्यक्ति, वस्तु, व्यवहार व घटना का अच्छा–बुरा,सही–गलत के रूप में परख की जाती है,मूल्य कहलाते हैं। मूल्य ही धर्म कहलाता है अर्थात धर्म उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जिनकी मन, वचन, कर्म की सत्य अभिव्यक्ति से ही मनुष्य कहलाता है। धर्म का अभिप्राय मानवोचित आचरण संहिता है। यह आचरण संहिता ही नैतिकता है और इस नैतिकता के मानदण्ड ही नैतिक मूल्य हैं। नैतिक मूल्यों के अभाव में कोई भी व्यक्ति, समाज या देश निश्चित रूप से पतनोन्मुख हो जायेगा। नैतिक मूल्य मनुष्य के विवेक में स्थित, आन्तरिक व अन्तः स्फूर्त तत्व हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में आधार का कार्य करते हैं। नैतिक मूल्यों के कारण ही समाज में संगठनकारी शक्तियाँ व प्रक्रिया गति प्राप्त करती है और विघटनकारी शक्तियों का क्षय होता है विश्वबन्धुत्व की भावना, मानवतावाद, समता भाव, प्रेम और त्याग जैसे नैतिक गुणों के अभाव में विश्वशांति , अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, मैत्री आदि की कल्पना भी नहीं की सकती है।

हरबर्ट. जैसे शिक्षाशास्त्री तो सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य ही नैतिकता का विकास मानते हैं। यदि पढ़–लिखकर बालक सच्चरित्र न बन सका तो शिक्षा बेकार है। छात्र में अनुशासन , सत्यवादिता, सहयोग, भ्रातृत्व, धैर्य आदि गुणो का विकास नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा सम्भव है। परिवार, समाज, संस्कृति, राजनैतिक संस्थाओं

के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास, शुभ एवं भद्र के लिए श्रद्धाभाव का विकास एवं अन्याय, द्वेष, विशेषाधि
ाकार, दबाव आदि के विरोध का साहस नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है।

नैतिक मूल्यों के प्रकार

प्रमुख नैतिक मूल्य निम्नलिखित है–

सत्य

वैश्विक शान्ति हेतु सत्य एक प्रमुख नैतिक मूल्य है। संसार में सत्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। आज लोगों में सत्य से दूर रहने की प्रवृत्ति है। यदि सत्य पर अडिग रहा जाय तो शान्ति सम्भव है। असत्य के मार्ग पर चलने के कारण ही लोगों का जीवन तनावग्रस्त है। प्राचीन समय में लोगों में यह विश्वास रहता था कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य का तात्पर्य केवल सच बोलना ही नहीं वरन् विचार, वाणी और आचार में भी सत्य होना आवश्यक है। सत्य का अनुपालन धर्म, राजनीति, समाज एवं परिवार सर्वत्र होना चाहिए। व्यक्ति जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह के प्रभाव में रहेगा, वह सत्य का दर्शन नहीं कर सकता। जो स्वयं नैतिक रूप से शक्तिमान होता है, वही सत्य मार्ग पर चल सकता है।

अहिंसा

वैश्विक अशान्ति के प्रमुख कारणों में लोगों में व्याप्त हिंसा की प्रवृत्ति भी है। आज लोग छोटी–छोटी बातों पर भी हिंसा का मार्ग अपना लेते हैं जो विद्रोह का प्रमुख कारण बन जाती है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए अहिंसा रूपी नैतिक मूल्य को प्रमुख रूप से ग्रहण करना होगा। प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों, उपनिषदों, एवं मनुस्मृति आदि के अनुसार अहिंसा का अर्थ साधारणतः किसी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाना एवं किसी का प्राण नहीं लेना है। जैन मत के अनुसार "सभी परिस्थितियों में सभी प्राणियों के लिए मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का वर्जन है।"

अहिंसा के बारे में महात्मा गाँधी जी का विचार था कि "यदि अहिंसा के पुजारी की सभी क्रियाओं के मूल में करूणा रहे, यदि वह क्षुद्र जीव को यथाशक्ति कष्ट पहुँचाने से बचता रहे और उसे बचाता रहे तथा इस प्रकार हिंसा के चक्कर से निरंतर दूर रहे तो फिर उसका विश्वास अहिंसा में अडिग हो जायेगा।" शत्रुओं से प्यार, बुराई के बदले भलाई और घृणा के बदले प्यार करने की भावना गाँधी जी के अहिंसा की कल्पना का तत्व था। उनकी अन्तर्दृष्टि थी कि यदि हम सत्य स्वरूप ईष्वर को पाना चाहते हैं तो हमें इसके लिए निश्चय ही अहिंसा का मार्ग अपनाना होगा।

प्रेम

वैश्विक शान्ति के लिए प्रेम रूपी नैतिक मूल्य भी अनिवार्यतः धारण करना होगा। हिंसा की प्रवृत्ति प्रेम के अभाव में ही उत्पन्न होती है। यदि हम लोगों के प्रति प्रेम का भाव रखें तो निश्चित ही अन्य लोगों का हमारे प्रति प्रेम का ही भाव रहेगा। आज भाई–भाई में भी सच्चे प्रेम का अभाव है जिसके कारण छोटी–छोटी बातों पर विवाद प्रारम्भ हो जाता है तथा कुछ लोग हिंसा का मार्ग चुन लेते हैं। जब लोगों में आपस में ही प्रेम का भाव नहीं है तो ऐसे लोगों से वैश्विक शान्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

नैतिक मूल्यों में धर्म का भी प्रमुख स्थान है। नैतिकता के लिए धर्म का वही स्थान है, जो जमीन में पेड़ उगने के लिए जल का होता है। धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है तथा यह हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत आदि से परे है। चूंकि विश्व के सभी मानव एक ही ईश्वर की सन्तान है अतः सभी मानव आपस में भाई–भाई हैं। सभी लोगों से नैतिकतापूर्ण व्यवहार करना ही सबसे बड़ा धर्म है। सच्चा धर्म यही शिक्षा देता है कि हमें कुछ ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे दूसरे को कष्ट पहुँचे। यदि सभी लोग इस धर्म का पालन करेंगे तो प्रत्यक्षतः रूप से वैश्विक शान्ति की स्थापना होगी।

ईमानदारी

नैतिक मूल्यों में ईमानदारी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ईमानदारी एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगों का विश्वास एक दूसरे पर बना रहता है। हमें अन्दर एवं बाहर दोनों रूप में ईमानदार रहना चाहिए। ईमानदारी से आत्मबल मजबूत होता है। कहा भी गया है "ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है (Honesty is the best Policy.)"

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु पाठ्यक्रम

नैतिक मूल्यों की उपस्थापना भी पाठ्यक्रम के माध्यम से ही सम्भव है। अन्धविश्वासों, संकुचित सिद्धान्तों तथा रूढ़िगत धार्मिक व्यापारों से ऊपर उठकर ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जिसमें धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों का निरूपण हो। धर्म वह है जो मनुष्य–मनुष्य में मेल स्थापित करता है। भेद, घृणा, वैमनस्य तथा कटुता उत्पन्न करने वाले सिद्धान्त कभी भी धर्म की श्रेणी नहीं आ सकते। इसलिए आज के यथार्थवादी युग में शिक्षा के लिए धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का आँचल छोड़ना श्रेयस्कर नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन से पाठ्यक्रम का जो स्वरूप निखरता है, उसमें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर धर्म तथा संस्कृति, सामाजिक विषयों का अध्ययन, क्षेत्रीय भाषाएँ तथा उनका साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य तथा कृषि सम्बन्धी विषयों के अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने वाले कार्यक्रम, शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन की योजनाएँ, स्थानीय आवश्कताओं के अनुरूप शिल्पीय, व्यावसायिक तथा औद्योगिक विषयों का समावेश वाञ्छनीय है। अधिक जीवन्त, उपयोगी, व्यापक तथा सार्थक बनाने के लिए पाठ्यक्रम को इतना लचीला बना दिया जाय कि सहपाठ्यक्रम, पाठ्येतर तथा पाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों एवं अध्ययनों का समायोजन अध्यापक परिस्थिति तथा आवश्कतानुकूल स्वयं कर सके। परीक्षोन्मुख पाठ्यक्रम एक जड़ एवं मृत भावना है जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु उपाय

विद्यार्थियों नैतिक मूल्यों के विकास के लिए नैतिक शिक्षा को भी एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाय और कुछ पुस्तकें निर्धारित कर दी जाय जिनके आधार पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा भलीभाति दी जा सके।

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर क्रमिक रूप में विकसित करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर जिन गुणों के विकास पर अत्यधिक बल हो, उनमें माता–पिता, आचार्य एवं अपने से बड़ों के प्रति श्रद्धाभाव भी है। यह श्रद्धा एवं आदर ऊपरी एवं दिखावटी न होकर मन से हो। इसके लिए छात्रों को समय–समय पर कुछ नियमों की जानकारी देनी पड़ेगी तथा 'श्रवणकुमार', 'राजा हरिश्चन्द्र' इत्यादि नैतिक मूल्य प्रधाननाटक कक्षा के सम्मुख उपस्थित किया जाय।

माध्यमिक स्तर पर राष्ट्र एवं विश्व के प्रति तथा मानवता के प्रति श्रद्धाभाव जाग्रत करना होगा। इसके लिए देश–प्रेमी, बलिदानी, एवं राष्ट्र–भक्तों की जीवनियाँ पढ़नी होगी। ऐसी कहानियों का चयन करना होगा जिनके आधार पर देश–प्रेम का विकास हो सके। उन घटनाओं पर बल देना होगा जो देश एवं विश्व के कार्यों मे प्रमुख हैं।

उच्च स्तर पर छात्रों में अपने पूर्वार्जित प्रेम एवं श्रद्धा की मीमांसा करनी होगी। संसार के विभिन्न धर्मों मे व्याप्त एकता को ढूँढ़ना होगा। इसके लिए उन्हें बुद्ध, कन्फ्यूशियस, सुकरात, ईसा, शंकर, मुहम्मद, कबीर, नानक, गाँधी, विवेकानंद, अरविन्द, दयानन्द आदि की जीवनियाँ पढ़ाई जायें। संसार के धार्मिक ग्रन्थों में सार्वभौमिक तत्व को छात्र पहचाने। इसके लिए इन ग्रन्थों से चुने हुए अंश को उन्हें पढ़ना होगा। इस स्तर पर यह सिखाया जाय कि वे धर्म के नैतिक मूल्य को समझ सकें। उन्हें धर्म का दर्शन पढ़ाया जाय, धर्म के मान्य एवं आदर्श सिद्धान्तों की व्याख्या उनके समक्ष प्रस्तुत की जाय ताकि वे युगानुरूप सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।

आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण नैतिकता से ओत–प्रोत हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का पालन कर सकें और नैतिक सिद्धान्तों को व्यवहृत कर सकें।विद्यालय का कार्य कुछ क्षण के मौन से आरम्भ हो जिससे छात्र नैतिक नियमों का मनन करना सीखें। सरल कहानी के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी जाय।

भारत सरकार के सन् 1959 में बम्बई के तत्कालीन राज्यपाल श्री श्रीप्रकाशजी की अध्यक्षता में नैतिक मूल्यों के शिक्षा की एक समिति नियुक्त की गई थी, जिसके अध्यक्ष के अतिरिक्त अन्य तीन सदस्य थे– राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी० सी० चटर्जी, जम्मू–कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री फैजी और भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के संयुक्त सचिव श्री प्रेमकृपाल। इस समिति ने नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर विस्तार में विचार किया और अपने अन्य प्रतिवेदनों के अतिरिक्त निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुझाव दिये–

1. प्रारम्भिक स्तर

क. सामूहिक गायन के लिए प्रातः कुछ मिनटों के लिए छात्र सभा का आयोजन हो।

ख. भाषा शिक्षण के पाठ्यक्रम में सन्तों एवं धार्मिक नेताओं के जीवन व शिक्षा के विषय में सरल और रोचक कहानियों को सम्मिलित किया जाय।

ग. यथासम्भव श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग करके छात्रों की नैतिक शिक्षा में रुचि जाग्रत की जाए। विशेषतः सुन्दर चित्र, फिल्मस्ट्रिप, सुन्दर कलाकृतियों के रंगीन पुनर्मुद्रण, वास्तुकला के नमूने प्रस्तुत किये जाय।

ग. विद्यालय की समय सारिणी में एक सप्ताह में दो घण्टे नैतिक शिक्षा के लिए रखे जाने चाहिए। इन घण्टों मे विश्व के धर्मों की रोचक कहानियाँ कही जाय। धर्म के वाह्य आडम्बर को पृथक रखा जाय।

घ. विद्यालयी कार्य के माध्यम से छात्रों में 'सेवा की भावना' एवं 'कार्य ही पूजा है' की भावना जाग्रत की जाय।

ङ. विद्यालय में आयोजित शारीरिक शिक्षा एवं खेल का उद्देश्य चरित्र निर्माण हो।

2. माध्यमिक स्तर

क. प्रातःकालीन सभा में दो मिनट का मौन रखा जाय। इसके बाद पवित्र पुस्तकों या श्रेष्ठ साहित्य से कुछ अंश पढ़े जाय। सामूहिक गायन को भी प्रोत्साहित किया जाय।

ख. इतिहास और सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में विश्व के महान धर्मों की शिक्षाओं के मूलतत्व पढ़े जाय। भाषा शिक्षण या सामान्य शिक्षण में विभिन्न धर्मों के विषय मे कथाएँ सम्मिलित की जाय।

ग. सप्ताह में एक घण्टा नैतिक मूल्यों की शिक्षा के लिए पृथक से रखा जाय। इस कक्षा में विचार–विमर्श को प्रोत्साहित किया जाय। उपयुक्त वक्ताओं को भी आमंत्रित करके नैतिक शिक्षा पर व्याख्यान कराया जाय।

घ. छुट्टियों में या विद्यालयी समय के अतिरिक्त संगठित रूप में समाज सेवा की जाए। इस सेवा का उद्देश्य हो–श्रम के प्रति निष्ठा, मानवता से प्रेम, देशभक्ति और आत्मानुशासन।

ङ. विद्यालय में छात्र की उपलब्धियों की जाँच करते समय आचरण एवं चरित्र के गुणों की परीक्षा अवश्य हो।

3. विश्वविद्यालयी स्तर

क. प्रातः विभिन्न समूहों में छात्र मौन–चिन्तन करें। ऐच्छिक रूप से अध्यापकों के निरीक्षण में यह कार्य हो।

ख. तुलनात्मक धर्म' में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रचना की जाय और इसे महत्वपूर्ण विषय बनाया जाय।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वैश्विक शान्ति के लिए नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता अत्यधिक है। यदि सभी व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का समावेश कर दिया जाय तो लोगों में उत्तम विचार उत्पन्न होगा। वे आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे, कहीं भी हिंसा का भाव नहीं रहेगा तथा सभी लोगों में स्वार्थ की भावना त्याग कर परमार्थ की भावना जाग्रत होगी। केवल एक व्यक्ति में ही नैतिक मूल्यों का समावेश होने से ही वैश्विक शान्ति सम्भव नहीं है। वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए स्वयं में नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने के पश्चात् अन्य लोगों में भी नैतिक मूल्यों का समावेश कराना होगा। यह कार्य वही कर सकते हैं जो नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हों। यदि हमारे अन्दर नैतिक मूल्यों का अभाव रहेगा तो हम अन्य लोगों में नैतिक मूल्य का विकास नहीं करा सकेंगे। पहले हम स्वयं के अन्दर नैतिक मूल्य धारण करें, उसके पश्चात् अन्य लोगों को नैतिक मूल्य धारण करने हेतु प्रेरित करें तभी वैश्विक शांति की स्थापना होगी जिससे

सम्पूर्ण विश्व में भाईचारा, निःस्वार्थ की भावना, सौहार्द्र एवं प्रेम का वातावरण विकसित होगा तथा प्रत्येक मानव शान्तिपूर्वक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेगा ।

नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा ही वैश्विक शान्ति सम्भव है क्योंकि इसके द्वारा ही व्यक्ति में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लड़ाई–झगड़े इत्यादि कुप्रवृत्तियों को रोका जा सकता है। यदि सभी जीवों में एक ही ईश्वर की सत्ता है तो मानव जाति में जाति–भेद, रंग–भेद, नस्ल–भेद, लिंग–भेद, ऊँच–नीच भेद अनुचित है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा बालकों में भेद–भाव रहित विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास उत्पन्न करके मानव मात्र की एकता पर बल तथा मानव जाति के अधिकतम कल्याण की प्रवृत्ति का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गाँधी, महात्मा : 'यंग इण्डिया' 15 मार्च 1926।

गाँधी, मोहन दास करमचन्द (1989) : 'मेरे सपनों का भारत', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

गुप्ता, राम बाबू(1993) : 'महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री' रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।

धनकर, रोहित (2004) : 'शिक्षा और समझ' आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला , हरियाणा ।

पाण्डेप रामशकल (2005) : 'शैक्षिक निबंध' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

पाण्डेय, एच0 एल0 (2000) : 'गांधी, नेहरू, टैगोर एवं अम्बेडकर' प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद।

वार्ष्णेय, सोनी : 'नवनीत' फरवरी 2014

Website:- : www.navneethindi.com